Publication date- 5th July 2025, Posting date- 9/10th July 2025. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 PRGI No.DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

PRGI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-21 अंक-9 नई दिल्ली जुलाई 2025 वार्षिक मूल्य 700 रू. (प्रति कॉपी 60 रू.) पृष्ठ-16

साई धाम मंदिर कोपरगांव में वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

कोपरगांव: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 16 जून 2025 को श्री साई धाम मंदिर, अम्बिका नगर, कोपरगांव, ज़िला अहमदनगर (महाराष्ट्र) में श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा जी के मार्गदर्शन में मंदिर का

26वां स्थापना दिवस अत्यन्त धूमधाम से मनाया गया। पूरे आश्रम को फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। बाबा के दरबार की शोभा देखते ही बनती थी। प्रात: 5 बजे बाबा की काकड़ आरती के बाद बाबा का अभिषेक किया गया। 7:30 बजे श्री सत्यनारायण महापूजा का आयोजन किया गया जिसमें बहुत से भक्तों ने सत्यनारायण पूजा की। दिनभर भजनों का कार्यक्रम

चलता रहा। सर्वप्रथम भोपाल के सुप्रसिद्ध साई कथा वाचक श्री सुमित पोंदा भाई जी ने प्रात: 8:30 बजे से 11:00 बजे तक साई कथा का वाचन किया और अनेक ज्ञानवर्धक किस्से सुनाकर कथा को रोचक बना दिया। साथ ही कथा के दौरान अनेक भजन भी सुनाए। उसके बाद बाबा की भव्य पालकी मंदिर परिसर में बैंड बाजे, ढोल नगाड़े के साथ निकाली गई। भक्तों की भारी भीड़ बाबा के नाम के जयकारे लगाते हुए व ढोल की ताल पर नृत्य करते हुए पालकी में शामिल हुई। दोपहर 12 बजे मध्यान्ह आरती की गई। मंदिर का पूरा हॉल भक्तों से खचाखच भरा था। दिनभर लंगर प्रसाद चलता रहा, जहां हज़ारों भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। दोपहर 1 बजे से शाम 5 बजे तक अनेक भक्तिमय कार्यक्रमों की प्रस्तुति विभिन्न कलाकारों द्वारा दी गई। मुम्बई से पधारे सुप्रसिद्ध ड्रमर शिवमणि ने ड्रम्स बजाकर वहां उपस्थित सभी भक्तों का मन मोह लिया। साथ ही उनकी पत्नी रूना शिवमणि जी ने भक्तिमय भजन सुनाकर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। उनके साथ गोवा से आमन्त्रित महिलाओं ने भजनों की प्रस्तुति दी। उसके बाद दिल्ली के मशहूर भजन गायक गुरू जी श्री बृजमोहन नागर गुरूजी, परवीन मुदगल जी व भुवनेश नाथानी जी ने भजनों की भक्तिमय प्रस्तुति दी। सभी भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया और उनकी गायकी की सराहना की। सांयकाल 6:30 बजे धूपआरती की गई। रात 9:30 बजे शेज आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। दिन भर भक्तों का मेला लगा रहा। वहां आए सभी भक्तों ने परम पूज्यनीय श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा जी का आशीर्वाद लिया। सभी भक्तों ने श्रद्धेय चव्हाण बाबा जी को याद किया। इस अवसर पर मुम्बई, पूणे, नासिक, मेरठ, देहरादून, दिल्ली, गुड़गांव, पानीपत, पंजाब आदि दूर-दूर के शहरों से भक्तों ने इस कार्यक्रम में आकर बाबा का व श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा जी के मार्ग दर्शन में श्री साई धाम ट्रस्ट के सभी सदस्यों द्वारा अत्यंत सुचारू रूप से किया गया। **-महेश चव्हाण**

मैं कुछ छोड़ आया

आज मस्जिद के बाहर सब कुछ छोड़ आया।
आज द्वारकामाई के बाहर सब कुछ छोड़ आया
भीतर से आवाज़ आई क्या छोड़ आया?
कुछ विचारों को छोड़ आया
कुछ बातों को छोड़ आया।
कुछ किस्सों को छोड़ आया।
कुछ कहानियों को छोड़ आया।
बाबा मैं तो केवल तुम्हारे पास आया
बाबा मैं तो केवल तुम्हारी शरण में आया
मैं तो सब कुछ छोड़ आया।
कुछ शब्दों को छोड़ आया।
कुछ ज्ञान को छोड़ आया
कुछ अहंकार को छोड़ आया
कुछ 'तेरे' 'मेरे' साथियों को छोड़ आया।
हे साई, मुझे अपना लो
मैं तो तुम्हारी शरण में आया
मैं तो तुम्हारी शरण में आया।
छूट गये सभी संगी-साथी
कुछ थे दीया और कुछ थे बाती
जब से तुम्हारी लौ लगी है,
हुई है यह शीतल छाती
मन में हुई है प्रसन्नता
क्योंकि बीत गई है, वो काली रात्रि
कुछ छोड़ा था, तो तुम्हें पा लिया
साथ में आ गई वो नम्रता, वो विनम्रता
हे साई, जब से तुम्हें देखा है मैं शांत हो गया हूं
आपके समक्ष कैसे खड़े होना है,
अब मैं यह जान गया हूं ।

-विकास मेहरा

गुरूपूर्णिमा पर साई मंदिर रोहिणी में आयें और बाबा का आशीर्वाद पायें

दिल्ली: सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में 10 जुलाई 2025, बृहस्पतिवार को गुरूपूर्णिमा महोत्सव धूमधाम

से मनाया जाएगा। पूरे मंदिर को फूलों और लाईटों से सजाया जाएगा। इस अवसर पर दिनभर विभिन्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान चलता रहेगा। प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक श्रद्धेय आचार्य श्रवण जी महाराज द्वारा भजनों का गुणगान किया जायेगा। 12 बजे मध्यान्ह आरती की जाएगी। उसके बाद सभी भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया जायेगा और सभी भक्तों को माता तुलसी के पौधे वितरित किये जाऐंगे। मंदिर समिति के सदस्यों का मानना है कि हम सबका कर्त्तव्य है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाकर अपने पर्यावरण को आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ व सुरक्षित रखें। दोपहर 12:30 बजे से राधा राठौर, शबनम गांधी, रमा कटारिया, सिम्पी मेहता, इंदू राणा व निर्मल शर्मा भजनों का गुणगान करेंगी। शाम 6 बजे से 6:30 बजे तक विजय रहेजा, 6:30 बजे से

7:30 बजे तक डॉ. रविन्द्रनाथ ककरिया जी भजनों का गुणगान करेंगे। 7:30 बजे धूप आरती की जाएगी। उसके बाद रश्मि भारद्वाज भजनों का गुणगान करेंगी। रात 8:30 बजे से नागर एंड पार्टी द्वारा भजनों का गुणगान किया जायेगा। शेज आरती से कार्यक्रम का समापन होगा।

मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा की तरफ से सभी भक्तों से निवेदन है कि गुरूपूर्णिमा पर अधिक से अधिक संख्या में आकर सद्गुरू श्री साईनाथ महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करें। **-कृष्णा पुरी**

साई कृपा से बदला जीवन

मेरा नाम अजय कुमार सिंह है। मैं नोयडा में रहता हूं। मैं आप सभी पाठकों को बताना चाहता हूं कि कैसे मेरा जीवन बाबा ने बदला। सन् 2014 की बात है, तब मैं रिक्शा चलाता था। उससे मेरे परिवार का बड़ी मुश्किल से गुज़ारा चलता था। मेरी दो बेटियां और एक बेटा है। मुझे हमेशा उनकी पढ़ाई-लिखाई और शादी की चिंता लगी रहती थी, इसीलिए मैं परेशान रहता था। एक बार मैं नोयडा सैक्टर-18 के साई मंदिर के पास से गुज़र रहा था। मंदिर में भजन चल रहे थे। मैं भी मंदिर के अंदर चला गया। वहां मेरी मुलाकात श्री बक्शी जी से हुई। मैंने उन्हें अपनी सारी परेशानी बताई। उन्होंने कहा कि तुम साई बाबा के पैर पकड़ लो और कभी छोड़ना मत, बाबा सब ठीक कर देंगे। मैंने बाबा के पैर पकड़ लिए और नियमित रूप से मंदिर जाने लगा। सैक्टर-19 में एक नीरू आंटी रहती थी उन्होंने भी मुझे आशीर्वाद दिया। बाबा की कृपा से मार्च 2019 में मैं LIC का एजेन्ट बन गया। मैं ज़्यादा पढ़ा लिखा नहीं था। मैंने केवल 10वीं पास की थी। बाबा की कृपा से मैं आज तक LIC में हूं। अब मेरे बच्चे अच्छे से

पढ़ लिख गये। मेरे बेटे ने 12वीं पास करके ग्राफिक्स डिज़ानिंग का कोर्स किया और साथ-साथ ग्रेजुएशन करता रहा। उसका कोर्स खत्म होते ही उसे न्यूज़ 24 चैनल में बहुत अच्छी नौकरी मिल गई। मेरी बेटी 12वीं क्लास में पूरे गौतम बुद्ध नगर में दूसरे नम्बर पर आई। मेरी छोटी बेटी 12वीं क्लास में पढ़ रही है और वो सी.ए. बनना चाहती है। ये सब केवल बाबा की कृपा ही थी कि मेरे बच्चे अच्छे से पढ़ लिख गए और मेरा जीवन ही बदल गया। अब मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। बाबा की कृपा इतनी है कि मेरे पास बयान करने के लिए शब्द नहीं है। बाबा अपनी कृपा मेरे परिवार पर हमेशा बनाए रखें। ओम साई राम।

-अजय कुमार सिंह, नोयडा

श्रद्धा सबूरी
TANEJA JEWELLERS PVT. LTD.
हमारे यहां साई बाबा जी के चांदी के सिंहासन, छत्र, पादुका व मुकुट हर साईज में तैयार किए जाते है
Gold, Diamond, Kundan, Silver Ornaments & Birth Stones
Exclusive Range of Silver Utensils & Gift Articles
Naresh Taneja - 9211760000, 41720094, 29830855
J-37 B, Central Market, Lajpat Nagar-II, New Delhi-24.

Since 1990
aarcee
World renowned name in
WALL PAPER
Awnings, Blinds & Canopies
Visit Before You Buy
Show room: 9-A, Aurobindo Place, HAUZKHAS,
Aurobindo Marg, New Delhi-110016
Terrace Awning
Basket Awning
R.C. Gupta
Ph. 9810030709, 9910030709

• Curtain & Sofa Cloth • Bed Sheets & Bed Covers
• Towels/Table Linen • Quilts & Blankets
• Mattresses & Pillows • Carpets & Rugs • Wallpaper
• Curtains Rods & Venetian Blinds • Cushion Cover
SiTa Fabrics
Furnishing Homes For Better Living
D-37, Central Market, Lajpat Nagar-II,
New Delhi-110024. Ph: 011-41750253/254
We accept all major Credit/Debit Cards
ALL DAYS OPEN
SPECIAL OFFER ON WALLPAPER

सम्पादकीय

सभी भक्तों को गुरूपूर्णिमा पर्व की बधाई। दोस्तों गुरू के बिना ज्ञान संभव नहीं। गुरू ही हमारा मार्ग दर्शन कर हमें सही राह दिखाता है। इसलिए आध्यात्मिक मार्ग पर चलना है तो गुरू का होना अति आवश्यक है। हालांकि आजकल किसी को भी अपना गुरू मान लेना खतरे से खाली नहीं। कई ढोंगी व्यक्ति स्वयं को गुरू बताकर भोले-भाले लोगों का शोषण करते हैं और केवल अपने स्वार्थ के लिए समाज को दुषित करते हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहना ज़रूरी है। वास्तव में सच्चा गुरू वो है जो हमारी सारी भटकन मिटा कर चित्त को स्थिर कर, शांत कर एक जगह, अपने में स्थापित कर दे ताकि फिर कोई उसे डांवाडोल न करे सके। साई सच्चरित्र के अनुसार, 'चाहे कोई कितना भी विद्वान अथवा वेद और वेदान्त में पारंगत क्यों न हो, वह अपने निर्दिष्ट स्थान पर नहीं पंहुच सकता, जब तक कि उसकी सहायतार्थ कोई योग्य पथ-प्रदर्शक न मिल जाय, जिसके पदचिन्हों का अनुसरण करने से ही मार्ग में मिलने वाले गहरों, खंदकों तथा हिंसक प्राणीयों के भय से मुक्त हुआ जा सकता है और इस विधि से ही सांसारिक यात्रा सुगम तथा कुशलतापूर्वक पूर्ण हो सकती है।' श्री साईनाथ महाराज ने अपनी कृपा द्वारा अपने भक्तों को अपनी भक्ति में स्थिर कर लिया। इसलिए हम सौभाग्यशाली हैं जो हमें साई बाबा जैसा सद्गुरू मिला है। आज लाखों लोग बाबा के दर्शन करने शिरडी जाते हैं और वहां जाकर उनका भरोसा, उनकी श्रद्धा और भी दृढ़ होती है। बाबा ने अपने जीवन का एक-एक पल भक्तों के कल्याण हेतु बिताया और सबको प्रेम का पाठ पढ़ाया और स्वयं अपने आचरण से लोगों को जीने का सही मार्ग दिखाया। गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर हम ये संकल्प लेते हैं कि सद्गुरू साईनाथ महाराज के बताए रास्ते पर चलेंगे और उनकी दी हुई शिक्षाओं का सदैव पालन करेंगे। यही गुरू के प्रति हमारी सच्ची आराधना है। **-अंजु टंडन**

आपके खत

आदरणीय दीदी अंजु टंडन जी, साई राम।

आज ग्लोबलाइज़ेशन के युग में भौतिकतावाद की दौड़ में व्यक्ति अपने संस्कारों से दूर भाग रहा है। वह भूल रहा है कि ईश्वर के दिए इस अनमोल जीवन का क्या महत्व है, इस जीवन को खुशनुमा कैसे बनाएं, इसे सार्थक कैसे बनाएं। इसी उद्देश्य को लेकर आज 'श्री साई सुमिरन टाइम्स' के माध्यम से आप पूरे विश्व में जन-जन को इस चेतना की लहर द्वारा आध्यात्मिक राह दिखाने का पुण्य कार्य कर रही हैं। बाबा की लीलाओं और उपदेशों को लेख के रूप में प्रस्तुत कर समाज में श्रद्धा और सबूरी का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। बाबा के इस अखबार को इतना दिव्य और भव्य बनाने में आप स्वयं एवं आपकी सहयोगी टीम धन्यवाद के पात्र हैं। पाठकगण 'श्री साई सुमिरन टाइम्स' नाम के इस आध्यात्मिक भंडार में से मोती चुन-चुन कर उन्हें आत्मसात कर अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करेंगे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ हम पत्रिका के निरन्तर सफल प्रकाशन एवं आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

-सुनीता अग्रवाल, एस.पी. अग्रवाल,
ऋषिकेश

जो मांगा उससे ज़्यादा दिया साई ने

मैं, नितिश वर्मा, पंजाब का रहने वाला हूं और सन् 2012 से मैं दुबई में रहता हूं। मैं 2012 से बाबा की शरण में हूं। सन् 2015 में मैं पहली बार बाबा के दर्शन करने शिरडी आया था उसके बाद बाबा से ऐसी लगन लगी कि मैं हर साल बाबा के दर्शन करने शिरडी आता हूं। मेरी ज़िन्दगी में बाबा के बहुत से चमत्कार हुए हैं। मुझे कभी भी कोई दुविधा हो, परेशानी हो तो मैं मन में सोचता था कि बाबा ये कैसे ठीक होगा। बाबा से प्रार्थना करने के बाद वो समस्या कब और कैसे खत्म हो जाती, पता ही नहीं चलता। मैंने बाबा से जब-जब जो कुछ भी मांगा वो सब मुझे मिला है। बल्कि मैंने जो कुछ भी मांगा उससे ज़्यादा ही मिला है।

एक बार मैं शिरडी जा रहा था। रास्ते में बहुत ट्रैफिक था और जाम लगा हुआ था। मैंने शिरडी में एक सेवादार से बात की कि मैंने रात की आरती करनी है लेकिन मैं पहुंच नहीं पा रहा हूं क्योंकि मैं ट्रैफिक में फंसा हूं। उसने कहा कि अगर आरती करनी है तो यहां 9:30 बजे तक पहुंचना पड़ेगा। मैंने गूगल मैप चैक किया तो वो भी पहुंचने का टाइम 10:30 बजे दिखा रहा था। मैंने ड्राईवर से बात की तो उसने भी कहा कि 10:30-11 बजे से पहले पहुंचना मुश्किल है। मैंने सोचा कि बाबा ही कुछ करेंगे। उसके बाद गाड़ियां साइड होती गई और हम तेज़ी से चलते रहे और मैं 9 बजकर 24 मिनट पर ही वहां पहुंच गया। मैं और ड्राईवर दोनों हैरान हो गये कि हम एक घंटा पहले कैसे पहुंच गये। जब मैं आरती में गया तो बाबा की कृपा से मुझे सबसे आगे खड़ा कर दिया। ये बाबा का चमत्कार ही है। बाबा अपनी कृपा बरसाकर हमारा जीवन धन्य कर देते हैं।

हाल ही में मैंने बाबा से कुछ मांगा था और बाबा ने मुझे जो मांगा था उससे कई गुना ज़्यादा दे दिया। फिर मैंने भी बाबा को शुक्रिया करने के लिए 50 लाख रूपये का दान शिरडी संस्थान में दिया। ओम साई राम। **-नितिश वर्मा,** दुबई

बाबा ने मेरा डर दूर किया

मैं बाबा से पिछले 32 वर्षों से जुड़ी हूं। बाबा ने हमेशा संकटों से मेरी रक्षा की है। दिनांक 21 अप्रैल 2025 को मेरे पैर में फैक्चर हो गया। मेरे पति मुझे अस्पताल ले गये। डॉक्टर ने चैकअप करके बताया कि ऑपरेशन करना होगा। अगले दिन मुझे जब ऑपरेशन के लिये ले जा रहे थे तो मुझे बहुत डर लग रहा था। मैं बाबा की उदि लगाकर प्रार्थना करते हुए जा रही थी कि बाबा आप मेरी रक्षा करना, मेरे साथ रहना। जब मैं स्ट्रेचर पर Pre-operated Room में पहुंची तो मैंने सामने दीवार पर बाबा का बहुत बड़ा चित्र लगा देखा। मेरे रोंगटे खड़े हो गये कि बाबा तो यहां पर भी मेरे साथ हैं। बाबा को अपने करीब देखकर मेरी आंखों से आंसू निकल आये। मेरे साथ खड़ी नर्स ने मुझसे पूछा कि क्या आप बाबा को मानते हो। मैंने उसे बताया कि मैं एक अर्से से बाबा की शरण में हूं। फिर वो मुझसे बातें करने लगी कि मैं भी बाबा को मानती हूं। उसके बाद तो हम आधा घंटा बाबा की बातें करते रहे और मैं अपना सारा डर भूल गयी। मुझे लगा कि बाबा उस नर्स के रूप में मुझे धैर्य बंधाने आये हैं। मैं बाबा का ये एहसास कभी भूला नहीं पाऊंगी। उसके बाद मेरा ऑपरेशन ठीक से हो गया और मुझे पता भी नहीं चला।

मेरे गुरूदेव का मैं दिल से धन्यवाद करती हूं कि वो सदा मुझे अपने चरणों में रखें। जय साई राम। **-ममता शर्मा**

साई बाबा की अद्भुत लीला

सन् 1994 में ही श्री एस. तामुनायडू जो विशाखापट्नम स्थित बूलईया कॉलेज में तेलगू भाषा के प्राध्यापक हैं, को बाबा ने स्वप्न में दर्शन दिये और बोले, 'मुझे मेरा हिस्सा दो'। श्री तामुनायडू को न तो बाबा के विषय में जानकारी थी और न ही वे बाबा के उपरोक्त आदेश को समझ पाये। उन्होंने अपने स्वप्न का वृतान्त बाबा के एक अन्य भक्त को बतलाया। उस भक्त ने श्री तामुनायडू को यह आश्वासन दिया कि बाबा स्वयं आने वाले समय में तुम्हें उन वचनों का अर्थ समझा देंगे और हुआ भी वैसे ही। कुछ दिनों उपरान्त श्री तामुनायडू का एक मित्र बहुत वर्षों बाद उनसे मिलने आया और उसने श्री तामुनायडू को कई वर्षों पहले उधार लिये रूपये भी लौटा दिये। जबकि श्री तामुनायडू उधार दिये गये रूपयों के बारे में भूल चुके थे।

रूपये प्राप्त करने के बाद श्री तामुनायडू को बाबा के वचनों की याद आयी और उन्होंने उन रूपयों में से पांच सौ रूपये अन्नदान कार्यक्रम में दे दिये। वे शिरडी यात्रा पर जाना चाहते थे और बाबा ने उनकी यह इच्छा भी पूरी कर दी।

वे विशाखापट्नम से हैदराबाद गये। वहां रेलवे स्टेशन पर ही उन्हें एक गरीब महिला मिली जो शिरडी यात्रा पर जाना चाहती थी। उसकी दरिद्रता देख कर उन्हें उस पर दया आ गयी और उन्होंने उस मि. हला को अपने खर्चे पर शिरडी यात्रा करने का न्यौता दिया लेकिन उस महिला ने कहा अगर बाबा मुझे स्वयं बुलाना चाहते हैं तो मैं किसी से उधार लेकर नहीं जाना चाहूंगी। उस दिन मनमाड स्टेशन जाने के लिए गाड़ी देरी से चल रही थी इसलिए सभी यात्री हैदराबाद स्टेशन पर ही खड़े थे। स्टेशन पर ही उस महिला को एक पर्स मिला जिसमें चौदह सौ रूपये थे। महिला ने सभी लोगों से बहुत पूछा लेकिन वह पर्स किसी का भी नहीं था। पर्स में रूपयों के अलावा कुछ भी नहीं था। बाद में महिला बाबा की आज्ञा समझ कर उन्हीं रूपयों से शिरडी यात्रा पर गयी। हमारे विचार से तो पर्स का मिलना, जिसमें रूपयों के अलावा कुछ भी पता आदि नहीं था और न ही उसे खोजने हेतु कोई आया, ये बाबा की उस महिला की दरिद्रता पर दयालुता है। उसकी इस गरीबी की हालत में बाबा ने उसके शिरडी आने का प्रबंध किया।

प्रत्येक असहायों के सहारा श्री साई बाबा ही हैं। जिसे उनका सहारा है उसे फिर अन्य किसी सहारे की आवश्यकता नहीं। **-विकास मेहता**

आभार: हृदय के स्वामी श्री साई बाबा

जन्मदिन मुबारक

2 जुलाई को आकांक्षा कोहली के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उन्हें सन्नी कोहली, श्री रमेश कोहली व श्रीमति रेखा कोहली की तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जन्मदिन मुबारक

18 जुलाई को बेबी आकृषी के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर पापा रिषी राज कोहली, मम्मी अंकिला कोहली व नाना नानी श्री के. एल. महाजन व श्रीमति इन्द्रा महाजन की तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

बधाई हो बधाई

दिनांक 14 जुलाई को श्री राजेन्द्र कुमार एवं श्रीमती प्रिया को उनकी शादी की सालगिरह की शुभकामनाएं।

जन्मदिन मुबारक

25 जुलाई को बाबा के नन्हें भक्त प्रेरक शर्मा के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उन्हें पूरे परिवार की तरफ से शुभकामनाएं एवं हार्दिक बधाई।

बाबा ने सबसे अच्छा गिफ्ट दिया

यदि किसी को भक्ति करनी है, तो उस छोटे मासूम बच्चे की तरह करिये जैसे बच्चा अपने माता-पिता से करता है। सम्पूर्ण समर्पण करता है। क्योंकि उनकी देखरेख, उनके मार्गदर्शन से वह निरन्तर आगे बढ़ता जाता है। उसका अपने माता-पिता पर पूर्ण विश्वास होता है। उसके जीवन में दु:खों की परछाई हो या सुखों की खुशबू के सुखद अनुभव, वह माता-पिता को अपने साथ ही खड़ा पाएगा। ऐसा ही भक्तों को अपने साई पर अटूट विश्वास होना चाहिये कि साई किसी भी परिस्थिति में भक्तों का हाथ नहीं छोड़ेंगे।

मैं आप सबको अपना एक अनुभव बताना चाहती हूं। मैं अपने परिवार के साथ अपनी शादी की सालगिरह पर 14 जुलाई 2017 को शिरडी गयी थी। जब मैं दर्शन की लाईन में खड़ी थी तब बाबा से कहा कि आप तो अन्तर्यामी हैं, आप तो सब जानते हैं कि मेरे अर्न्तमन में क्या चल रहा है। मेरी शादी की वर्षगांठ पर मुझे व मेरे परिवार को आशीर्वाद के स्वरूप में कुछ ऐसा मिलना चाहिये कि मैं समझूं कि आपका आशीर्वाद प्राप्त हुआ। जब मैं सपरिवार समाधि मन्दिर के अन्दर दर्शन करने गयी, दर्शन करके हम थोड़ा सा पीछे ही हुए थे कि तब गार्ड ने इनके कंधे पर हाथ रखा और कहा, लीजिये आपका नारियल। हम सब स्तम्भित हो गये कि समाधि मन्दिर में नारियल कहां से आ गया? क्योंकि मंदिर के अन्दर नारियल ले जाना मना है। वह नारियल कहां से आया? यह सब बाबा की कृपा है। बाबा ही जानते हैं कि कब, कहां, कैसे कृपा करनी है। मुझे व मेरे परिवार को बाबा का आशीर्वाद प्राप्त हो गया। मेरे लिए इससे अच्छा गिफ्ट कुछ भी नहीं हो सकता। ओम साई राम।

-प्रिया, महरौली

श्री साई सुमिरन टाइम्स

की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 700 रू. व कोरियर द्वारा 1000 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क **Paytm, M.O. या QR Code** द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के **HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.**

Ph: 9212395615, 9818023070, Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

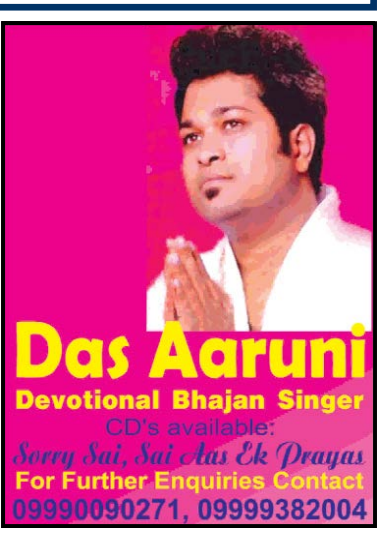

साई ने टिकटें दिलवायीं

प्रसन्ना कुन्नाथ को बाबा के कई अद्भुत अनुभव हुए हैं। वे एक साई मंदिर के बगल वाली बिल्डिंग में रहती हैं। बाबा के अनुभव बताते हुए वे अभिभूत और बहुत भावुक हो गई थी। वे कहती हैं, बाबा की भक्ति के पीछे भी बाबा की लीला ही है। हम सभी जानते हैं कि श्री मनोज कुमार की फिल्म 'शिरडी के साई बाबा 1977 में रिलीज़ हुई थी, तब पूरा भारत साई भक्ति में नहाया हुआ था। इस फिल्म से हर तरफ साई का नाम छा गया और फिल्म की चर्चा होने लगी।

प्रसन्ना को भी यह फिल्म देखने की इच्छा हुई। फिल्म का प्रदर्शन बान्द्रा के कला मंदिर सिनेमा हॉल में शुरू हुआ, तो वे बहुत खुश हो गई, और उत्साहित होकर उस फिल्म का टिकट खरीदने थिएटर चली गई लेकिन वहां पहले से ही हाऊस फुल का बोर्ड लगा हुआ था। वो परेशान हो गई, पर निराश नहीं हुई। यही सोचती रही कि फिल्म ज़रूर देखनी है, लेकिन ब्लैक मार्केट में भी उन्हें टिकट नहीं मिल रहा था। अब उनका धैर्य जवाब देने लगा। सिनेमा हॉल के बाहर बाबा का बड़ा-सा पोस्टर लगा था। वे नम आंखों से उसके सामने खड़ी हो गई और दु:खी मन से फरियाद कर डाली, 'बाबा, लोग कहते हैं कि आप चमत्कार दिखाते हैं, तो मैं भी यह फिल्म देखना चाहती हूं, कुछ करो!' बाबा का चमत्कार तो होना ही था। वहां अपने स्कूल के एक लड़के से उनकी भेंट हो गई, उसने खुद कहा, मैडम, आप यह टिकट ले लो, मेरे पास इस फिल्म के दो टिकट हैं। मेरी दोनों बहनें फिल्म देखने आ रही थीं, लेकिन वे अब नहीं आऐंगी।' बाबा की यह अद्भुत कृपा थी। प्रसन्ना का चेहरा अब फूल-सा खिला हुआ था। 'मुझे दिल से टिकटें दीं, और बिना ब्लैक के!' आगे कहने लगीं, 'बस तब से लेकर आज तक मैं बाबा की ही हो गई। मेरी ज़िंदगी में सिर्फ बाबा, बाबा और बाबा ही हैं। बाबा ने मुझे अपना बना लिया है। यूं लगता है, जैसे साई मेरी सांसों के साथ चल रहे हैं। फिर वहां बाबा का एक मंदिर बनाया गया। तब से मैं यहीं बाबा की सेवा कर रही हूं। मेरा जीवन सार्थक हो गया।

संकलन: मयूरी महेश कदम,
आभार-श्री साई लीला

आ सहायता लो भरपूर जो मांगा वह नहीं है दूर

समस्त साई भक्तों को मेरा ओम साई राम। मेरे छोटे बेटे वैभव गुप्ता ने सन् 2023 में 10+2 की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। तब मेरी पोस्टिंग दिल्ली में थी एवं सरकारी आवास गुड़गांव में था। बारहवीं कक्षा पास करने के बाद देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में दाखिले हेतु counselling की प्रक्रिया चल रही थी। जैसे Jac-Delhi Jee-2023, IIT, VIT Vellore, जयपुर, बैंगलोर इत्यादि। नियति को मंजूर था VIT Vellore Campus अत: वैभव गुप्ता का चयन VIT Vellore में हो गया। 8 अगस्त को एडमिशन के लिए हमें अपने छोटे बेटे को लेकर दिल्ली से Vellore जाना था। यहां अब

मैं यह बताना चाहूंगा कि दोनों बेटों की परवरिश को लेकर हम दोनों पति-पत्नी बहुत possessive एवं over caring हैं। ये शायद मेरी एक कमज़ोरी भी है। Schooling के दिनों में जब दोनों बच्चों को स्कूल से आने में देरी होती तो मन व्याकुल हो जाता था। बच्चों को चोट खरोच बुखार होता तो मन बेहद अधीर हो जाता। कभी-कभी मेरी पत्नी सुधा रानी मुझे समझाने का प्रयास करती कि आप घर के Gaurdian हो और आप ही बच्चों जैसी हरकतें करेंगे तो हमें ढाढस कौन बंधाएगा। मेरे बहन-भाई भी मुझे समझाते कि फालतू में बच्चों को लेकर चिंता ना किया करो। बड़ा बेटा जो नोयडा में कॉलेज में पढ़ाई करता है। 5वें साल में है। अत: उसकी चिंता उतनी नहीं थी। अब छोटे बेटे का VIT Vellore जाने का दिन करीब आ गया था अब मन ही मन चिन्ता मुझे खाये जा रही थी कि कहां दिल्ली और कहां Vellore (तामिलनाडू) 3000 km दूर, मेरा बेटा कैसे रहेगा क्या खायेगा। उसकी तबीयत खराब होगी तो क्या होगा इत्यादि। फालतू की चिंता सताने लगी। उसकी उम्र मात्र 17 साल ही है। अत: इस मुश्किल वक्त में मैंने मन ही मन साई मां से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि हे बाबा, अब आप ही संभालो और अब आप ही देखभाल करना मेरे बेटे की Vellore में। मैं तो विवश हूं अब जाने का दिन करीब आ गया। होस्टल में रहने के लिए उसका सामान पैक हो गया। मैंने बेटे को उदि का पैकेट एवं साई बाबा का टेबल कलैंडर दिया, ये बताकर कि इसे अपने Study table पर हर वक्त रखना। मैं, मेरी पत्नी सुधा एवं बेटा काटपाडी ज. रेलवे स्टेशन से Vellore VIT Hostel पहुंच गए एवं बेटे का Admission हो गया। बेटे को छोड़ने का डर मन ही मन खाए जा रहा था। Admission के पश्चात् दूसरे दिन हम लोग VIT Vellore campus से मात्र 200 मीटर की दूरी पर एक South Indian Style का भव्य मंदिर है, वहां गए। जब हम मंदिर के अन्दर पूजा के लिए फूल प्रसाद लेकर गये तो हमने देखा कि मंदिर प्रांगण में साई बाबा की भी भव्य प्रतिमा है। मैं रोमांचित हो गया एवं आश्वस्त भी हो गया कि बस बाबा की कृपा हो गयी मेरे बेटे पर, (भक्त हेतु दौड़ा चला आऊंगा...) बाबा का संकेत मुझे प्राप्त हो गया कि (आ सहायता लो भरपूर) मुझे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। बाबा ने अपने वचनों का पालन किया। बाबा का वचन ही उनका शासन है, परन्तु हम जैसे मुर्ख अज्ञानी एवं मोह माया में ग्रसित लोगों को यह बात बहुत बाद में समझ आती है। यह कथन अक्षरश: सत्य है कि कार्य के शुरू करने से पहले उसका कार्यान्वयन ईश्वर को सौंप दें तो चिन्ता एवं कार्य समाप्ति का दायित्व अब ईश्वर के अधीन हो जाता है। बेटे से विदाई लेकर हम दोनों पति-पत्नी ट्रेन से वैलोर काटपाडी जक्शन से दिल्ली आ गए। साई बाबा की असीम कृपा से मेरा बेटा बी-टेक में अब थर्ड इयर में चला गया है। मैंने पुन: उसको साल 2025 का साई बाबा का कैलेंडर भेंट किया है कि हर वक्त होस्टल में अपने स्टैडी टेबल पर रखना। **-बलराम गुप्ता,** बक्सर

जन्मदिन मुबारक

जन्मदिन मुबारक

29 जुलाई को श्रद्धेय सरोज माजी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई।

शादी की सालगिरह मुबारक

Parmhans Enterprises
Disposable & Safety Items
Disposable Bed Sheet, Dispo Panty, Dispo Gown, Letex Gloves, Gillette Razor, Dispo Towell, Dispo Tissue, Dispo Face Mask, Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes Natral Gloves, Dispo Hair Band, Cover Surgi Care Gloves M Fold C Fold, Tissue Box,
Customer Care No.
0870065184
E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

मेरी बेटी बाबा के पास है

बाबा के बारे में मुझे अपनी एक सहेली के माध्यम से पता चला। उसने मुझे सत्य साई बाबा के बारे में बताया और उसके बाद मैंने पुट्टापार्थी, बैंगलोर जाना शुरू कर दिया। उसके बाद मुझे नहीं मालूम कि मैं कैसे शिरडी साई बाबा की शरण में आ गई। जैसे कहते हैं कि बाबा अपने भक्त को स्वयं अपने पास खींच लाते हैं मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। एक दिन मैंने शिरडी जाने का सोचा तब मैं शिरडी के बारे में कुछ नहीं जानती थी। मैंने अपनी एक सहेली, जो मुम्बई में रहती थी, उससे बात की। उसी ने संस्थान में मेरे लिए कमरा बुक करवा दिया और दर्शन करने की व्यवस्था भी कर दी। तब मैं पहली बार शिरडी गई और बाबा के दर्शन किये। बहुत सुकून मिला। उसके बाद मेरी जान पहचान बहुत से साई भक्तों से हो गई और मैं उनसे बाबा के बारे में सुनकर बहुत प्रभावित हो गई। मैं पहले गुरू, ज्योतिषयों के पीछे भागती थी लेकिन जब बाबा मिले तो वो सब मैंने छोड़ दिया और अब मेरी ज़िन्दगी में बाबा के सिवाय और कुछ नहीं है।

मेरी इकलौती बेटी सोनालिका को कैंसर हो गया था। सन् 2014 में उसे पेट में कुछ दर्द रहने लगा। वो बुम्बई में रहती थी। मैंने उसे कहा कि किसी अच्छे डॉक्टर से अपना चैकअप करवाओ। पहले वो टालती रही फिर उसने चैकअप करवाया तो पता चला कि फर्स्ट स्टेज का कैंसर है। डॉक्टर ने ऑपरेशन किया और वो ठीक हो गया। कुछ समय बाद पता चला कि उसके यूट्रेस में भी कैंसर है। डॉक्टरों ने उसका यूट्रेस रिमूव कर दिया लेकिन ओवरिज़ को रिमूव नहीं किया जो कि एक बहुत बड़ी गलती थी क्योंकि उसके ओवरिज़ में भी कैंसर था जो फैल गया और दो-तीन साल के बाद कैंसर फोर्थ स्टेज में पहुंच गया, जबकि वो नियमित रूप से चैकअप करवाती थी। उसका फिर से ऑपरेशन हुआ लेकिन कैंसर बहुत ज़्यादा फैल चुका था। उसे पेट में बहुत दर्द होता था। उसके बाद उसने कोई भी इलाज करवाने से मना कर दिया। वो पहले माता की भक्त थी और वैष्णों देवी जाया करती थी लेकिन बाद में धीरे-धीरे वो भी शिरडी साई बाबा की भक्त बन गई और मेरे साथ शिरडी जाती थी। मार्च 2020 से लॉकडाउन लग गया। तब हमने उसके लिए फुलटाइम नर्स रख ली। हम ज़्यादातर घर में ही रहते थे। उसके आखिरी दिनों में उसने मुझे कहा कि हमारे लिए तो बस बाबा ही हैं। उसने बताया कि उसको बाबा दिखाई देते हैं और वो बाबा से बातें करती है। एक बार मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हें बाबा दिख रहे हैं, उसने एक तरफ इशारा करके कहा कि वो देखो बाबा वहां खड़े हैं। मैंने जब वहां देखा तो मुझे कोई नज़र नहीं आया, जबकि उसको बाबा अभी भी दिख रहे थे।

उसकी हालत दिन-ब-दिन खराब होती जा रही थी। वह कुछ भी खा नहीं पाती थी। फूड पाईप के द्वारा उसे खाना दिया जाता था। एक दिन उसने अपनी सारी टूयूब्स हटा दी। मैं घबरा गई और डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने टूयूब लगाई लेकिन उसके 10 मिनट बाद ही 16 सितम्बर 2020 को वो हमेशा के लिए शांत हो गई।

मैं हमेशा बाबा से कहती थी कि मुझसे उसका दर्द देखा नहीं जाता उसे ठीक कर दो। दरअसल बचपन में वो होस्टल में रही और पढ़ाई करने के बाद नौकरी के सिलसिले में वो देश-विदेश में ट्रैवल करती रही। इसलिए मेरे साथ उसने बहुत कम समय गुज़ारा। मैं बाबा से कहती थी कि मुझे कुछ समय इसके साथ दे दो लेकिन जब मैंने उसे तकलीफ में देखा तो मैंने ही बाबा से प्रार्थना की कि इसकी तकलीफ खत्म कर दो और इसे अपने पास बुला लो।

उसने कैंसर के लिए कीमों, रेडिऐशन आदि कोई इलाज नहीं करवाया वो केवल बाबा की उदि लेती थी। जब उसे दर्द होता और नींद नहीं आती थी तो वो मुझे साई नाम जाप करने के लिए कहती थी जब मैं साई जाप करती तो वो सो जाती थी। बाबा के तरीके कुछ ऐसे हैं कि वो अपने भक्तों को तकलीफ सहने की शक्ति भी देते हैं।

सोनालिका मेरी एकलौती बेटी थी। उसे गुज़रे चार साल हो गये हैं। उसके जाने के बाद बाबा ने ही मुझे संभाला है। पहले मेरा कन्सलटैन्सी का काम था तब मैं बहुत व्यस्त रहती थी। अब मैं कोई काम नहीं करती। बाबा के साथ ही व्यस्त रहती हूं। बाबा की किताबें, उनकी शिक्षाऐं आदि पढ़ती हूं। मुझे समझ आ गया है कि इस दुनिया में मानसिक शान्ति सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। साई नाम ही हमें इस भवसागर से पार उतार सकता है। बाबा ही मुझे चला रहे हैं। बाबा ही मुझे हिम्मत देते हैं। मैं बाबा को अपने पास महसूस करती हूं और बाबा से जो कुछ भी कहती हूं वो हो जाता है। पहले अगर मुझे कुछ नहीं मिलता था तो मैं परेशान हो जाती थी, लेकिन अब बाबा की शरण में आने के बाद मुझे कुछ नहीं मिलता तो मैं परेशान नहीं होती और समझ जाती हूं कि ये मेरे लिए था ही नहीं। ये बाबा की ही कृपा है। मेरी बेटी बहुत से सोशल वर्क करती थी। गरीबों को अन्नदान, जानवरों को खाना खिलाना आदि जो भी वो करती थी मैंने उसे आज तक जारी रखा है। मैं हर वीरवार को अन्नदान करती हूं। बाबा से यही प्रार्थना है कि वो मुझे सदा अपनी शरण में रखें।
ओम साई राम। **-रमा लुथरा,** दिल्ली

श्रद्धांजली

दिनांक 31 मई 2025 को श्रीमती मीना शर्मा जी का अचानक निधन हो गया। हमारी साई बाबा से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें और उनके परिवार को इस सदमें को सहने की शक्ति प्रदान करें। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से हम उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **-अंजु टंडन**

सभी भक्तों को
गुरूपूर्णिमा की बधाई
बड़भागी वो जीव हैं,
जो शरण गुरू की आते हैं,
नाम भक्ति की करके कमाई,
जन्म सफल कर जाते हैं।

श्रद्धा सबूरी
LEKH RAJ & SONS JEWELLERS
For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan,Silver Jewellery
Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

बाबा के चरणों में
सरगम स्टूडियो
Producer of Films, Radio & TV Serials
E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

AMBICA PROPERTIES Om Sai Ram
Sale, Purchase & Renting
Deals in: Pahar Ganj, Patel Nagar, Rajender Nagar, Karol Bagh, Inderpuri,
RAMA BUILDERS
Construction, Collaboration & All Types of Building Materials
HOTEL SAI MIRACLE
Luxury Living
Aditya Nagpal-9811175340,
3532/11, Chuna Mandi, Paharganj, (Behind Hotel Anand), New Delhi-110055
Aditya Nagpal

देव नगर में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा

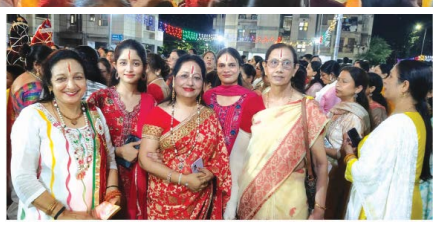

दिल्ली: दिनांक 27 जून 2025 को CPWD कालोनी, देव नगर, करोल बाग में जगन्नाथ रथ यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। पूरी कालोनी को लाईटों से अति सुन्दर सजाया गया। प्रात: 11:45 बजे जगन्नाथ पूजा की गई। तत्पश्चात् हवन किया गया। कालोनी के बहुत से भक्त इस पूजा व हवन में शामिल हुए। सांय 7 बजे जगन्नाथ रथ को फूलों से अति सुन्दर सजाया गया और रथ की पूजा की गई। तत्पश्चात् बैंड बाजे, ढोल आदि के साथ पूरी कालोनी में जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली गई। सुनील बेहरा जी के घर से भगवान जी को लाया गया और रथयात्रा के साथ पूरी कालोनी में घुमाया गया। यात्रा के दौरान देव नगर सोसाइटी के उपस्थित श्रद्धालुओं ने रथ की रस्सी खींच कर आध्यात्मिक आनंद का अनुभव किया। हज़ारों की संख्या में भक्तगण इस यात्रा में शामिल हुए। पूरी कालोनी जगन्नाथ जी के जयकारों से गूंज उठी।

इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम में शिरकत की जिनमें IMD चीफ, श्री मृत्यंजय महापात्रा एवं उनकी पत्नी, MP बांसुरी स्वराज जी, MP श्री अमर पटनायक, MLA श्री विशेष रवि, MLA श्री उमंग बजाज, MLA श्री अनिल शर्मा, Ex मेयर श्री रविन्द्र गुप्ता, टैंक रोड व्यापार मंडल के प्रधान श्री राजेश आहूजा, बीजेपी मंडल के मुखिया श्री संजय शर्मा, व बीजेपी करोल बाग के Spokes person श्री उज्जैनवाला व श्री विजय जी शामिल थे। अंत में सभी भक्तों के लिए स्वादिष्ट भंडारे की व्यवस्था भी की गई। लगभग 3000 लोगों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमुख तौर पर श्री अनिल पटनायक, श्री सारंगी, श्री श्रवण कुमार, श्री पी.के. नंदा, श्री सुनील बेहरा, श्री सारंगी, श्री जयंत पटेल, सरोज सुमंता जी, श्री सुतार, श्री बी. आर मिश्रा, श्री चंपक, श्री आसीम दादा, श्री मुन्ना जी, श्री विजय, श्री कुलश्रेष्ठ, श्री दिनेश, श्री संतोष साह, श्री दीपक, श्री प्रकुंज, श्री एबलेंडर एवं RWA के प्रधान श्री राकेश, सचिव श्री मौर्या व अन्य सभी सदस्यों का योगदान सराहनीय रहा। सभी ने तन-मन-धन से सहयोग देकर इस रथयात्रा को एक यादगार कार्यक्रम बना दिया।

-मंजु पालीवाल

साई मंदिर रोहिणी में निर्जला एकादशी पर शर्बत वितरण

दिल्ली: दिनांक 6 जून 2025 को शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में निर्जला एकादशी के अवसर पर मंदिर के बाहर मीठे पानी की छबील लगाई गई। गर्मी अधिक होने के कारण कई भक्तों ने यहां आकर मीठे शर्बत एवं शीतल जल का प्रसाद ग्रहण किया। पूरा दिन मीठे शर्बत का वितरण लोगों के लिए होता रहा।

ऐसा मानना है कि इस मंदिर में भक्तों की मुरादें पूरी होती हैं इसीलिए यहां भक्तों की भीड़ अक्सर लगी रहती है। इस साई मंदिर में हर त्यौहार भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। मंदिर समिति के सभी सदस्य बाबा के परम भक्त हैं और वे मंदिर में होने वाले सभी कार्यक्रम पूर्ण श्रद्धाभाव से आयोजित करते हैं। सभी कार्यक्रमों का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के. एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा द्वारा किया जाता है। **-कृष्णा पुरी**

नवज्योति युवा मंडल द्वारा शिरडी में साई भजन संध्या एवं पालकी

शिरडी: नवज्योति युवा मंडल के प्रधान श्री जतिन चावला जी 16 जून 2025 को भक्तों का जत्था लेकर शिरडी पहुंचे। दिनांक 17 जून 2025 को नवज्योति युवा मंडल के सदस्यों द्वारा शिरडी में होटल स्पर्श के प्रांगण में विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। साई भजन संध्या का शुभारंभ रात 8 बजे ज्योति प्रचंड के साथ किया गया। शिरडी मंदिर के पुजारी श्रद्धेय अमित देशमुख जी ने पूजा अर्चना करके ज्योति प्रचण्ड की। भजनों का गुणगान सुप्रसिद्ध सूफी गायक हमसर हयात एवं उनके साथी कलाकारों द्वारा किया गया। उन्होंने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में कई भजन सुनाकर भक्तों को मंत्र मुग्ध कर दिया। भक्तों ने उनके भजनों पर बाबा की मस्ती में खूब नृत्य किया। पूरा माहौल साईमय हो गया। इस अवसर पर शिरडी साई संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी एवं उनकी पत्नी श्रीमती वंदना गा. डिलकर ने भी कार्यक्रम में शिरकत की। श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने हमसर हयात जी को सम्मानित करते हुए उनकी गायिकी की सराहना की। देर रात तक भजनों का गुणगान चलता रहा तत्पश्चात् सभी भक्तों के लिए स्वादिष्ट भंडारे की व्यवस्था की गई। दिनांक 18 जून को नवज्योति युवा मंडल के सदस्यों द्वारा शिरडी में बाबा की पालकी बड़ी धूमधाम से निकाली गई।

समस्त कार्यक्रम का आयोजन श्री जतिन चावला, श्री धर्मेन्द, श्री राहुल आर्यन, श्री आशीष महाजन, श्री तरूण मेंहदीरत्ता व श्री राज कुमार वर्मा द्वारा किया गया।

-गायत्री सिंह

शिरडी साई सुमंगलम संस्थान फरीदाबाद से भक्तों को निमन्त्रण

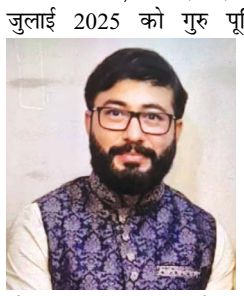

फरीदाबाद: शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर 16-A, फरीदाबाद में दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरु पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी भक्त बाबा को अपने हाथ से टीका लगा सकेंगे और बाबा के चरणों में माथा टेक आशीर्वाद ले सकेंगे। इसी प्रक्रम में बाबा का प्रसाद, पूरी-छोले व खीर का वितरण सभी भक्तों को किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त दिनांक 26 जुलाई 2025 को मंदिर के 33वें स्थापना दिवस पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाएगा। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम की शुरूआत 24 जुलाई वीरवार को शाम 4 बजे बाबा की पालकी शोभायात्रा से की जाएगी। जिसमें बाबा की पालकी का जीवंत चित्रण किया जाएगा। 25 जुलाई को सुन्दरकांड पाठ शाम 5 बजे से किया जाएगा। 26 जुलाई को सुबह हवन व दोपहर 12 बजे भंडारा होगा एवं शाम को साई भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा जिसमें साई भजन गायक सक्सैना बंधु जी द्वारा भजनों का गुणगान किया जाएगा। सभी भक्तों से अनुरोध है कि इन कार्यक्रमों में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें। **-योगेश दीक्षित,** प्रधान

श्री साई समिति सेक्टर 40 नोएडा द्वारा निर्जला एकादशी पर शर्बत वितरण

नोयडा: दिनांक 6 जून 2025 को निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर श्री साई समिति नोएडा द्वारा शिरडी साई बाबा मंदिर में शर्बत का वितरण किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित हुए और शर्बत ग्रहण कर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर समिति द्वारा सेक्टर-39 स्थित ज़िला अस्पताल के पास भी शरबत वितरित किया गया, जिससे वहाँ उपस्थित लोगों को भी यह प्रसाद स्वरूप शरबत ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर समिति के सदस्यों एवं सेवकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

साई मंदिर सरोजनी नगर में स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 30 जून 2025 को श्री साईनाथ मंदिर, बाबू मार्किट के नज़दीक, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर में मंदिर का स्थापना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। पूरे मंदिर को गुब्बारों और फूलों से सजाया गया। इस अवसर पर मंदिर की संस्थापक एवं बाबा की परम भक्त श्रीमती प्रीति भाटिया जी ने दोपहर की आरती के बाद भंडारे का आयोजन किया। सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भण्डारा ग्रहण किया। उसके बाद स्थानीय भक्तों ने साई नाम जाप किया और उसके बाद सुप्रसिद्ध गायक दया भाई ने अपनी मधुर आवाज़ में भजनों का गुणगान करके पूरे माहौल को साईमय बना दिया। दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक भजनों का गुणगान चलता रहा। साई भक्त पंकज जी ने कुछ भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। सबने मधुर भजनों का आनंद लिया। कई भक्तों ने मंदिर में आकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन बाबा की परम भक्त एवं मंदिर की संस्थापक श्रीमती प्रीति भाटिया जी द्वारा एवं अन्य भक्तों के सहयोग से किया गया। **-पूनम धवन**

शिरडी धाम विकास पुरी में साई पालकी एवं गुणगान

दिल्ली: शिरडी धाम मंदिर, केजी-1 केजी-2 विकासपुरी में हर वीरवार को बाबा के भजनों का गुणगान किया जाता है और बाबा की पालकी भी निकाली जाती है। दिनांक 5 जून 2025 को अंकित नायक ने भजनों का गुणगान किया और 12 जून को सन्नी संदीप ने, 19 जून 2025 को रवि मल्होत्रा ने तथा 26 जून को कविता साई द्व रा भजनों का गुणगान किया गया।

हर वीरवार को मंदिर में बहुत से भक्त आते हैं और भजनों के कार्यक्रम में शामिल होकर भजनों का आनंद लेते हैं और बाबा का आशीर्वाद पाते हैं। भजनों के बाद आरती की जाती है। उसके पश्चात् सभी भक्तों को प्रसाद और भंडारा वितरित किया जाता है। यहां विशेष बात यह है कि सर्वप्रथम गरीब बच्चों को प्रसाद व भण्डारा वितरित किया जाता है उसके बाद अन्य भक्तों को, जो अत्यंत सराहनीय है।

दिनांक 10 जुलाई 2025, बृहस्पतिवार को गुरूपूर्णिमा महोत्सव पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। भजनों के बाद भण्डारा प्रसाद वितरित किया जायेगा। शेज आरती से कार्यक्रम का समापन होगा। आप सभी भक्तों से अनुरोध है कि मंदिर में आकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें। यहां प्रत्येक कार्यक्रम का आयोजन डा. मीनू महाजन एवं श्री विशाल सेठ द्वारा स्थानीय भक्तों के सहयोग से किया जाता है। **-कृष्णा**

तलवार परिवार द्वारा सरदारजी रैस्टोरेंट में भक्तिमय साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 2 जून 2025 को श्री करण तलवार एवं उनके परिवार द्वारा राजा गार्डन स्थित उन्ही के सरदारजी रैस्टोरेंट में भक्तिमय साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरूजी सुशील कुमार मेहता जी ने भी कार्यक्रम में शिरकत की और आने वाले सभी भक्तों को आशीर्वाद दिया। बाबा की लीलाओं का

गुणगान सांय 6 बजे आरंभ हुआ। सर्वप्रथम श्री मोनू जी ने अपनी मधुर आवाज़ में एक के बाद एक मधुर भजन सुनाकर पूरे माहौल को साईमय बना दिया। सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री जौनी सूफी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। भक्तों के अनुरोध पर उन्होंने भी कुछ भजन सुनाकर सभी भक्तों को साई भक्ति में सराबोर कर दिया।

श्री जौनी सूफी जी ने बताया कि वे बहुत बीमार थे पिछले 16 दिनों से अस्पताल में भर्ती थे उन्हें पीलिया हो गया था। उनकी हालत इतनी खराब हो गई थी कि उनको ऐसा लग रहा था कि शायद वे अब कभी भजन नहीं गा पाएगें क्योंकि उनसे न बोला जा रहा था न कुछ खाया जा रहा था। लेकिन यहां आकर साई बाबा के दर्शन करके और गुरूजी के दर्शन करके न जाने कहां से उनमें ताकत आ गई और उन्होंने कुछ भजन सुनाए। उनका कहना है कि ये केवल बाबा की और गुरूजी की कृपा से हो पाया। देर रात तक भजनों का गुणगान चलता रहा। इस दौरा स्नेहा जी का जन्मदिन भी मनाया गया और उन्होंने बाबा के समक्ष केक भी काटा जो सभी भक्तों को वितरित किया गया। आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके बाद सभी भक्तों ने अत्यन्त स्वादिष्ट भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। सभी भक्तों को बाबा के प्रसाद के पैकेट देकर विदा किया गया। **-जी.आर. नंदा**

हरिचन्द प्रकाशवंती चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.)
की तरफ से सभी भक्तों को
गुरूपूर्णिमा की शुभकामनाऐं।
-नरेन्द्र मिश्रा
(मुख्य प्रशासनिक अधिकारी)
साई धाम हौस खास, साई धाम प्रसाद नगर,
साई धाम उप्पल साऊथएण्ड, गुड़गांव

साई मंदिर आदर्श नगर में गुरूपूर्णिमा पर भक्तों को निमन्त्रण

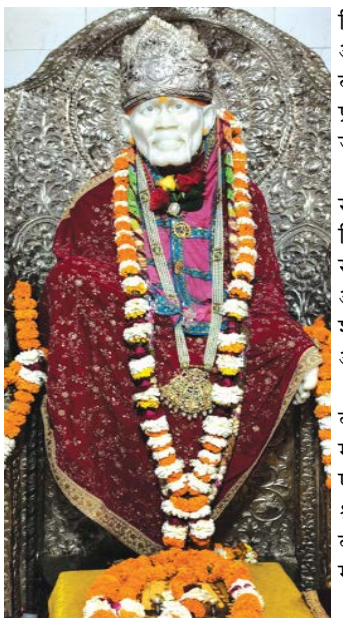

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को शिरडी साई मंदिर, एफ-1, अशोक रोड, आदर्श नगर एक्सटेंशन में गुरू पूर्णिमा महोत्सव बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस पावन अवसर पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। सांयकाल में भजन संध्या का आयोजन होगा जिसमें बाबा की महिमा का गुणगान शाम 5 बजे से किया जायेगा। भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायक बूम-बूम सैन्डी एवं के. के. अन्जाना को आमंत्रित किया जायेगा। इस अवसर पर सांय 5 बजे भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया जायेगा।

आप सभी भक्तों से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में मंदिर में आकर कार्यक्रम में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें।

इस मंदिर में प्रत्येक कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं चेयरमैन स्वर्गीय श्री बी.पी. मखीजा जी के दिखाए मार्ग दर्शन में किया जाता है।

-कृष्णा पुरी

साई मंदिर विरेन्द्र नगर में वार्षिक महोत्सव

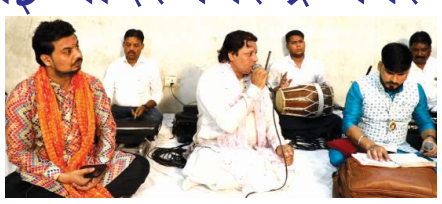

दिल्ली: दिनांक 18 जून 2025 को श्री साई मंदिर, गली न. 2, विरेन्द्र नगर एक्सटेंशन, बी2सी जनता फ्लैट्स, जनकपुरी में साई मंदिर का 16वां वार्षिक साई महोत्सव श्रीमती सरोजनी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा धूमधाम से मनाया गया। दिनांक 18 जून को सायं 7 बजे साई बाबा की पालकी शोभा यात्रा बैंड बाजे के साथ धूमधाम से निकाली गयी। पालकी में भक्तगण नाचते गाते हुए पालकी के साथ-साथ साई नाम के जयकारे लगाते हुए चले। कई जगह बाबा की पालकी का स्वागत करके भक्तों में प्रसाद बांटा गया। विरेन्द्र नगर में भ्रमण करने के बाद बाबा की पालकी पुन: मंदिर पंहुची। तत्पश्चात शेज आरती की गई।

दिनांक 21 जून 2025 को सायं 6 बजे से साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। आमन्त्रित भजन गायक जीतू तुफानी एंड पार्टी, राहुल शर्मा, प्रदीप कुमार एवं आशु ने अपने-अपने अंदाज़ में भजन सुनाकर सारा वातावरण साईमय कर दिया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लिया और उनकी गायिकी की सराहना की। बाबा का रंगबिरंगे फूलों से सजा दरबार बहुत सुन्दर लग रहा था जो सभी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। कार्यक्रम का समापन शेज आरती के साथ हुआ। उसके बाद सभी भक्तों ने प्रेमपूर्वक भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती सरोजनी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट एवं समस्त साई परिवार के सदस्यों व स्थानीय भक्तों के सहयोग से सफलता पूर्वक किया गया। **-कृष्णा पुरी**

सुमित पोंदा भाई जी द्वारा शिरडी में साई अमृतकथा

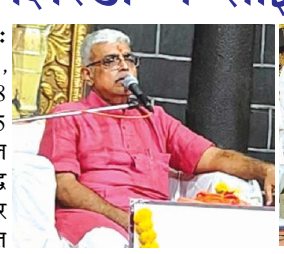

शिरडी: दिनांक 16, 17 व 18 जून 2025 को भोपाल के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री सुमित पोंदा भाई जी द्वारा शिरडी में समाधि शताब्दी मंडप पर तीन दिवसीय साई अमृत कथा का आयोजन किया गया। तीनों दिन दोपहर 3 बजे से सांय 6 बजे तक भाई जी ने कथा में अपने चिरपरिचित अंदाज़ में बाबा की अनेक लीलाओं का वर्णन किया। तीनों दिन हज़ारों भक्तों ने उनकी कथा का आनन्द लिया। सुमित पोंदा जी ने बाबा की लीलाओं के साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक किस्से भी सुनाए और कथा के दौरान अनेक मधुर भजनों का गुणगान भी किया जिसका सभी भक्तों ने भरपूर आनन्द लिया। कथा के दौरान दिल्ली के सुप्रसिद्ध चित्रकार साई रत्न राजेश जी ने तीनों दिन बाबा की अति सुन्दर लाईव पेंटिंग बनाई। कथा के अन्तिम दिन दिनांक 18 जून को तीनों पेंटिंग्स लक्की ड्रॉ द्वारा तीन भक्तों को उपहार स्वरूप दी गई। लक्की ड्रॉ संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी, उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री भीमराज दराडे एवं श्री विजय कोते पाटिल जी के कर कमलों से निकाला गया। जिन तीन भक्तों को पेंटिंग उपहार स्वरूप मिली वो बाबा को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

दिनांक 17 जून को कथा के समापन के पश्चात् सुमित जी के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर भोपाल से आए भक्तों ने एवं अन्य सभी भक्तों ने उनका जन्मदिन मनाया और सुमित पोंदा जी ने केक भी काटा जो सभी भक्तों को बांटा गया। सभी भक्तों ने उन्हें जन्मदिवस की शुभकामनाएं दी। सुमित पोंदा जी हर वर्ष अपने जन्मदिन पर शिरडी में साई कथा की सेवा प्रदान करते हैं। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से उन्हें शुभकामनाऐं देते हुए हम बाबा से दुआ करते हैं कि बाबा उन्हें लम्बी उम्र, अच्छी सेहत व खुशहाल जीवन प्रदान करें।

-गायत्री सिंह

साई मंदिर रघु नगर में स्थापना दिवस

दिल्ली: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 30 जून 2025 को शिरडी साई बाबा मन्दिर, रघु नगर का 16वां स्थापना दिवस मंदिर के हॉल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: बाबा का मंगलस्नान एवं अभिषेक किया गया। सायं 7 बजे से साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध भजन गायक सेठी जी व उनके साथी कलाकारों ने अनेक साई भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। कई भक्तों ने उनके भजनों पर नृत्य भी किया। मन्दिर का पूरा हाल भक्तों से खचाखच भरा था। सुप्रसिद्ध भजन गायक दास आरूणी जी ने भी भक्तों की फरमाईश पर कुछ भजन सुनाकर सबको साई भक्ति में सराबोर कर दिया। इस अवसर पर बाबा के समक्ष केक भी काटा गया जो सभी भक्तों को प्रसाद स्वरूप वितरित किया गया। आरती के बाद भक्तों ने स्वादिष्ट भण्डारे का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री शशि कपूर जी द्वारा बतरा जी, अश्मित जी, सुरेश जी, राणा जी, सुभाष जी, राजकुमार जी, धर्मेंद्र जी, धर्मेश जी, मनोहर लाल जी, शौर्या कपूर, चरणजीत सिंह सचदेवा जी व स्थानीय भक्तों के सहयोग से किया गया।

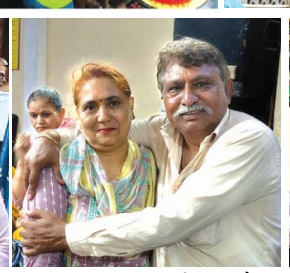

इस मंदिर में श्री शशि कपूर जी एवं उनका परिवार स्वयं बाबा की सेवा करते हैं। इस साई मंदिर में चढ़ावा नहीं चढ़ाया जाता। मंदिर का माहौल अत्यंत भक्तिमय है। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर देव नगर में भजन कीर्तन

दिल्ली: दिनांक 26 जून 2025 को प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में मंदिर की महिला मण्डल की सदस्यों एवं साई भक्तों के द्वारा साई भजन, कीर्तन किया गया। जिसका वहां उपस्थित सभी भक्तों ने भरपूर आनन्द लिया और साथ ही बाबा का आशीर्वाद भी लिया। भजनों के पश्चात् पंडित जी के द्वारा साई बाबा की शाम की आरती की गई।

मंजु पालीवाल जी ने सभी भक्तों के लिए बाबा से दुआ की कि बाबा का आशीर्वाद सब पर बना रहे और बाबा सब पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें।

-मंजु पालीवाल

क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी?

श्री साई बाबा 1858 से 1918 तक शिरडी में रहे। इस अवधि में अनगनित लोग उनके दर्शनार्थ और कृपा पाने के लिये शिरडी आये। विभिन्न स्थानों, धर्मों जातियों और सामाजिक स्तरों के गणमान्य लोग साई चरणों की ओर आकर्षित हुए। एक अत्यंत शक्तिशाली चुम्बक की भांति बाबा ने अपनी ओर कई महान आत्माओं को खींच लिया जिनका बाबा के साथ किसी न किसी रूप में साथ था। यह पूर्णतया सत्य है कि श्री चरणों में आने वाले ज़्यादातर लोग अपनी भौतिक समस्यों को साथ लाये और बाबा ने प्राय: सभी मामलों में भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण किया। बाबा का कथन था, मैं अपने भक्तों का दास हूं। इस मस्जिद का फकीर बहुत दयालु है। इसलिये जो कोई भी उनके पास गहरे विश्वास, प्रेम, आदर, भक्ति के साथ गया उसने अपनी इच्छाओं को पूरा होते पाया। परन्तु साथ ही साथ बाबा के श्री चरणों में कुछ ऐसी भाग्यशाली आत्माऐं भी आई जिन्होंने सब कुछ त्याग कर सिर्फ श्री चरणों का सान्निध्य ही मांगा। अपनी भक्ति से साई चरणों का स्नान कराया, बाबा द्वारा कहे गये प्रत्येक शब्द को हृदय में उतार, अपने अन्तिम ध्येय को प्राप्त किया।

पाठशाला के एक अध्यापक, शिरडी वासी माधवराव देशपांडे, शामा जी, जो साई बाबा को एक मुस्लिम फकीर समझते रहे, वो ही साई चरणों में ऐसे समर्पित हुए कि अन्य लोग उन्हें शिव साई का नन्दी कहने लगे थे। उनकी भक्ति सखाभाव थी, जैसे प्रभु श्री कृष्ण के साथ अर्जुन की थी। अन्य भक्तों द्वारा आयोजित किए गये उत्सवों व दावतों में वे बाबा के प्रतिनिधि के रूप में जाने वाले एक भाग्यशाली व्यक्ति थे। माधव राव लगभग 44 वर्षों तक बाबा के साथ रहे। वे प्यार से बाबा को देवा कहकर बुलाते थे। बाबा भक्तों से प्राप्त दाक्षिणा को अन्य भक्तों में बांट देते थे परन्तु शामा को कुछ नहीं देते थे। महान आश्चर्य, शामा जी ने भी बाबा से कुछ नहीं मांगा। एक बार अवश्य शामा ने बाबा से ज़रूर कहा कि अगर सत्य में ब्रह्मलोक, विष्णुलोक एवं महेश लोक है तो वे उन्हें उनके दर्शन करवायें। भक्त की विनती सुन बाबा ने उन्हें त्रिलोक के दर्शन करवाये। शामा ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश के दर्शन किये जो हीरो से जड़ित सिंहासन पर विराजमान थे। ये देख जब शामा ने गहरी सांस ली तो बाबा ने कहा, 'यह हमारे लिये नहीं और ना ही हमें इसकी ज़रूरत है। हमारे लिये कुछ और ही है। साई चरणों में भक्त शामा की भक्ति इतनी उच्चतम थी कि कोई भी भक्त उनसे ईर्ष्या कर सकता था। शिरडी डायरी में, 8 दिसंबर 1911 में दादा साहेब खापर्डे ने इस प्रकार लिखा है- माधवराव देशपांडे यहां थे और उन्हें नींद आ गई थी, मैंने अपनी आंखो से देखा और कानों से सुना, माधवराव की हर सांस-नि:श्वास के साथ साईनाथ महाराज, साईनाथ बाबा' की साफ आवाज़ आती है। यह आवाज़ साफ है और शब्द दूर से ही सुने जा सकते हैं। यह वास्तव में अनोखी बात है।

भक्तगण-क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी? और किस उपाय से इसे प्राप्त किया जा सकता है?'

श्रीमती राधाकृष्ण माई के पति का कम उम्र में ही निधन हो गया था, इस कारण वे पढंरपुर चली गई थी। बाबा श्री की ख्याति सुन वे सन् 1905 में नाना साहेब के साथ शिरडी आई। प्रथम दर्शन पर ही उन्हें अनुभूति हुई कि शिरडी ही उनका असली घर है, अत: शिरडी को ही अपना निवास बना लिया। उनकी इच्छा थी कि साई बाबा जी की पूजा-अर्चना वैसी ही हो जैसे विट्ठल जी की पूजा पंढरपुर में होती थी। उनकी कार्यकुशलता के कारण ही शिरडी में चावड़ी समारोह, रामनवमी के त्यौहार में समन्वय, चंदन समारोह, नामसप्ताह आदि की शुरूआत हुई। एक और कार्य वे खुशी-खुशी करती थी, वह था मस्जिद की सफाई करना, चूना पोतना, क्योंकि मस्जिद की दीवारें आदि लगातार धूनि जलने से काली हो जाती थी। यह कार्य वो उस दिन करती जब बाबा चावड़ी में विश्राम करने जाते थे। राधामाई जी के घोर परिश्रम के कारण ही शिरडी को संस्थान का रूप मिला। उन्हीं की लगन से बाबा की काकड़ आरती व शेज आरती शुरू हुई। एक अन्य विशेषनीय बात, बाबा जो भी भिक्षा में प्राप्त रोटी में से आधी या पूरी भाकरी माई को भेजते, उसी में आई अपना गुज़ारा करती। आभाग्यवश 35 वर्ष की कम आयु में आई का देहान्त 1916 में हो गया। शिरडी में लगभग दस वर्ष की अवधि में जो अद्भुत कार्य उन्होंने किये, वे किसी अन्य के लिये 25 वर्षों में भी करना संभव नहीं था। काका साहेब उन्हें प्रेम भक्ति का आचार्य मानते थे।

सुधिजन-क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी? हमें भी निष्काम भाव से बाबा की सेवा कर अपना पारलौकिक जीवन संवारना चाहिए।

जिस प्रकार एक दयालु माता, बालक के उपचारार्थ कड़वी दवा का बलपूर्वक उपयोग करती है, उसी प्रकार साई बाबा भी अपने भक्तों के कल्याणार्थ ही उपदेश दिया करते थे। अपने गुरू साठे साहेब के आदेशानुसार श्री मेघा मन में शंका लिये कि बाबा एक यवन हैं और वो एक ब्राह्मण, कैसे उन्हें प्रणाम करे, जैसे ही द्वारकामाई गये, बाबा ने उसे अन्दर नहीं आने दिया और वो ही शब्द दोहराये, जो उसके मन में थे, ये सुन मेघा कांप उठा। वह अपने घर लौट गया और वर्ष भर के पश्चात् पुन: जब शिरडी गया तो उसकी मनोस्थिति में परिवर्तन हो चुका था। वह शिवजी का भक्त था और बाबा को शिवजी का अवतार समझने लगा था, इसी कारण एक मकरसंक्रान्ति के दिन गोदावरी से जल लाकर बाबा को स्नान कराया। नियमानुसार वे प्रतिदिन गांव के सभी देवालयों की पूजा कर व मस्जिद में आकर कुछ देर बाबा के श्री चरणों की सेवा करता व चरणामृत पान करता। इस प्रकार कई वर्षों तक लगातार दोपहर व संध्या को नियमित आरती व पूजा कर 19 जनवरी 1912 को मेघा परलोकवासी हो गया। यह ध्यान देने वाली बात है कि मेघा बाबा श्री की आरती एक टांग पर खड़े होकर किया करता था। इतिहास गवाह है कि बाबा अपने जीवन में दो बार रोये, एक मेघा की मृत्यु पर, दूसरा ईंट टूटने पर। बाबा ने मेघा के मृत शरीर पर अपना हाथ फेरते हुए यह भी कहा यह मेरा सच्चा भक्त था। श्रोतागण, 'क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी? इस भक्ति का कुछ अंश भी हमें प्राप्त हो जाये,'

मुस्लिम साई भक्तों में अब्दुल बाबा का नाम आज हर साई भक्त आदर से लेता है। वर्ष 1890 में 20 वर्ष की आयु में वे शिरडी आये और 66 वर्ष तक शिरडी से जुड़े रहे। बाबा श्री की महासमाधि पश्चात् भी वे एक सच्चे सेवक के रूप में सेवा करते रहे। बाबा श्री का छोटा या बड़ा कार्य वे पूरी लगन से करते थे। बाबा के रास्ते में सफाई, कपड़े धोने, द्वारकामाई, चावड़ी की सफाई आदि भी वे खुशी-खुशी करते थे। उनकी भक्ति देख बाबा ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा था, 'मैंने तुम्हें भवसागर के पार उतार दिया है, तेरी मिट्टी को सोना बना दिया है।' उन्होंने बाबा श्री के देह त्याग पश्चात् भी उनकी समाधि की सेवा की, अपनी व्यक्तिगत असुविधाओं का ध्यान न कर बाबा की निष्काम सेवा की। चावड़ी के सामने अब्दुल की कुटिया है। शिरडी आने वाले भक्त यहां अवश्य आते हैं। कुटिया में अब्दुल जी के फोटो व उनसे संबंधित सामान यहां भक्तों के दर्शनार्थ हेतु रखा गया है।

आदरणीयजन-'क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी? अध्याय नौ में जिस तर्खड बालक की कथा है उनका नाम ज्योतिन्द्र तर्खड है। वे उस समय 17 बार शिरडी गये थे। उनकी व उनके पूरे परिवार की साई बाबा में पूर्ण श्रद्धा थी। ज्योतिन्द्र को बाबा ने दो बार नवजीवन दिया, जिसके लिये वे ता-उम्र बाबा के ऋणी रहे। वर्ष 1918 में एक समय बाबा ने पास बैठे हुए भक्तों से पूछा कि उन्हें क्या चाहिए? किसी ने पुत्र मांगा, किसी ने धन मांगा किसी ने बिमारी से छुटकारा मांगा। बाबा ने ज्योतिन्द्र से पूछा, तुम्हें क्या चाहिए? उसने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिए। बाबा पुन: बोले, भाऊ यह हमारी आखिरी भेंट है, जो तू मांगेगा, मैं दूंगा। तब ज्योतिन्द्र ने कहा, 'बाबा जो कुछ मैं मांगूगा, आपको देना होगा, आप मना नहीं करेंगे।' बाबा के हां करने पर जयोतिन्द्र बोला 'बाबा अगले जन्म में चाहे मैं कोई भी रूप लूं, आप मुझे ज़रूर मिले। ये सुनकर बाबा बोले, तो तू मुझे अगले जन्म के ऋण में बांधना चाहता है, ठीक है तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। अगले जन्म में हम दोनों एक ही थाली में भोजन करेंगे। यह सर्वविदित है कि बाबा श्री के वचन बुद्धलिखित हैं। बाबा के दरबार से आज तक कोई खाली नहीं गया था। ज्योतिन्द्र चाहते तो धन-दौलत सब मांग सकते थे परन्तु उन्होंने सिर्फ बाबा श्री का सान्निध्य मांगा। एक अन्य अवसर पर बाबा ज्योतिन्द्र को किसी निर्जन जगह ले गये और हाथों से मिट्टी हटाकर अंदर देखने को कहा। ज्योतिन्द्र को वहां सोने जैसे धातु नज़र आये। बाबा ने कहा, यह सब तेरे हैं, ले लो। मुझे यह सब कुछ नहीं चाहिए, मैं इसलिये शिरडी नहीं आता हूं, यह ज़हर है। बाबा ने तब पुन: कहा, जब लक्ष्मी आती है तो मना नहीं करना चाहिए, वह नाराज़ हो जाती है। तब भी ज्योतिन्द्र ने मना कर दिया। (तर्खण्ड परिवार के अनुभव)

-क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी?

बाबा चाहते थे कि उनके भक्त केवल चार चीज़े करें- श्रद्धा व सबूरी रखें, नाम स्मरण करें, अपने गुरू के आगे पूर्ण समर्पण करें और जीवन में उन्हें जो भी स्थिति मिली है, उसे पूर्ण निष्ठा व वैराग्य भाव से निभाते रहें। श्री कृष्णाजी काशीनाथ जोशी उपनाम कुशा भावे ने अपने 22वें वर्ष में ही अपने गुरू से योग विद्या, कुण्डलिनी शक्ति तथा मारण (किसी को मारने के लिये किया गया अनुष्ठान) व उच्चाटन (भूत-प्रेत भगाने की विद्या) व वशीकरण की विद्या सीख ली थी। वे मंत्र-शक्ति से हवा में हाथ उठाकर कभी मिठाई तो कभी फलों से हाथ भर लेते थे। इन सब शक्तियों को उन्होंने एक लोहे के कड़े में कैद कर अपने हाथ में वो कड़ा डालकर रखते थे। उनके गुरू ने जब हिमालय जाकर तप करने को सोचा तो कुशा भावे को कहा, 'शिरडी जाओ, उनकी आज्ञा मानो, वे मेरे बड़े भाई हैं।' वर्ष 1908 में शिरडी आकर जैसे ही द्वारकामाई में प्रवेश करने लगे, बाबा ने उन्हें रोका और कहा, 'अपना यह लोहे का कड़ा उतार कर ही यहां आना।' कुशा भाऊ ने बाबा की आज्ञा सुन तुरंत वह कड़ा उतार कर फेंक दिया। पास में धन न होने के कारण भिक्षा मांग कर गुज़ारा करते और रात्रि को जहां कहीं जगह मिलती, सो जाते।

बाबा श्री ने अपनी अद्भुत शक्ति से कुशा के हृदय में श्रद्धा के ऐसे बीज अंकुरित किये कि वे उस समय तीन वर्ष लगातार उनके साथ रहे। एक बार एकादशी के दिन कुशा भावे बाबा के पास बैठे थे। बाबा ने पूछा, आज के दिन क्या खाया? 'आज एकादशी है, कुछ नहीं खाया।' कुशा बोले, आज उपवास का दिन है, कंदमूल ही खाते हैं।' अरे तुम कांदा (प्याज) खाते हो, लो आज और खाओ' बाबा ने कहा। कुशा बोले, बाबा अगर आप प्याज खाओगे तो मैं भी ज़रूर खाऊंगा। तभी दोनों ने प्याज खाए। तभी कुछ भक्त द्वारकामाई आये तो बाबा ने हंसी करते हुए कहा, यह ब्राह्मण, एकादशी के दिन प्याज खा रहा है। अरे हम दोनों ने ही प्याज खाये हैं, कुशा ने उत्तर दिया। 'नहीं-नहीं मैंने मीठे आलू खाये हैं' बाबा ने कहा और उल्टी कर दी। जो कुछ बाहर निकला वो आलू ही थे। यह लीला देख, कुशा भावे ने सारे आलू, प्रसाद के रूप में खा लिये। बाबा ने कुशा को मारते हुए कहा, पगले यह क्या किया।' अपने प्रति भक्त की भक्ति को देखते हुए बाबा का हृदय पिघल गया और अपना हाथ उठाते हुए, सिर पर रख आश्वासन दिया कि आज के बाद, मेरा ध्यान कर जब भी हाथों को खोलोगे तो मेरे प्रसाद के रूप में तुम्हें 'गर्म उदि' मिलेगी। यह उदि भक्तों के उद्धार हेतु भक्तों में बांट देना। पुण्य तुम्हें मिलेगा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण श्री बी.वी. नरसिम्हास्वामी जी ने देखा। बाबा श्री के आदेशानुसार उन्होंने विवाह किया और बच्चों व पोतों सभी का सुख भोगा। उन्होंने अपना जीवन एक सन्यासी की तरह जीया। कुशा भावे जी की समाधि शिवाजी पर्वत के समीप पुणे में है। भक्त वहां जाकर उनके दर्शन करके दु:खों से निजात पा लेते हैं। -क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी?

यह पूर्णतया सत्य है कि जो बाबा को नमन कर अनन्य भाव से उनकी शरण में जाता है, उसे फिर कोई साधना करने की आवश्यकता नहीं है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उसे सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

परम पूज्य श्री शिवनेशन् स्वामी बचपन से ही सांसारिक विषयों में मोह नहीं रखते थे। माता की मृत्यु पश्चात् आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति हेतु घर छोड़ 1944 में मुंबई पहुंचे। सद्गुरू की तलाश में भटकते-भटकते वे नासिक पहुंचे और मौनी बाबा से मिले और 1953 में शिरडी आये और अपने गुरू की शरण में पहुंच गये। अब शिरडी ही उनका घर था। शुरू में न खाना खाने के पैसे थे और न ही ठहरने के लिये कोई निवास। जसवंती के फूल खाकर व कहीं से एक कप चाय मिल जाने पर अपना गुज़ारा करते और भीख नहीं मांगते थे। समय के साथ बाबा श्री की कृपा से कानिफनाथ मंदिर में शरण के साथ भोजन का प्रबन्ध भी हो गया। वो मरूति मंदिर, गणेश, शनि, शंकर, अष्ट महालक्ष्मी मंदिर, द्वारकामाई, चावड़ी आदि में निष्काम भाव से सेवा करते। उस समय चावड़ी गुरूवार को ही खुलती थी। वे द्वारकामाई में प्रज्वलित धूनी का खास ध्यान रखते। स्वामी जी को संस्थान ने द्वारकामाई के साथ एक छोटा सा कमरा देकर उन्हें, जो भक्त दाक्षिणा भेजते, उन्हें प्रसाद के रूप में उदि भिजवाने का कार्य सौंप दिया और 15 रूपये प्रतिमाह भी देने शुरू कर दिये। शिरडी आने वाले भक्तों को साई बाबा की महिमा बताते और अपने स्थानों पर साई मंदिर बनवाने को प्रेरित करते। गुरू स्थान के सामने संस्थान के कार्यालय की सीढ़ियों के निकट एक छोटे से कमरे में बैठकर अन्तिम वर्षों में स्वामी जी ने बाबा का संदेश घर-घर पहुंचाया। 'ऊं साई, श्री साई, जय जय साई' तारक मंत्र को जन-जन तक पहुंचाया। हर धर्म के भक्त आदर से उन्हें स्वामी जी कहकर बुलाते थे। पूरी ज़िन्दगी वे सूती कमीज़ ही पहने रहे। सर्दियों में एक पुराना स्वेटर पहनते, भक्तों द्वारा दिये गये मंहगे शाल, स्वेटर, धोती व अन्य वस्त्र गरीबों में बांट देते। सदैव ज़मीन पर ही सोये।

हर रोज़ शाम की आरती के बाद स्वामी जी भक्तों के साथ चावड़ी में भजन करते। उनका एक भजन बहुत ही लोकप्रिय था, 'हरिद्वार, मथुरा काशी, शिरडी में सब तीर्थ समाये हैं।' स्वामी जी ने 45 वर्षों तक श्री चरणों की बड़ी लगन, विश्वास के साथ सेवा की। 12 फरवरी 1998 को वे अपने सद्गुरू के श्री-चरणों में लीन हो गये। उनकी समाधि पिम्पलवाड़ी रोड पर तीन किलोमीटर पर स्थित है। मुझे भी उनकी समाधि पर जाने का सौभाग्य मिला है।

(साभार-साई शरणम्)

-क्या ऐसी भक्ति कभी हमारी हो सकेगी?

हम ऐसी भक्ति कर सकते हैं भक्तगण, क्योंकि साई भक्ति का मार्ग सरल, सुगम और सुलभ है। साई कृपा की प्राप्ति के लिये अटल श्रद्धा व सबूरी की ज़रूरत है अगर कोई साई बाबा की ओर एक कदम बढ़ाता है तो वह उसकी ओर दस कदम बढ़ा देते हैं। हमें बाबा की भक्ति के सागर में उतरना चाहिए, उतरते ही हमें अपने जीवन की सार्थकता मिल जायेगी, स्मरण रहे- 'शिरडी का यह करूणामय जिस पर मेहरबान हो जाता है, उसके लिये इस संसार में फिर कुछ बाकी नहीं रह जाता है।' साई का कोष अनन्त है, शर्त है सिर्फ एक, आस्था सच्ची होनी चाहिए। आइये हम साई बाबा और उनके भक्तों को हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि हमें इतनी शक्ति दे, ताकि हम उनके दिखाये गये रास्ते पर पूर्ण श्रद्धा व विश्वास से चलकर अपना अन्तिम ध्येय सुगमता से प्राप्त कर सकें। बाबा ने हमें यह शरीर दिया है, उद्धार के सारे साधन, सत्संग, नाम-जाप आदि भी दिये हैं, वे हमारा उद्धार भी अवश्य करेंगे।

संकलन: साई दास योगराज मनचंदा

साई धाम गुड़गांव में गुरूपूर्णिमा पर निमन्त्रण

गुड़गांव: दिनांक 10 जुलाई 2025, बृहस्पतिवार को साई धाम, उप्पल साऊथएंड, सोना रोड, गुड़गांव में गुरू पूर्णिमा महोत्सव पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। दिनभर मंदिर में भजनों का गुणगान चलता रहेगा। सांय 7 बजे से 9:30 बजे तक साई भजन संध्या का आयोजन किया जायेगा जिसमें बंटी एंड पार्टी द्वारा भजनों का गुणगान किया जायेगा। भजनों के बाद भण्डारा प्रसाद वितरित किया जायेगा। शेज आरती से कार्यक्रम का समापन होगा।

मंदिर समिति के सदस्यों की ओर से आप सभी भक्तों से अनुरोध है कि मंदिर में आकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें।

-भीम आनन्द

साई बाबा द्वारा आत्मज्ञान की शिक्षा

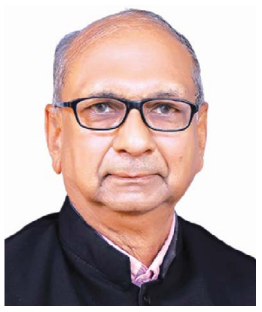

शिरडी परम भाग्यशाली है, जहां एक अमूल्य हीरा है। यह शुभ वाक्य थे पुणे तांबे के श्री गंगागीर नाम के एक प्रसिद्ध संत के जो अक्सर साई बाबा के पास शिरडी आया जाया करते थे। इसी प्रकार अक्कलकोट के एक प्रसिद्ध शिष्य संत आनंद नाथ जी जब शिरडी आए तो उन्होंने शिरडी वासियों से कहा यद्यपि बाह्य दृष्टि से यह साधारण व्यक्ति प्रतीत होते हैं, परंतु सत्य रूप में तो ये असाधारण हैं जिनका तुम लोगों को भविष्य में अनुभव होगा। नासिक ज़िले के वाणी ग्राम में काका जी वैद्य श्री सप्तश्रृंगी देवी मंदिर के मुख्य पुजारी थे। जब उनका मन अशांत हुआ तो वे श्री साई बाबा के दर्शनार्थ शिरडी पहुंचे और बाबा के दर्शन किए तो उनकी अशांति तुरंत नष्ट हो गई और वह परम शांति का अनुभव करने लगे। काका जी हमेशा के लिए बाबा के शरणागत हो गए। वीरमगाम का रहने वाला मेघा अत्यंत सीधा एवं अनपढ़ व्यक्ति था। वह दुविधा में पड़ गया कि मैं एक यवन के दर्शन ना करूं तो अच्छा है। लेकिन जब बाबा के दर्शन किए तो रोम-रोम पुलकित हो उठा। नेत्रों से अश्रु धारा बहने लगी। वही मेघा, बाबा को शिव जी का अवतार मानकर उनको बिल्व पत्र चढ़ाकर प्रतिदिन गंगाजल से स्नान कराता था। बाबा की सेवा करते-करते, बाबा के शरणागत रहते हुए वह परलोकवासी हुआ और परम धाम को प्राप्त हुआ।

उत्तरकाशी के स्वामी सोमदेव ने बाबा की कीर्ति सुनी तो उनकी इच्छा बाबा के दर्शन करने को हुई लेकिन शिरडी के नज़दीक पहुंच कर दूर से द्वारकामाई में ध्वज लहराते देख शिरडी जाने का विचार त्याग दिया। क्योंकि मन में शंका हो गई कि शिरडी के संत को इन ध्वजाओं से क्यों मोह है। जब वह वापस लौटने लगे तो उनके साथियों ने किसी प्रकार उन्हें दर्शनों के लिए राज़ी किया। जैसे ही वह द्वारकामाई में बाबा के सामने पहुंचे तो उनका मन द्रवित हो गया, आंखों में अश्रु धारा बहने लगी। वे बाबा के शरणागत हो गए और उनके परम भक्त बन गए। अर्थात बाबा एक साधारण व्यक्ति नहीं थे, तो फिर बाबा कौन थे। प्रत्येक युग में ऐसे संत महापुरुष इस धारती पर अवतरित होते रहे हैं जो आत्मा को आंतरिक यात्रा पर ले जाने में समर्थ होते हैं। ईश्वर की सत्ता किसी न किसी मानव शरीर के माध्यम से ही कार्य करती है। यह बात सही है कि मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य से ही सीखता है। संत महापुरुष इस दुनिया में इसलिए आते हैं कि वह हमारे बीच रहकर हमसे बातचीत करें, आत्मज्ञान प्राप्त करने की विधि के बारे में हमें अनुभव कराएं जीवन जीने की कला सिखाएं। केवल पढ़ने से या बातें करने से हम अध्यात्म ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। यह आत्मज्ञान तो हमें केवल एक पूर्ण सद्गुरु ही प्रदान कर सकता है। ऐसे सद्गुरु श्री साई बाबा जो इस पृथ्वी पर अवतरण लेकर लगभग 80 वर्षों तक हमारे बीच रहकर अपनी लीलाएं दिखाते रहे और कोशिश करते रहे की दुनिया का हर कोई व्यक्ति सुखपूर्वक ओर ईश्वर का स्मरण करते हुए जीवन व्यतीत करे ताकि वह भविष्य में या अगले जन्म में इन शुभ कर्मों का फल प्राप्त कर सके। बाबा ने आम नागरिक की तरह हमारे बीच रहकर हमें आत्मज्ञान का पाठ पढ़ाया। श्री साई सच्चरित्र में बाबा की इन्हीं लीलाओं का और उपदेशों का वर्णन है। शांत मन से अगर हम श्री साई सच्चरित्र का नित्य पाठ करें तो नि:संदेह हमें बाबा का सान्निध्य प्राप्त होगा, आत्मज्ञान की प्राप्ति होगी और एक सुखद आनंद की अनुभूति होगी। जिस प्रकार हेमाडपन्त जी ने बाबा की आज्ञा प्राप्त कर उनकी लीलाओं को लिपिबद्ध कर श्री साई सच्चरित्र की रचना की है, उसी प्रकार बाबा के प्रिय भक्त श्री राकेश जुनेजा जी ने भी श्री साई ज्ञानेश्वरी महाकाव्य की रचना कर बाबा के भक्तों के लिए पवित्र ग्रंथ प्रस्तुत किया है। निश्चय ही समाज में बाबा के भक्तों को आध्यात्मिक क्षेत्र में एक नई राह मिलेगी तथा भक्तगण आत्मसाक्षरता की ओर प्रेरित होंगे। **-एस.पी. अग्रवाल** ऋषिकेश

पिछले अंक से आगे...

साई के चरण कमलों में
डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी- साई धाम की यात्रा

साई धाम की स्थापना 1988 में 'शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसाइटी' के नाम से की गयी। इसके संस्थापक का मुख्य उद्देश्य बाबा के उपदेशों को जनमानस में फैलाना, गरीब वंचितों का उद्धार करना और उनके सामाजिक और आर्थिक स्तर को ऊपर उठाना था। इस उद्देश्य से साई धाम की यात्रा शुरू हुई।

इस संस्थान के उद्देश्य को स्थापित करने के बाद डॉ. गुप्ता को अब यह तय करना था कि वे किस विधि से तथा किन साधनों से अपने इस सपने को साकार कर पायेंगे। प्रारंभ में इस संस्थान ने, जिसके सदस्य थे डॉ. मोतीलाल गुप्ता, श्रीमती कान्ता गुप्ता, उनके कुछ रिश्तेदार, मित्रगण तथा कुछ कर्मचारी, विभिन्न प्रकार से गरीबों एवं ज़रूरतमंदों की सेवा शुरू की। 54 साल की उम्र में डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने अपने पुण्य ध्येय की प्राप्ति के लिये अपना व्यवसायिक जीवन त्याग दिया। प्रारम्भिक दिनों में डॉ. गुप्ता ने अपनी संचित आय का बड़ी उदारता से संस्थान के कार्यवाही के लिये उपयोग किया। भाग्यवश उनके पुत्र संदीप गुप्ता ने अपने स्वयं का कारोबार प्रारंभ किया और अपनी कुशलता से व्यापार में सफलता प्राप्त की। इस तरह अब डॉ. गुप्ता ने अपना संपूर्ण ध्यान साई धाम पर लगा दिया क्योंकि घर का उत्तरदायित्व उनके पुत्र द्वारा संचालित होने लगा। साई धाम के दैनिक खर्च के लिये दान से अर्जित आय को उपयोग में लाया जाने लगा। कई मित्रों और रिश्तेदारों ने भी दान दे कर सहयोग किया। इन लोगों ने अपने परिचितों से भी इस पुण्य कार्य में सहयोग करने का निवेदन किया। साई धाम में सर्वप्रथम होमियोपैथिक डिस्पेंसरी का संचालन प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में डॉ. गुप्ता संस्थान के मुख्य गेट के बाहर एक टेबल लगाकर रोगियों का उपचार किया करते थे। वे ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाते थे जिसमें अन्य होमियोपैथिक डॉक्टरों को भी भाग लेने का निवेदन किया जाता था। जैसे-जैसे गरीब वंचित लोग इस मुफ्त उपचार से लाभ उठाने लगे, वैसे-वैसे गुरू जी की डिस्पेंसरी की लोकप्रियता बढ़ती गई। केवल गरीब ही नहीं बल्कि समृद्ध भी इस अद्भुत डॉक्टर से अपने उपचार के लिये आने लगे। सभी रोगियों का मुफ्त उपचार तथा उन्हें मुफ्त दवाईयाँ दी जाने लगी। कुछ लोग इस महान कार्य को देख कर विस्मित और मुग्ध हो जाते तथा साई धाम को दान देते। इस तरह गुरूजी ने अपने अनोखे उपचार से एक चुंबक की भाँति धनी और गरीब, यानि दानी व दान के पात्र, दोनों को ही साई धाम के प्रति आकर्षित किया।

संस्थान के आस-पास के जंगलों में मच्छर और कीड़े पनपते थे जिसके कारण

बाहर बैठ कर रोगियों का उपचार करना सहज नहीं था। सर्दियों में यह कार्य और भी कठिन हो जाता था। अत: यह निर्णय लिया गया कि ज़मीन के अग्रिम भाग में एक दुकान बनाई जाएगी जिसमें क्लीनिक की व्यवस्था होगी जहाँ डॉ. गुप्ता रोगियों का उपचार कर सकेंगे। वे लोग जो क्लीनिक नहीं पहुँच पाते, उनके घरों में दवा पहुँचाई जाती थी। आज तक असंख्य लोगों को गुरू जी की दवाओं से लाभ हुआ है।

करीब दस वर्षों तक डिस्पेंसरी की ज़िम्मेदारी स्वयं डॉ. गुप्ता ने खुद संभाली। साई धाम से जुड़े कुछ भक्तों ने दिल्ली और आस पास के इलाकों में क्लीनिक खोलने हेतु जगह मुहैया करवाई। डिस्पेंसरी के बारे में जानकारी की खोज के दौरान मुझे एक 12 पृष्ठ का दस्तावेज़ मिला जिसकी तारीख अक्टूबर 1999 की थी जो उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को संबोधित था तथा आगे चल कर श्रीमती सोनिया गाँधी को भी भेजा गया था। उस दस्तावेज़ में ग्रामीण क्षेत्र की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया था। डॉ. गुप्ता ने एक विस्तृत लेख तैयार किया था कि किस प्रकार होमियोपैथिक उपचार सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तथा शहरी क्षेत्र की झोपड़-पट्टियों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करने में कारगर हो सकता है। डॉ. गुप्ता के दस्तावेज़ में होमियोपैथिक कॉलेज खोलने का सुझाव, साथ ही शिक्षकों को प्राथमिक होमियोपैथिक चिकित्सा की ट्रेनिंग और गाड़ियों में चलती-फिरती होमियोपैथिक डिस्पेंसरी के संचालन का सुझाव भी दिया। मूल्य-लाभ विश्लेषण भी पेश किया गया जिसमें यह साबित किया गया कि होमियोपैथिक उपचार सस्ता होने के कारण गरीबों को आर्थिक लाभ भी पहुँचेगा एवं राज्य का भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्थिक बोझ कम होगा। उनके कई सुझावों को सरकार के द्वारा मान्य किया गया और उसे लागू भी किया गया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि डॉ. गुप्ता ने 'कॉम्पेंडियम ऑफ होमियोपैथिक मेडिसीन' के दो संस्करण प्रकाशित किये जिसे समाज सेवियों तथा होमियोपैथिक डॉक्टरों में बांटा गया जिससे अनेकों लोगों को लाभ पहुँचा।

डॉ. गुप्ता की दूरदर्शिता तथा उनकी योजनाओं को साकार करने की पद्धति अद्भुत है। वह हर वो कार्य को करने के लिये आतुर रहते हैं जिसमें परोपकार निहित हो। 1990 के दशक में जब साई धाम अपना प्रारूप तय कर रहा था, होमियोपैथिक उपचार की सेवा एक ऐसा कार्य था जो शुरू से ही व्यवस्थित तौर पर किया जा रहा था। एक अन्य गतिविधि जो नियमित तौर पर की जाती थी, वह थी गरीबों को दंत चिकित्सा उपलब्ध कराने की। संस्थान की अन्य गतिविधियों में शामिल था- वस्त्र और कंबल वितरण, गरीबों को चिकित्सा के लिये आर्थिक मदद, विकलांगों को आर्थिक सहायता ताकि वे स्वावलंबी बन सकें, वंचित गरीब छात्रों को किताबें और लेखन सामग्री मुहैया कराना तथा ऐसे ही अनेक प्रकार के अन्य कार्य।

नई सहस्राब्दी के नए सवेरे से साई धाम की गतिविधियाँ बढ़ने लगीं। साई धाम की विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा अब स्थापित हो चुकी थी। तब डॉ. गुप्ता ने योजना-बद्ध तरीके से परोपकारी कार्यों को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया। अब समय था इस संस्थान को एक मूर्त्त रूप देने का और एक प्रबल संगठन के तौर पर स्थापित करने का। डॉ. गुप्ता ने सोचने पर बल दिया कि ये सब कार्य किस तरह से संपादित किया जाए ताकि वंचितों को लंबे समय तक लाभ मिल सके और उनके जीवन का स्तर स्थायी रूप से बेहतर बनाया जा सके। गुरू जी की व्यस्तता संगठन के कार्यों में बढ़ने लगी जिससे उन्हें डिस्पेंसरी चलाने के लिये समय नहीं मिल पा रहा था। इस कारण वश 1 जनवरी 2000 के दिन साई धाम डिस्पेंसरी को चलाने के लिये एक योग्य होमियोपैथिक डॉक्टर की नियुक्ति की गई।

डॉ. गुप्ता गरीबों को केवल चिकित्सा, भोजन, वस्त्र और आर्थिक सहायता देने से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने देश की गरीब आबादी की समस्याओं को बहुत गहराई से समझा। वह व्यग्र थे, एक ऐसे परिवर्तन के लिये जिससे गरीब नागरिक अपनी देखभाल के लिये सरकार पर निर्भर न रहें अथवा स्वावलम्बी बनें। इस तरह के परिवर्तन के लिये उनकी व्यग्रता विगत 35 वर्षों से बढ़ती ही चली जा रही है। क्रमश:

हिंदी अनुवाद: **डा. नीरजा प्रसाद**

आभार: साई के चरण कमलों में

हिमालय की चोटी पर लहराया साई ध्वज

महाराष्ट्र: महाराष्ट्र की पुलिस इंस्पैक्टर श्रीमती द्वारका दोखे जी ने बाबा को हिमालय की सबसे ऊंची चोटी, लोटसे जो 8516 मीटर ऊंची है, पर बाबा का ध्वज फहरा कर बाबा को हिमालय की चोटी

पर पहुंचा दिया। इंस्पैक्टर द्वारका दोखे ने कहा कि ये तो हम सब जानते हैं कि साई बाबा देश-विदेश सब जगह हैं लेकिन अब पहली बार बाबा हिमालय की चोटी पर भी पहुंच गये हैं। उनका कहना है कि ये कार्य बहुत कठिन था लेकिन बाबा ने ही उन्हें यह साहसिक कार्य करने की शक्ति दी।

जब वे शिरडी में साई बाबा के दर्शन करने आई तो शिरडी साई बाबा संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने उन्हें सम्मानित किया और कहा कि यह कार्य बहुत साहस का था जो श्रीमती द्वारका दोखे जी ने किया जो सभी साई भक्तों के लिए बड़े गर्व की बात है।

संगीता ग्रोवर की नयी रचनाऐं

कहते हैं जब आप में कुछ करने की लगन होती है, प्रभु भी रास्ते बनाते हैं। परासनातन और संगीत की शिक्षा मैंने शादी के बाद की। शादी तो बी.कॉम करते हो गई। संगीत का शौक बचपन से था।

पर आज ये मेरी पहचान बनेगा ये नहीं सोचा था। कई बड़ी कम्पनियों से मेरे गाए भजन व गीत आते हैं, कई एलबम हैं। बीते कई वर्षों से ये भजन गीत मैं स्वयं लिखती, कम्पोज़ करती और गाती हूं। रेडियो स्टेशन दिल्ली और दूरदर्शन में समय-समय पर मेरे गाए गीत, भजनों की प्रस्तुतियां होती हैं। इसके अतिरिक्त लाइव प्रोग्राम जैसे भजन, लाइट म्यूज़िक गज़ल

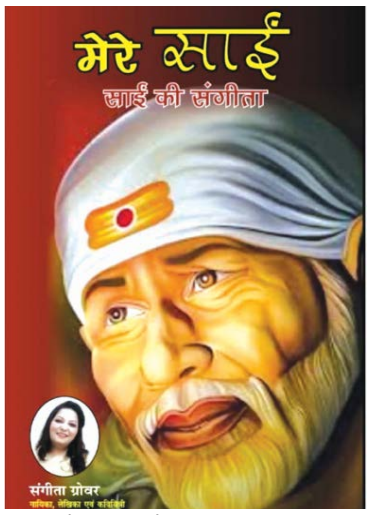

आदि के लाइव प्रोग्राम भी करती हूं। इसी दौरान एक सीरियल में एक्टिंग करने का मौका मिला। जो दूरदर्शन पर प्रस्तुत हुआ। मेरे द्वारा लिखी काव्य रचनाएं 'तन्हाइयां' और 'प्रहार' को पाठकों का समर्थन मिला। इसके अतिरिक्त कई पत्रिकाओं, अखबारों के लिए लेख, कविताएं लिखती हूं। प्रभु ने शायरी का शौक दिया है जो लोगों द्वारा पसंद की जा रही है। अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़ी हूं। ज़िन्दगी के अच्छे बुरे अनुभवों से जो सीखा या सीख रही हूं। उसके द्वारा लोगों को मोटिवेट करती हूं। कई बार जब हम बुरे वक्त से गुज़रते हैं तो वो हमें बहुत कुछ अच्छा सिखा कर जाता है। यह सब तभी मुमकिन हुआ। कुछ लगन, कुछ शौक, कुछ हालात। प्रभु की असीम कृपा से अब मैंने दो और काव्य रचनाएं लिखी है। 'एहसास ए दिल' और 'मेरे साई' साई की संगीता।

'एहसास ए दिल' में मैंने कुछ खट्टे, कुछ मीठे अनुभवों को कविताओं की तरह रचित किया है। आशा करती हूं इस बार भी आप इनको अपना प्रोत्साहन और प्यार देंगे।

'मेरे साई' साई की संगीता, में बाबा की कृपा, दया, करूणा क्या-क्या लिखूं कम है। कविताओं में पिरोने की कोशिश की है।

मैं अपने प्रभु को शुकराना करती हूं। शुक्रगुज़ार हूं अपने गीत, भजन सुनने वालों का और मेरी काव्य रचनाओं को अपना प्यार, प्रोत्साहन देने वाले पाठकों का। आपकी प्रतिक्रिया के इंतज़ार रहेगा। **-संगीता ग्रोवर**

सैनी एन्क्लेव में कैंसर जांच शिविर

दिल्ली: पूर्वी दिल्ली की सैनी एन्क्लेव सोसाइटी में मानव कल्याण सेवा समिति के सहयोग से इंडियन कैंसर सोसाइटी ने नि:शुल्क प्रारंभिक अवस्था कैंसर जांच शिविर आयोजित किया। शिविर में 49

लोगों ने कैंसर की जांच कराई। जिसमें 13 महिलाएं और 26 पुरूष शामिल रहे। शिविर में खून की जांच, उच्च रक्तचाप,

आंख, कान, नाक, गला और शरीर के अन्य हिस्सों की जांच की गई। इसके साथ ही मोबाइल वैन में 40 साल से अधिक उम्र की महिलाओं की मैमोग्राफी और सीने के एक्सरे किए गए। इस दौरान डॉ. सूसन डेक्स, डॉ. सुनीता बादना और सर्जन उमेश भटनागर ने लोगों को कैंसर के प्रति जागरूक किया। **-ओ.पी. कपूर**

श्रद्धालय धाम में निर्जला एकादशी

दिल्ली: दिनांक 6 जून 2025 को श्रद्धालय धाम मंदिर, महादेव चौक, सैक्टर-30, रोहिणी में निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर मीठे जल का वितरण किया गया। इस भीष्म गर्मी में सड़क पर आने जाने वाले लोगों को मीठा शर्बत पिलाया गया।

इसके अतिरिक्त दिनांक 5 जून 2025 को श्रद्धालय धाम मंदिर में साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जहां भजनों के गुणगान के लिए सेवा फाउंडेशन के साईदास अंकित अरोड़ा जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने मधुर स्वर में अनेक भजनों का गुणगान किया। अंत में आरती की गई। उसके बाद सभी भक्तों के लिए भंडारे प्रसाद का आयोजन किया गया।

श्रद्धालय धाम मंदिर में मंदिर के संस्थापक पीठाधीश्वर आचार्य श्री श्रवण जी महाराज द्वारा समय-समय पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

-जी.आर. नंदा

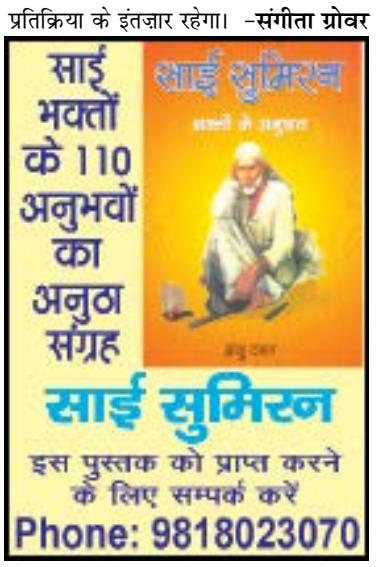

मीनू सचदेवा के भजनों पर झूमें लखनऊ में भक्त

लखनऊः दिनांक 7 जून 2025 को साई आश्रम ट्रस्ट द्वारा पालकी यात्रा 2025 के पूर्व एक भजन संध्या का आयोजन जे.सी. गेस्ट हाऊस निराला, लखनऊ में किया गया। आरती के उपरांत साई की मीरा मीनू सचदेवा जी ने अपनी मधुर आवाज़ में भजनों का गुणगान आरंभ किया। मीनू जी ने एक के बाद एक अनेक मनभावन भजन सुनाकर भक्तों को साई भक्ति में सराबोर कर दिया। देर रात तक भजनों का गुणगान चलता रहा और भक्तगण उनके भजनों का आनंद लेते रहे। आमंत्रित साई भक्त सर्वश्री शैलेन्द्र सिंह अटल, प्रदीप के श्रीवास्तव, इन्द्रेश सिंह, शिवराम त्रिपाठी, दानवीर सिंह, राजेश पटेल, मनमोहन रत्नेश मिश्रा, अनिल सोनकर, हरीश सनवाल, मनोज पुजारी बाबा, बीनू शुक्ला, संध्या मिश्रा, सुनीता दीक्षित, कुमकुम गुप्ता, हेमा बिष्ट, मीना पांडे, रीता पंत, अंजली निगम, सुधा गुप्ता, गायत्री जायसवाल, सुधा कुदेशिया, बिमला जी आदि को संजय मिश्रा जी ने साई बाबा का पटका पहना कर सम्मानित किया। उसके बाद 17 अगस्त 2025 को शिरडी यात्रा की जानकारी सभी भक्तों को दी गई। कार्यक्रम के अंत में बाबा को भोग लगाकर सबको भंडारा प्रसाद वितरित किया गया।

–गायत्री जैसवाल

साई कुटुंब द्वारा सामूहिक साई स्नान

हरिद्वारः दिनांक 1 जून 2025 को प्रत्येक वर्ष की भांति साई कुटुंब द्वारा गोविंदघाट, गोविंदपुरी, हरिद्वार में प्रातः 10:30 बजे सामूहिक साई स्नान का आयोजन किया गया। बहुत से साई भक्त बाबा की छोटी-छोटी साई प्रतिमाओं के संग प्रातः 10 बजे विशाल ऑप्टिकल्स रानीपुर मोड़, हरिद्वार में एकत्रित हुए और वहां से सभी भक्त ढोल, नगाड़े व बाजों के साथ अपनी-अपनी साई प्रतिमाओं को लेकर गोविंदघाट, गोविंदपुरी रानीपुर मोड़ हरिद्वार पहुंचे। सबने साई बाबा की प्रतिमाओं को सामूहिक रूप से गंगा स्नान करवाया और सभी ने स्वयं भी साई बाबा के साथ गंगा स्नान किया तथा गंगा मैया, साई बाबा तथा भोलेनाथ जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी साई भक्तों को यह एहसास हो रहा था जैसे साई बाबा हमारे साथ स्वयं स्नान कर रहे हो।

दूर-दूर के शहरों से भी कई साई भक्त इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए हरिद्वार पंहुचे। मुज़्ज़फरनगर से अरुण खोसला जी तथा श्रीमती निधि खोसला जी, देहरादून से साई भक्त पेटवाल जी, माला राव जी, सपनावत से साई शिशोदिया जी कई भक्तों के साथ और अन्य कई भक्त इस साई स्नान में सम्मिलित हुए। सभी भक्तों ने मिलकर साई आरती की और उसके पश्चात सबको भंडारा वितरित किया गया।

साई कुटुंब की अध्यक्ष श्रीमती पूनम कपिल जी ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए सबका आभार व्यक्त किया और साई कुटुंब के सभी सदस्यों के योगदान के लिए उनकी सराहना की। उन्होंने सबके लिए कामना करते हुए साई बाबा से दुआ की कि हे साई, भक्तों पर अपना आशीर्वाद का हाथ सदैव बनाये रखना और अपनी संतान की तरह सबका पालन करना। **–राज मल्होत्रा, उत्तराखंड**

Venus, Zee & World fame
Contact For:
Sai Bhajans

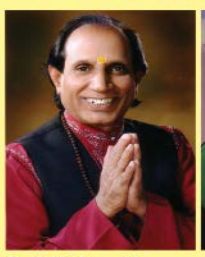

Brij Mohan Naagar Parveen Mudgal
Ph: 9891747701, 9958634815

साई शक्ति

सभी साई भक्तों को संगीता ग्रोवर का साई राम। साई एक शक्ति, भक्ति, सखा, बंधु सभी कुछ तो हैं। मानों तो सब कुछ बाबा हैं। दुनिया के रिश्ते पल भर को साथ छोड़ सकते हैं पर साई अपने हर रिश्ते को अंत तक निभाते हैं। बाबा ने हमेशा सरल शब्दों में जन कल्याण का संदेश दिया है। स्वयं भिक्षा मांगी और भक्तों को भर-भर कर दिया है। किसलिए? ताकि हम सब भी देना सीखें और मानव कल्याण करें। दान, धन, खाना तो हम देते हैं क्या कभी किसी के पास बैठकर उसकी मुश्किल का पूछा है। कहते हैं प्यार के सांत्वना के दो बोल परेशान इंसान के जीवन में नवजीवन भर देते हैं। साई को लेकर लोग भ्रांतियां भी कहते हैं। वो इसलिए क्योंकि बाबा की कथनी और करनी में कोई भेद नहीं है। साई ने जो कहा वो किया, निःस्वार्थ किया। अपने बच्चों को हर पल सही रास्ता दिखाया। यूं ही तो नहीं उसके दरबार में लाखों की भीड़ है। सब जानते हैं हमारा हमदर्द है यहां और वो हैं मेरे साई। साई भक्तों को भी बाबा की कही बातों, वचनों का पालन करते हुए जीवन निर्वाह करना चाहिए और शुरूआत खुद से ही करनी चाहिए।

श्रद्धा सबूरी से जो साई को ध्यायेगा,
मेरा साई पल-पल उसके रास्ते बनाएगा।

–संगीता ग्रोवर
गायिका, लेखिका, कवियत्री

शिरडी डायरी

श्रीगणेश श्रीकृष्ण खापर्डे ने शिरडी में अपनी दिनचर्या डायरी में लिखी। प्रस्तुत हैं उसी डायरी से कुछ अंशः

22 जनवरी 1912: मैं सुबह जल्दी उठ गया और प्रार्थना की। हमने साई महाराज के बाहर जाते हुए और फिर से उनके लौटने के बाद दर्शन किए। पूजा के समय उन्होंने दो फूल अपनी नासिकाओं के अंदर डाल लिए और दो अपने कानों और सिर के बीच डाले। माधवराव देशपांडे के द्वारा मेरा ध्यान इस ओर खींचा गया। मैंने इसे एक प्रकार का निर्देश समझा। साईबाबा ने वही चीज़ फिर दोहराई और दूसरी बार मैंने अपने दिमाग में इसके अर्थ का अनुमान लगाया तो उन्होंने अपनी चिलम मेरी ओर बढ़ा दी और इससे मुझे यकीन हो गया। उन्होंने कुछ कहा जो मैंने तुरंत सुना और विशेषकर याद रखने का प्रयास किया, लेकिन वह मेरे दिमाग से बिल्कुल निकल गया और दिनभर मैंने भरसक प्रयास किया लेकिन याद नहीं कर सका। मैं बहुत ही हैरान हूं क्योंकि ये इस तरह का पहला अनुभव है। साईबाबा ने यह भी कहा कि उनकी आज्ञा सर्वोपरि है, जिसका मैंने ये अर्थ लिया कि मुझे अपने बेटे के स्वास्थ्य के बारे में परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब तक दोपहर की आरती समाप्त हुई और हम लौटे, मैंने श्रीमती लक्ष्मीबाई कौजलगी (स्थानीय रूप से जो मौसीबाई के नाम से जानी जाती हैं) को अपने डेरे के सामने खड़े हुए पाया। मेरे जाते ही वे मस्जिद पहुंची और साई महाराज को प्रणाम किया। बाबा ने उन्हें तब पूजा करने देकर उन पर विशेष अनुग्रह किया। खाने के बाद मैं कुछ देर लेटा और दीक्षित ने रामायण का पाठ किया और नाथ महाराज की कोई गाथा पढ़ी। उपासनी भी उपस्थित थे और श्रीमती लक्ष्मीबाई कौजलगी भी कक्षा में सम्मिलित हुई। उन्होंने चर्चा में भाग लिया और ऐसा लगता है कि उन्हें वेदांत की अच्छी जानकारी है। हमने साईबाबा के शाम की सैर के समय दर्शन किए और बाद में शेज आरती पर। लक्ष्मीबाई ने कुछ गीत गाए। वे राधाकृष्णा बाई की मौसी हैं। रात को मेरे अनुरोध पर उन्होंने कुछ भजन किए और दीक्षित ने रामायण पढ़ी।

For Daily Shirdi Darshan, Experiences of Sai Devotees & Latest News
Subscribe and Like Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times
https://youtube.com/@shrisaisumirantimes3022

श्री साई श्रद्धा संस्थान बक्सर में साई पालकी भण्डारा व भजन

बिहारः श्री साई श्रद्धा संस्थान, बक्सर के तत्वावधान में दिनांक 30 जून 2025, सोमवार को साई बाबा मंदिर सतीघाट, बक्सर के वार्षिक पूजनोत्सव एवं स्थापना समारोह के अवसर पर पालकी, विशाल साई भजन संध्या एवं भव्य भंडारे का आयोजन किया गया। प्रातः 6 बजे से विशेष वार्षिक पूजा एवं पूर्णाहुति हवन किया गया। तत्पश्चात् 11:30 बजे साई बाबा की पालकी निकाली गई। बहुत से भक्त बैंड-बाजे के साथ नाचते हुए पालकी के साथ-साथ चले। जहां-जहां से पालकी निकली वहां का वातावरण साईमय हो गया। बाबा की पालकी विभिन्न स्थानों से होते हुए पुनः मंदिर पहुंची। दोपहर 2 बजे सभी भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। हज़ारों भक्तों ने बाबा का प्रसाद ग्रहण किया। सांय 7 बजे साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश तथा बिहार के नामचीन कलाकारों द्वारा साई भजनों का गुणगान किया गया। देर रात तक भजनों का गुणगान चलता रहा। वहां पर आए सभी भक्तों ने भजनों का आनन्द लिया।

कार्यक्रम का आयोजन साई भक्त परिवार श्री साई श्रद्धा संस्थान, बक्सर के सदस्यों द्वारा किया गया। **–बलराम गुप्ता,** बक्सर

सिद्धपीठ सारसौल साई मंदिर पर लगाई गई मीठे शरबत की प्याऊ

अलीगढ़: माता गंगा के अवतरण दिवस को अलीगढ़ में पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया इतना ही नहीं दान पुण्य के इस महापर्व पर जगह-जगह लोगों ने शीतल जल और शरबत की प्याऊ लगवाई। इसी श्रृंखला में अलीगढ़ के सिद्धपीठ साई मंदिर जी.टी. रोड सारसौल पर भी गंगा दशहरा के पर्व पर भक्तों को ठंडे और मीठे शरबत का वितरण किया गया। खास बात ये है कि गंगा दशहरा का पर्व गुरुवार को था और इस दिन साई मंदिर में भी भक्तों की भीड़ रहती है और इस भीषण गर्मी के मौसम में सभी साई भक्तों ने और राहगीरों ने शरबत पीकर काफी तृप्ति का अनुभव किया और मंदिर कमेटी के लोगों का आभार जताया। वहीं दूसरी तरफ मंदिर कमेटी के संस्थापक अध्यक्ष श्री धर्म प्रकाश अग्रवाल जी ने इस आशय की विस्तृत जानकारी दी और उन्होंने मंदिर के आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा के विषय में भी बताया। इस कार्यक्रम में आचार्य रमेश अवस्थी, रमेश चंद्र अग्रवाल, राजा राजानी, धर्म प्रकाश अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल, रवि प्रकाश अग्रवाल, राजीव जैन, रोहित कोचर और संदीप सागर का विशेष सहयोग रहा।

ज़ीरा में कोहली परिवार द्वारा साई भजन

पंजाबः दिनांक 11 जून 2025 को फिरोज़पुर, पंजाब में कुलदीप कोहली और पिंकी कोहली जी ने अपने निवास स्थान पर अपनी 30वीं सालगिरह पर साई कीर्तन करवाया। इस अवसर पर उन्होंने अपने सभी रिश्तेदारों व शहर निवासियों को आमंत्रित किया। भजनों का गुणगान साई महिला परिवार ज़ीरा की तरफ से धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर भजनों का प्रारम्भ शरणजीत कौर साई दीदी के द्वारा किया गया। पिंकी जी के परिवार ने जोत जगाकर उनके पूरे परिवार, उनके बेटे प्रिंस और शिवानी ने अरदास की और कीर्तन शुरू हुआ। साई महिला परिवार के अन्य सदस्य, रेणु धुना, सुमन सिदौड़ा, किरण चोपड़ा, सोनिया अरोड़ा, सिंपल अरोड़ा, रूपम जुनेजा, किरण जुनेजा, मधु शर्मा, वंदना बांसल, नम्रता मुंजाल और सोनिया कोछड़ आदि ने भी बहुत सुंदर भजन गाकर साई बाबा का गुणगान किया। साई दीदी जी ने एक फकीरा आया शिरडी गांव में भजन इतना अच्छा सुनाया जिसे सुन सभी प्रसन्न हो गये। सभी भक्तों ने नाच गाकर बहुत आनन्द से झूम कर साई बाबा का गुणगान किया। सभी तरफ साई बाबा के जयकारे गूंज रहे थे। सारा माहौल साईमय हो गया। अन्त में सुमन जी ने बधाई गायी और सबने फूलों की वर्षा की। आरती के साथ कीर्तन की समाप्ति की गई। पिंकी जी के घर में तरह-तरह के व्यंजन तथा पकवान वितरण किये गए। पिंकी जी ने केक काटने की रस्म की तो बच्चे भी बहुत खुश हुए। पिंकी जी ने साई दीदी जी के साथ मिलकर केक काटा। सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। पिंकी जी ने सारे साई महिला परिवार का दिल से धन्यवाद किया। **–रेणु धुना,** ज़ीरा, पंजाब

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें- Ph: 9818023070

कंडक्टर के अदृश्य होने की लीला

1984 की बात है, वह अनंत चतुर्दशी का शुभ दिन था। आई के घर पर शाम की दैनिक आरती हो रही थी और काफी भक्त उसमें एकत्र थे। उनमें नियमित रूप से आने वाला एक व्यक्ति था नारायण, जिसकी लोकल बस कलंगुटे और पंजिम के बीच चला करती थी। नारायण बाबा का अत्यंत भक्त था। उस शाम, आरती के दौरान नारायण ने खूब खुल कर गाया, जैसा कि वह हमेशा गाया करता था। आरती पूरी हो जाने, प्रसाद ग्रहण करने और बाबा का आशीर्वाद लेने के बाद लोग जाने लगे। नारायण मास्टरजी के साथ बैठकर यूं ही बातें कर रहा था कि अचानक आई उसके पास आई और पूछा, 'नारायण, तुम्हारी बस कहां है? आज बाबा के मुख मंडल पर चिंता के भाव झलक रहे हैं।' नारायण ने तुरंत बाबा की मूर्ति की ओर देखा और उसे भी सहजता के वही भाव नज़र आए।

कुछ ही मिनट बाद एक आदमी दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा और बड़ी उद्विग्नता से नारायण के बारे में पूछने लगा। वह बहुत घबराया हुआ था। नारायण को देखते ही वह बोला, 'कुछ उपद्रवी पैसेंजरों का कंडक्टर के साथ झगड़ा हो गया है और उनमें काफी हाथापाई भी हुई है। हमने बस को समुद्र तट के किनारे बस स्टैंड के पास खड़ा कर दिया है। तुम तुरंत मेरे साथ चलो। वे लोग बस को ढूंढ रहे हैं। जब हम कंडोलियम से गुज़रेंगे तो वहां वे हमारे इंतज़ार में खड़े मिलेंगे।'

नारायण ने जल्दी-जल्दी आई और बाबा का आशीर्वाद लिया और झगड़े को सुलझाने व शांत कराने के लिए वहां से चल पड़ा। वह ड्राइवर और कंडक्टर के साथ बस पर सवार हो गया।

चूंकि वह एक उत्सव का दिन था इसलिए वहां ऐसे बहुत लोग थे जो गणेश विसर्जन के लिए आए हुए थे। बस को बहुत धीमे चलाना पड़ रहा था। लोग बस में चढ़ और उतर रहे थे लेकिन कोई परेशानी नहीं थी। पंजिम से कलंगुटे तो वे आसानी से पहुंच गए लेकिन कंडोलिम में भीड़ के एक जमघट ने उन्हें रोक लिया। वे लोग कुछ देर पहले हुई घटना के कारण रोष और आवेश में थे और उस कंडक्टर की तलाश में थे। वे उसकी पिटाई करना चाहते थे। (लिखित पत्र में वह तो साफ तौर पर नहीं बताया गया है कि झगड़ा दरअसल किस बात पर हुआ था, लेकिन यह साफ था कि बात कुछ गंभीर थी।)

जल्दी ही उन्होंने बड़े-बड़े पत्थर बस के चारों तरफ लगा दिए ताकि उसे वहां से भगा कर न ले जाया जा सके। एक क्रुद्ध भीड़ ने बस को चारों तरफ से घेर लिया और कंडक्टर को ढूंढने लगे। नारायण ने बीच-बचाव करने के लिए कहा, 'हुआ क्या? यह तो मुझे बताओ।'

भीड़ का गुस्सा सातवें आसमान पर था और वह कोई बात करने या कुछ समझने-समझाने के लिए तैयार नहीं थे। वे चीख रहे थे, चिल्ला रहे थे और फिर उन्होंने बस के अंदर घुसने के लिए बस पर हाथ मारने शुरू कर दिए। भड़की हुई भीड़ चिल्ला रही थी, 'कहां है वो कमीना कंडक्टर? उसे अभी हमारे हवाले करो।'

नारायण को अपनी भी जान खतरे में नज़र आने लगी थी क्योंकि भीड़ कभी भी वाकई हिंसक हो सकती थी। वह जानता था कि लोग कंडक्टर पर हमला करना चाहते हैं और उसे मारना चाहते हैं। उसे अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास था क्योंकि वह उसका कर्मचारी था। इसलिए उसने हृदय से बाबा को एक मौन संदेश भेजा, 'बाबा, अब तो केवल तुम ही हमें बचा सकते हो'

कुछ और लोग भी आकर उस भीड़ में शामिल हो गए थे और उनकी संख्या अब 25 से अधिक हो गई थी। बस के दरवाज़े को लोगों ने खींच-खींच कर खोल लिया और कुछ लोग बस में घुस आए और सीधे ड्राइवर के केबिन तक जा पहुंचे जिसमें ड्राइवर, नारायण और वह कंडक्टर तीनों बैठे हुए थे। वे चिल्ला-चिल्ला कर पूछ रहे थे, 'कंडक्टर कहां है?' नारायण के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था। डर के मारे वह कांप रहा था।

फिर जो हुआ वह सचमुच चमत्कार था। कंडक्टर जो कि नारायण के ठीक बराबर में ही बैठा हुआ था, वह भीड़ के लिए अदृश्य हो गया। 25 जोड़ी आंखें उसको ढूंढ रही थीं लेकिन एक भी आंख उसे देख नहीं पा रही थी, हालांकि उस दौरान पूरे समय वह नारायण के बराबर में ही बैठा हुआ था। भीड़ ने पूरी बस में अच्छी तरह ढूंढा लेकिन कंडक्टर उन्हें कहीं दिखाई नहीं दिया। नारायण समझ गया था कि यह बाबा की ही दिव्य लीला थी। उनमें से कुछ लोग बस से उतर गए तो कुछ और लोग उसे ढूंढने के लिए चढ़ आए लेकिन उनको भी कंडक्टर दिखाई नहीं पड़ा।

'बाबा सचमुच दिव्य जादूगर हैं,' नारायण ने मन ही मन कहा। भीड़ इतनी गुस्से में थी कि कंडक्टर को शायद ज़िंदा नहीं छोड़ती और शायद बस में भी आग लगा देती। कुपित भीड़ जब चली गई तो नारायण ने तुरंत पुलिस स्टेशन जाकर औपचारिक शिकायत दर्ज कराई। फिर वह बाबा के मंदिर आया और उनके चरणों में गिर पड़ा। **-निखिल कृपलानी**

आभार: साई बाबा और आई

ज्वालापुर में निर्जला एकादशी

ज्वालापुर: दिनांक 6 जून 2025 को साई मन्दिर, ज्वालापुर में निर्जला एकादशी के शुभअवसर पर साई मन्दिर कमेटी के

सदस्यों ने सुबह आठ बजे ठंडे शरबत की छबील लगायी। साई भक्तों द्वारा शरबत का वितरण किया गया। दीपक साई जी ने स्वयं बड़े-बड़े ड्रम में जल भरने के पश्चात उसमें बर्फ, चीनी व शरबत डालकर मीठा जल तैयार किया। इस काम में उनका सहयोग श्री त्यागी जी तथा श्री तीर्थ भाटिया जी ने किया। हज़ारों राहगीरों ने ठंडा शरबत पीकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। बाबा की प्रेरणा से ज्वालापुर साई मंदिर की मुख्य सड़क पर स्टाल लगाकर बड़ों के साथ साथ छोटे-छोटे बच्चे भी शरबत का वितरण कर रहे थे। गंगा मैया, भोलेनाथ जी तथा साई बाबा का आशीर्वाद शरबत के स्टाल लगाने वाले सभी साई भक्तों को सदा मिलता रहे। **-राज मल्होत्रा,** हरिद्वार

बौर से लदे आम्र वृक्ष

एक समय जब दामू अण्णा बाबा की पद सेवा में लीन थे, यकायक उनके मन में प्रश्न उभरा और वे सोचने लगे जन समुदाय जो शिरडी आता है साई के दर्शन

करने के लिए उन सभी की इच्छायें यहां पूर्ण हो जाती हैं? अन्तर्यामी साई बाबा दामू का मनोभाव भाप गये और बोले दामू, बौर से लदे आम्र वृक्ष को देखो, पूरे वृक्ष पर इतनी बौर है कि पत्ते भी नहीं दिखाई देते, यदि डालियों के सभी बोर फल बन जायें तो कल्पना करो कितने आम बन जायेंगें। हकीकत में ऐसा होना संभव नहीं। क्योंकि रोज़ बहुत सारे बौर झर-झर कर ज़मीन पर गिर जाते हैं। जो फलते हैं उनमें से बहुत से आंधी में झर जाते हैं, कुछ पक्षी कुतरते हैं तो कुछ बालक पत्थर मार कर गिरा लेते हैं। किसान और राहगीर भी तोड़ लेते हैं बहुत से आम। तो अल्पमात्र में आम पककर तैयार होते हैं। इसी प्रकार जो भीड़ मेरे दर्शानार्थ आती है उनमें से बहुत से बह जाते हैं बेसब्री की आंधी में। कुछ शिरडी से वापस जाते ही श्रद्धा के अभाव में टूट जाते हैं। जो भक्तगण सुकर्म पथ पर चलते हुए मुझ में श्रद्धा और सबूरी संजोये रखते हैं और किसी विशेष कार्य हेतु याचना करते हुए मेरे सामने गिड़गिड़ाते हैं तो मैं उनसे कहता हूं कि जाओ अल्लाह भला करेगा। समझो की तिथि निश्चित, उनकी इच्छायें पूरी होंगी। ज़रूरत है सच्चे मन से श्रद्धा सबूरी की। ओम साई राम।

-रूपलाल आहूजा

साई धाम बनास का वार्षिकोत्सव

सिरोही: दिनांक 2 जून 2025 को साई धाम बनास का 11वां वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रदीप पालीवाल जी ने बताया कि सुबह अभिषेक, ध्वजारोहण और बाबा रामदेवजी की पूजा के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। उसके बाद नर्मदेश्वर महादेव, बजरंगबली, गणेश जी, राधा-कृष्ण, अंबे माताजी और राम दरबार की पूजा की गयी। सभी शुभ कार्य बाबा की पूजा-अर्चना के साथ पूरे किए गये। भव्य आरती के बाद प्रसाद वितरित किया गया। सिरोही ज़िले के हाईवे पर स्थित बनास का यह मंदिर सबसे विशाल माना जाता है। यहां संघ और भक्तों के रूकने की भी व्यवस्था है और समय-समय पर भंडारे का आयोजन होता है।

जब अपनों ने किया किनारा फिर गुरुजी बने सहारा

मेरा नाम भगवती देवी है। मैं दिल्ली कुंदन नगर की रहने वाली हूं। कहने को तो मेरे चार बेटे और एक बेटी है, मगर बुढ़ापे में अपने कर्मों की कुछ ऐसी मार पड़ी कि पहले मेरे पतिदेव भगवान को प्यारे हो गए। फिर एक बेटा भी भगवान को प्यारा हो गया। बाकी तीन बेटों में से एक बेटा अपनी बीवी और बच्चों को लेकर अलग हो गया और बाकी दो बेटे इसी मकान में रहते हैं जहां मैं रहती हूं। मगर उनका मुझे कोई सहारा नहीं, वह अपनी गृहस्थी में मगन हैं। मेरी ओर उनका कोई ध्यान नहीं है। बुढ़ापे में अपनी दुर्दशा का मुझे सिर्फ एक ही अपनी गलती का एहसास हो रहा है वह यह है कि मैंने पति के देहांत के बाद सारी जायदाद अपनी संतान को बाँट दी जिसका खामियाज़ा मैं इस उम्र के पड़ाव में झेल रही हूं और उस कहावत को याद करती हूं कि अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत।

एक अफसर की पत्नी और चार अफसरों की माँ अपने बुढ़ापे की ज़िन्दगी नरकों जैसी व्यतीत कर रही थी, तभी एक गुरुजी श्री सुशील कुमार मेहता जी की शरण मिली उनकी शरण में आकर मेरी नरक में जा रही ज़िंदगी को स्वर्ग की राह दिखने लगी क्योंकि पहले तो गुरुजी ने मेरे रोग को ठीक किया जो कि बरसों से ठीक नहीं हो रहा था। मुझे सांस का रोग था फिर उसके बाद मुझे खाने पीने का सहारा दिया और जब मुझे गुरुदेव के पास आने की इच्छा होती है तो वो किसी ऑटो वाले को भेज देते हैं जो मुझे गुरूजी के घर ले जाता है और उसके पैसे भी गुरुजी ही देते हैं।

गुरूजी की इस सेवा को देख कभी-कभी आंसू आ जाते हैं कि अपने चार बच्चे होते-सोते मेरी सेवा गुरुजी ऐसे करते हैं जैसे कि वही मेरा सगा बेटा हो, वह भी बिना किसी लालच के। नहीं तो आजकल के दौर में कोई किसी को बिना किसी लालच के एक घूंट पानी भी नहीं पूछता। गुरूजी का मेरे प्रति ऐसा लगाव

देखकर यही साबित होता है कि गुरुजी का और मेरा रिश्ता साई बाबा और बायजा बाई की तरह है जो साई बाबा को भोजन कराती थी और बाबा उनको माँ मानते थे।

मैंने एक रोज़ गुरूजी से कहा कि मेरी शिरडी जाने की बरसों से इच्छा है मगर कोई ऐसा सहारा नहीं मिल रहा कि मैं साई बाबा की पवित्र धरती पर जाकर साई के दर्शन कर सकूं। इत्तफाक से गुरूजी अपनी संगत सहित 19 जून 2025 को शिरडी साई बाबा जी के दर्शन को जा रहे थे तो मैंने भी प्रस्ताव रखा कि गुरूजी मेरा भी बड़ा मन करता है शिरडी जाने को मगर कोई सहारा नहीं मिल रहा जो 80 साल की बुज़ुर्ग को यात्रा करा सके। इतना सुनते ही गुरूजी ने कहा कि माता जी आप तैयार हो जाओ, आपको मैं ले जाऊँगा। मैंने कहा कि मैं 80 साल की हूँ मुझे कहाँ घसीटते फिरोगे। तो उन्होंने कहा कि अगर मेरी माँ मुझे इस उम्र में तीर्थ यात्रा करवाने को कहेगी तो मैं मना थोड़ी करूँगा। आप चलिये मैं आपको लेकर जाऊंगा। फिर मैं गुरूजी के साथ शिरडी यात्रा को गयी। 19 जून से 25 जून तक की शिरडी यात्रा में जो मुझे आनंद आया उसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। बस एक बात ज़रूर कहना चाहूंगी कि अगर भगवान मुझे अगले जन्म में औरत बनाये तो बेटे के रूप में गुरूजी को ही मेरी संतान (बेटा) बनाये, जिन्होंने इस जन्म में मेरा बेटा न होते हुए भी मुझे बेटे जैसा सहारा दिया। ऐसे गुरु को मेरा प्रणाम। धन्य है वो माँ जिसने ऐसे इंसान को जन्म दिया। जय साई राम।

-भगवती देवी, दिल्ली

मेरठ के भक्तों द्वारा शिरडी में निकली बाबा की पालकी

शिरडी: दिनांक 14 जून 2025 को श्रीमती रीना चौधरी जी भक्तों का जत्था लेकर मेरठ से शिरडी रवाना हुई। सभी भक्तों ने शिरडी पंहुचकर बाबा के सभी मंदिरों के दर्शन किए। मेरठ के साई भक्तों द्व

ारा दिनांक 16 जून को ही शिरडी के साई समाधि शताब्दी मंडप में शाम को 7 बजे से 9 बजे तक भक्तिमय भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें गुरूजी ब्रिजमोहन नागर, भजन सम्राट परवीन मुद्गल और सुप्रसिद्ध गायक भुवनेश नथानी जी द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। उनके भजनों का वहां उपस्थित सभी भक्तों ने आनन्द लिया और कई भजनों पर नृत्य भी किया। भजनों को सुनने के लिए बहुत से आते-जाते भक्त भी रूक गये। सभी ने उनकी गायकी की सराहना की।

अगले दिन 17 जून को द्वारावती भक्ति निवास से शाम 4 बजे बाबा की पालकी धूमधाम से निकाली गयी। जिसमें मेरठ से आए भक्तों ने व अन्य भक्तों ने बाबा के जयकारे लगाए और नाचते गाते हुए पालकी के साथ खंडोबा मंदिर पहुंचे और उसके बाद पालकी को लेकर भक्तगण द्वारकामाई पहुंचे जहां पालकी यात्रा सम्पन्न हुई। दिल्ली, पानीपत, गुड़गांव, मेरठ, सोनीपत, कैथल व अनेक शहरों से भक्तगण पालकी में शामिल होने शिरडी पंहुचे।

पानीपत से भी भक्तों का एक जत्था शिरडी में पहुंचा और सभी भक्त इन कार्यक्रमों में शामिल हुए। बाबा की पालकी में साई ध्यान मंदिर के प्रधान श्री राजकुमार डाबर, काशी गिरी मंदिर के प्रधान श्री हरीश खुराना जी, श्री विद्यासागर जी, सूबेदार प्रताप जी, श्री महेश आनंद जी, श्री यशपाल शर्मा जी, श्री राजेश ठुकराल जी, श्री जोनी साई जी, हेनरी स्कूल के प्रिंसिपल श्री सोनू वर्मा जी, श्री सुभाष बवेजा, श्री राज मल्होत्रा जी, डॉक्टर पंकज जी, राजू जी तेल वाले व समस्त साई ध्यान मंदिर कमेटी पानीपत के भक्त शामिल हुए।

कार्यक्रम का आयोजन साई के अनन्य सेवादारों द्वारा किया गया। **-रीना चौधरी**

निगम परिवार द्वारा लखनऊ में साई बाबा जी का स्थापना दिवस

लखनऊ: कैवेल्य तेजो निधि बाबा शिरडी साईनाथ की असीम अनुकम्पा से निगम परिवार द्वारा दिनांक 3 जून, 2025 को श्री साई बाबा का 14वां स्थापना दिवस पूर्ण हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रात: बाबा का मंगल-स्नान, काकड़ आरती एवं पूजन किया गया। सांय 6 बजे बाबा जी की पालकी श्री राधा कृष्ण मन्दिर प्रांगण से निकाली गई। जगह-जगह पर साई भक्तों ने बाबा की पालकी का स्वागत किया, पालकी में बैठे बाबा की आरती उतारी तथा जलपान आदि की व्यवस्था भी की। बाद में पालकी मन्दिर प्रांगण में लाई गई। सूक्ष्म जलपान के बाद साई भक्तों द्वारा भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। मधुर-मधुर भजन सुनकर श्रोतागण भाव विभोर हो उठे। भजन कीर्तन के बाद बाबा की आरती की गई। तत्पश्चात् बाबा का विशाल

भंडारा आयोजित किया गया जो देर रात तक चलता रहा।

साई बाबा जी की मूर्ति और पालकी तथा मन्दिर को फूलों एवं लाइटों से बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया जो कि मन को अति लुभाने वाला लग रहा था।

-अरूण निगम, लखनऊ

Guru Purnima Message

Any attempt to understand and value the spiritual world on the basis of the purely materialistic knowledge of the material world is an exercise in futility. On the other hand, one who has tread along the spiritual path and has gained direct knowledge can handle the material world in a much better manner. Even if both spiritual and materialistic paths emanate from the same God, the spiritual path is finer and purer. It is not possible for any worldly man, to leave the material world and enter the spiritual path suddenly sheerly by his will. Such path is for the true spiritual practitioners, known as Yogis, Munis or Sanyasis. However, the spiritual depth and value of these true spiritual practitioners cannot be assessed by contact with the fraudulent ones who can be found everywhere these days. Yet most of the gullible people get attracted to them because of their attractive attire and speech. Since most of the people live amidst the world of impurities with a limited and distorted mind set, they easily get attracted to these impure actors. The human beings who are purer and simpler in nature instinctively do not get attracted towards them. However, such people generally get attracted and attached when coming in contact with some purer souls like the genuine saints and Sadgurus. The impurer ones generally accept the impure human beings, projecting themselves as spiritual characters, as their gurus. The purer ones accept only the true Saints as their Gurus. This obviously leads to the conclusion that one's Guru is what one wants

and selects him to be. Or it may be said that the Guru is what one thinks him to be. There are two types of people. Some of them are capable of seeing the positive side (Shubha) of everything and there are others who are capable of seeing the negative side (Ashubha) of everything. A man with an impure mental sight causes much harm to himself as his mind gets contaminated with the negative traits of his own thoughts progressively. He ultimately becomes a prisoner of his own thought and sees the worst in everyone and everything around even when in a temple or in association with the purer souls. As the worldly people going through the experience of negatives and positives in life try to evolve themselves out of their negativities so also the spiritually evolved souls (even with lots of positive qualities) continuously strive to eradicate their remaining negative qualities. Thus, all human beings at different stages of consciousness are in the continuous process of evolution the evil and good alike. The theories of different religions as also the different theories of Psychology agree on the point that ultimately a man's nature gets conditioned by what he thinks continuously. One who continuously thinks about the bad qualities of others ultimately develops those qualities in him. The same is true of continuous good thoughts. One finds an interesting story in "Shri Sai Satcharitra" about this. A person used to speak ill of another person at Shirdi when Shirdi Sai Baba was there. Later when he met Baba, the latter asked him to look at the pig devouring dirt with relish and commented – "look how happily he is eating the dirt. You have been speaking ill of your brother to your utter satisfaction and so your nature has become as evil." Thus in this world of material illusions even educated people, coming in contact with people harbouring evil thoughts against others, get easily contaminated. Far to speak of spiritual evolution, such an approach towards others ultimately leads them morally downwards. The best way to save one from such a situation is to pray Baba when a negative thought comes to mind or to recite his name silently or read Shri Sai Satcharitra.

-Dr. C.B. Satpathy

There is no greater wealth in this world other than Peace of Mind

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Dakshina-Murtaye Namah

Sai, an incarnation of Lord Dakshina Murti i.e. Lord Shiva. Dakshinamurti is an aspect of Lord Shiva as a Master or Guru. Dakshinamurti is the personification as the Supreme, ultimate awareness and knowledge. It is an aspect as a Guru of all types of knowledge of yoga, music, and wisdom, and giving exposition on the shastras. The symbolic form of Lord Dakshinamurti has four arms and is sitting facing towards the south. Under his right foot lies 'Apsmara' the demon symbolic of ignorance. His right hand is in 'Gyan mudra', the thumb representing the God and the index finger representing the man. The other three fingers represent conscious, sub-conscious and unconscious state of mind. South direction is also symbolic of death or change. Sai, in this form of Lord Shiva is worshiped as the God of wisdom. My humble salutation to Shri SAI the incarnation of Dakshinamurti Lord Shiva.

Shree Sainatha Gnyana Mandira Bhatrenahalli

Bangalore: Shree Sainatha Gnyana Mandira, Bhatrenahalli, Mallur, Bangalore is well known temple where many devotees come to take blessings of Saibaba.

On 26th June 2025 Thursday, Ashada Masa Amavasya was celebrated in the temple. The temple opened at 5:30 AM, at 6 AM Kakad aarti mangal snan, abhishek was done and prasad was offered to Sai Baba, and then distributed to devotees. Many devotees attended the program.

Earlier Ramnavami was also celebrated on 6th April 2025 in the temple. Special prayers were performed to worshipped Lord Rama. Devotees performed Shri Ram Milan Mantra Homa, Ram Tadak Homa, Shri Sai Baba Homa, Gana Homa, Iyappan Homa, Navgrah Homa and Subramanium Homa. After Puranahuti Tirath Prasad was distributed. The devotional bhajans were sung till 5:45 p.m. In this temple all the programs are organised by members of temple committee.

-M. Narayanaswamy

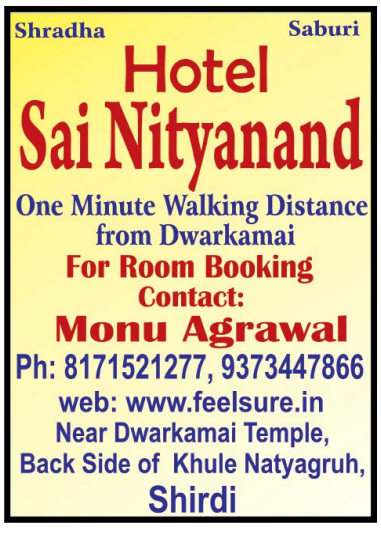

Prayer To Sai For The Good of All

Day in and day, we are coming face to face with so many heartrending human tragdies. It is, therefore, imperative on the part of all of us to keep bowing down to Sai Maa again and again and supplicating Her with the scriptural prayers, that are offered for the good and wellness of the entire humanity and all creation, both animate and inanimate:

"May all be happy! May all be free from disease! May all realise what is good! May none be subject to misery! May all be free from dangers! May all realise what is good! May all be actuated by noble thoughts! May all rejoice everywhere! May good betide all people! May the sovereign rule the earth, following the righteous path! May all beings ever attain what is good! May the world be prosperous and happy!

"May the wicked become virtuous! May the virtuous attain tranquillity! May the tranquil be free from bonds! May the freed make others free! May the world be peaceful! May the wicked become gentle! May all creatures think of mutual welfare! May their minds be occupied with what is auspicious! May our hearts be immersed in selfless love for the Lord!"

"May the winds bring us happiness! May the rivers carry happiness to us! May the herbs give us happiness! May night and day yield us happiness! May the dust of earth bring us happiness! May the trees give us happiness! May the sun pour down happiness! May the cows yield us happiness! May the clouds pour rain in time! May the earth be blessed with crops!"

"May our country be free from calamity! May holy men live without fear! Om! May there be peace in heaven! May there be peace in the sky! May there be peace on earth! May there be peace in the water! May there be peace in the plants! May there be peace in trees! May there be peace in Gods! May there be peace in Brahman! May there be peace in all...! May Brahman be realised by us! May the highest bliss be realised by us! May Brahman, Who is the highest bliss, be realised by us!"

"May He, the creator and supporter of the gods, the lord of all, the destroyer of evil, the great seer, He who brought the cosmic Soul into being, endow us with good thoughts! May the effulgent Being, the One without a second, Who, like a spider, spontaneously covers Himself with threads made out of His own creative powers, grant us union with Himself, the Brahman!"

-Quoted from the book Universal Prayers by Sri Swami Yatiswaranandaji, Published by: Sri Ramakrishna Math, Madras.

May Lord Sai keep showering His mercy, loving kindness and grace on all! May He lead us from darkness to the Light!

Shri Raghuvir Bhaskar Purandare

When Shri Raghuvir Bhaskar Purandare was going to Shirdi, he requested his mother to accompany him. On the previous day of his departure, his daughter was suffering from high fever. Even then, he did not cancel his visit and came to Shirdi with his mother, leaving his wife and disceased daughter at home.

On the third day of his arrival at Shirdi, Baba appeared in his wife's dream in his house and applied Udi on the forehead of his diseased daughter.

From that time, his daughter began to improve and became alright by the time Shri Raghuvir Bhaskar Purandare reached home. He knew this Leela of Baba and ever felt grateful to Baba. Surrender to Shri Sai Completely!

Baba Accepted My Prasad At Sai Temple Singapore

Singapore: On 1st May, Thursday, I experienced a memorable miracle at Sai Worship Centre, Sirangoon Road, Singapore.

Every Thursday I come to this temple to attend noon aarti. On 1st May 2025, I and my 8 years old grand daughter Saira came to temple to attend noon aarti. I brought apples for Sai Baba. I gave the polybag of apples to Pandit ji for offering. After offering apples to Baba, Pandit ji returned the polybag of apples to my grand daughter Saira. Saira found one "bitten apple" in the bag. I was surprised to see that, because Pandit ji did not keep the bag down, he was holding my bag in his hands while offering to Baba. I was very excited to see that Baba accepted my bhog and had eaten my apple. I Felt so blessed and happy. Thank you Baba. **-K.B. Sharma**

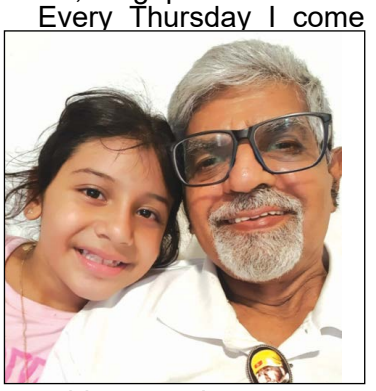

For Daily Shirdi Darshan, Latest News and Experiences of Sai Devotees, Subscribe and Like Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times
https://youtube.com/@ shrisaisumirantimes3022

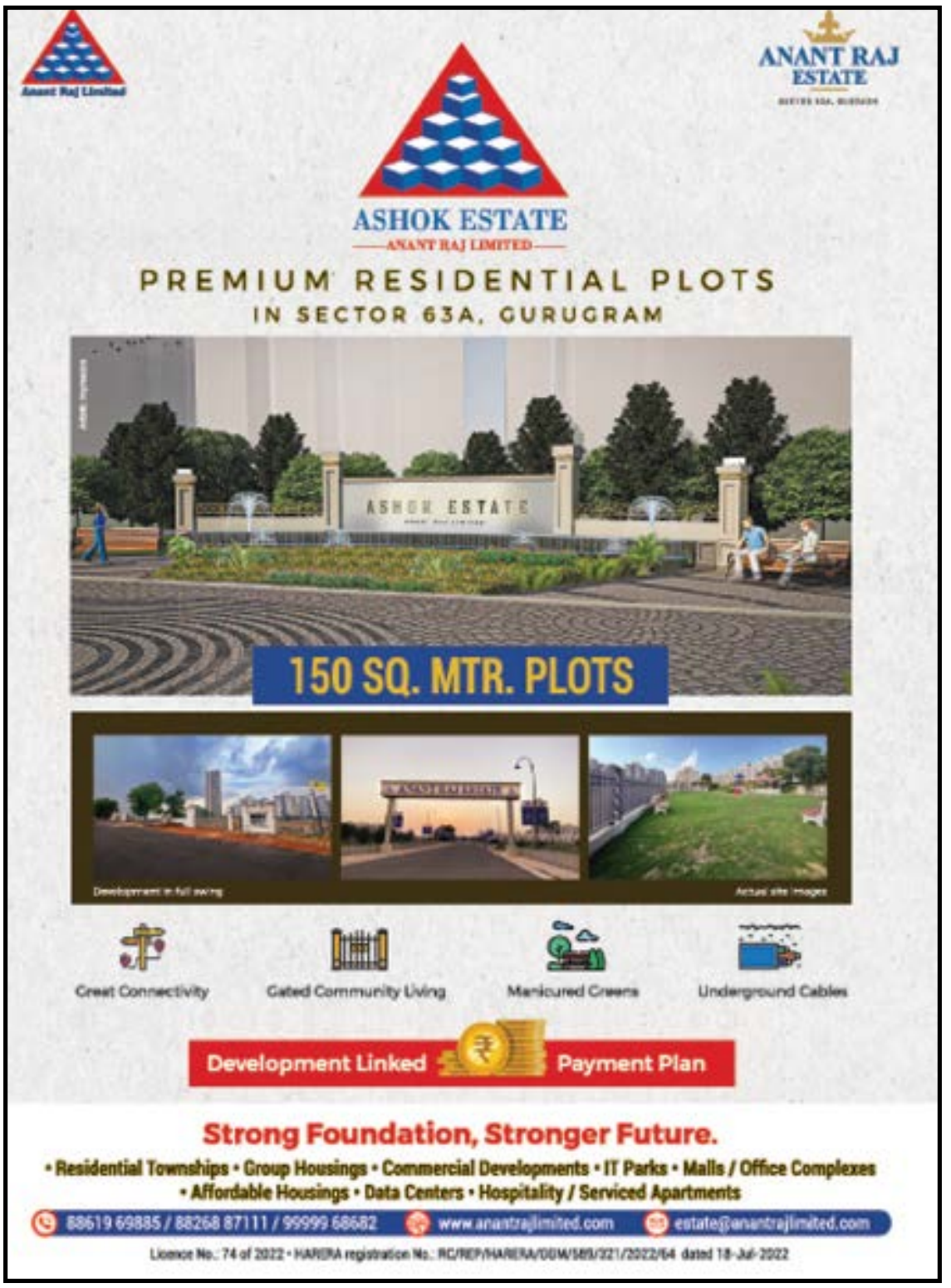

A Miracle of Faith and Survival

-By Sujay Khandelwal

Om Sai Ram! *12th May 2025, Shirdi, 5:30 AM*

In my second home at Sai Risu Wada, nestled in the heart of Shirdi, I woke up feeling weak and anxious. After undergoing three major surgeries in the past 45 days, my energy was drained. Just getting up to reach the washroom 10 feet away was a task. Yet, as I tried to get out of bed, I heard a voice in my half-sleep:

"Sujay, do not worry. I am there with you. Your sufferings are over. I will take care of it."

It was Baba's divine voice.

That moment brought back my consciousness. Though my body was fragile, my spirit was filled with hope. That same day, I was supposed to travel to Mumbai to meet doctors for what was expected to be a minor surgery. With full faith in Baba, I went to the hospital.

When the doctors checked me, they said, "Sujay, you are healing well. There's no need for surgery now. Go back home and gain strength for the final major surgery to restore your food pipe so that you may eat normally again."

By then, I had lost: - My voice - My sense of smell and taste - The ability to eat from my mouth - The ability to breathe from my nose

Yet Baba kept His word.

I was going home—something that felt like a miracle. After 45 days away, I was returning without even asking for it. Baba's leela once again left me in awe. Time and again, I've experienced His divine presence. His blessings have always helped me overcome the most difficult phases of life.

Where It All Started

Back in December 2024, I was in Shirdi preparing for the inauguration of Sai Risu Wada - a space open for all events, except during Sai Sangam in November and February. The work delays were frustrating. I continued handling office tasks online through Zoom calls. During one such call, I raised my voice at a team member. That moment turned out to be costly.

After Sai Sangam 10 in February, I consulted an ENT specialist. Reports showed my right vocal cord wasn't working. Initially, there was no pain, only difficulty in speaking. But the pain slowly worsened. Painkillers gave short relief, but soon they became ineffective.

In March 2025, while I was in Dubai, my daughter Smriti- an accomplished chef, noticed my suffering. She stayed with me, and though I followed the doctor's instructions, nothing improved. My voice became so hoarse that

even close friends couldn't recognize me on call.

From Dubai, I messaged our family doctor, Dr. Ankit Khandelwal, who asked me to visit him as soon as I returned to Kolkata. The very next day, I met him. Multiple tests and consultations followed. The conclusion shocked us.... it was cancer. My family and I flew to Mumbai without delay. We met three leading specialists. But when my son Hriday saw Baba's image in Dr. Anil D'Cruz's chamber, we knew we were in the right hands. The positivity and faith we felt assured us. Though initially planned for a short hospital stay, my journey was far more complex. I ended up spending 30 days in hospital and two more weeks in recovery.

The Seven Dark Days...

After the first surgery, we thought the worst was behind us. I resumed working from my hospital bed, and doctors were optimistic. But things took a turn. Complications arose. Minor procedures didn't help, and soon another major surgery was needed. That too failed.

I was declared critical. My life was in danger.

Family members flew back urgently. For two days, I drifted between reality and hallucination. The third surgery became a life-saving measure. All three surgeries took place in two weeks, each lasting between 8–12 hours and handled by a team of more than ten expert doctors.

Doctors with over 40 years of experience said they hadn't seen such a complex case in over a decade. From ICU to ward, everyone at the hospital began to recognize me.

Returning to Light...

On 17th June, I underwent the final 10-hour surgery by Dr. Baliarsingh, a senior plastic surgeon specially called in by Dr. D'Cruz. By Baba's grace, the surgery was successful.

Today, on 28th June, I'm back in Kolkata, writing this story upon the request of Sai Anju Tandon from Sai Sumiran Times, who has been a part of Sai Sangam since 2022 and never missed a single event, even traveling with us to Bangalore and Dubai.

Though I still cannot speak, Baba guided me to start Sai Vaani, a unique spiritual library in Shirdi. He also made me record and upload the Sai Bavani, an 11-minute meditative chant on YouTube.

And so, Baba reminds us:

"Karma comes from action, not words."

This quote by Shri Sumeet Ponda Bhaijee gave me strength through the hardest days:

"Sai nahi toh zikr kyu,
Sai hai toh fikr kyu!"

I'm deeply grateful to everyone who prayed for me. Baba is working through all of us. Sai Sangam's mission is now bigger. We aim to take this seva to every corner of India... from tier 2 and tier 3 towns to countries across the globe.

I invite you to join hands with us. Be a part of this divine mission. Volunteer, associate, or simply be present. Visit our website www.saisangam.co.in or WhatsApp us at +91 9051155503.

You can also connect with me directly at: www.sujaykhandelwal.com.

Let's walk this path of seva and love together, under the blessings of our beloved Sai Baba.

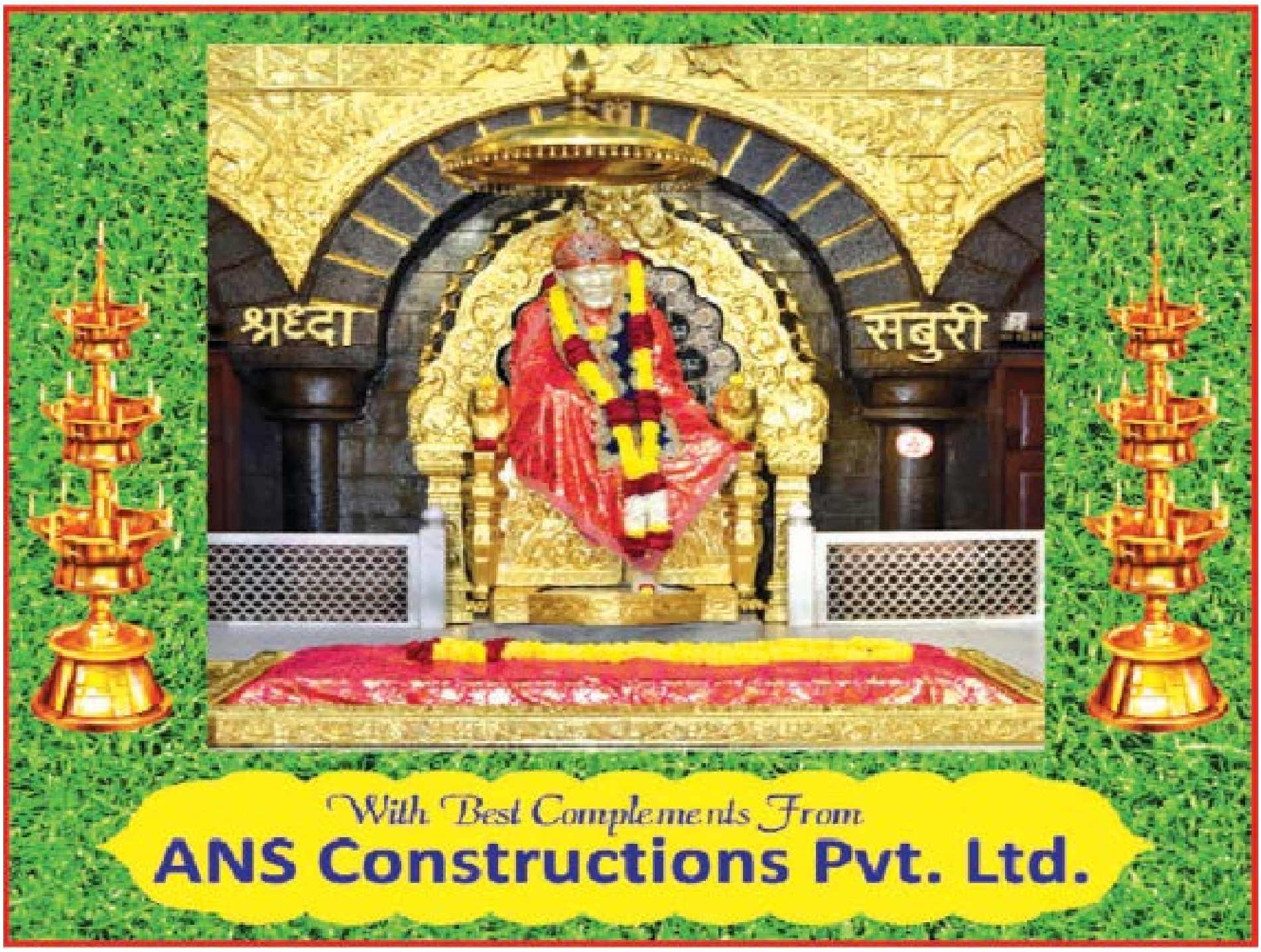

Shirdi Sai Baba's Greatest Apostle - Pujyashri Narasimha Swami ji

Aum Sairam Sai Bhandus,
We are all extremely fortunate to reap the immense blessings and guidance of our Supreme God Shirdi Sai Maharaj. In recent years a vast number of devotees across the globe worship Shri Sai Baba. Shri Sai Mandirs are built in almost every town and city. Shri Sai Baba who was known only in a hamlet Shirdi until 1940 became a name of every home in India and then His glory spread all over the world. For all this to happen, Sadguru Shri Sai Baba used His beloved Ankita Pujyashri Narasimha Swamiji as an instrument to inspire and draw his devotees to Him. But that was not as easy as you and I were drawn to Shri Sai Baba. Almost for 11 years Swamiji made a diligent search roaming as a mendicant to reach his Sadguru Shri Sai Baba. During this tenure Shri Sai Baba made him visit many Self-realized ones, temples, tombs, endure unthinkable challenges, put him to vigorous tests, gave intense training, finally after testifying that Swamiji is a taintless gold, Shri Sai Baba possessed him and bestowed His supreme powers upon him profusely, and made him as Sai Swaroopi Narasimha Swamiji. It is inevitable to read the assertion of Swamiji to fathom his quest for Sadguru:

"I searched for a "Sadguru" all over in the South, in the East, and, in the West. When I came to Shirdi, I found him in my heart." "I wandered ceaselessly. I went to many places and met many great beings. Still, I wandered on. My spiritual hunger was not satisfied till I came over to Shirdi and saw Sai Baba face to face. He stopped my wandering-and with this the wandering of many. At Shirdi, I was given more than I could take. I had at last discovered my "Sadguru". He is Sainatha Sadguru, and I live in constant communion with him. I feel forlorn in Sai-Love. He has possessed me, and I have surrendered my all to that "Living Chaitanya."

Devotees, each one of us are greatly indebted to Pujyashri Narasimha Swamiji for the incredible services rendered by him in spreading the glory of Shri Sai Baba. As we submit our humble prostrations to Shri Sai Baba, we need to submit our humble pranams to Swamiji. Without his remarkable services and insight, he had gleaned and contributed to the world, devotees would not have perceived Shri Sai Baba in the manner they do now.

I would like to make an earnest appeal to all the founders of Shri Sai Baba temples in India and around the world to place a small Pratima of Pujyashri Narasimha Swamiji next to the Pratima of Shri Sai Maharaj. As Azhwars and Nayanmars are venerated in temples dedicated to Lord Vishnu and Lord Shiva, we must give the same reverence to Swamiji is my humble thought. If not, at least a portrait of Pujyashri Narasimha Swamiji with a write-up about him can be placed so that every devotee visiting the temple would get a gist of Swamiji. The biography of Swamiji is mind boggling. This book is compiled with the blessings and guidance of Saipadananda Shri Radhakrishna Swamiji, (direct disciple of Pujyashri Narasimha Swamiji) by Dr. G.R. Vijayakumar ji titled- "As the Flower Sheds Its Fragrance." A book that every devotee must read.

We can have a quick glimpse of Pujyashri Narasimha Swamiji's incredible contributions to His beloved God Shirdi Sai Baba. **Devoted:** 20 years of his life to spread the glory of Shri Sai Baba all over India. Compiled: Shri Sai Ashotharam, Shri Sai Sahasranamavali, Shri Sainatha Mananam (an ambrosia of shlokas). **Authored-** innumerable books on Shri Sai Baba depicting His Supreme glory, Life history, benevolence, and Experiences bestowed on devotees available in many languages. **Founded-** All India Sai Samaj @ Mylapore, Chennai. Constructed-Shri Sai Baba temple, Mylapore. Distributed-Calendars, lockets, photos and Udi. **First Biographer:** Self-realization & Upadesha Saram of (Shri Ramana Maharishi), The Sage of Sakori (Shri Upasani Maharaj) **Seen-** Sringeri

Jagadguru Shri Narasimha Bharathi Swamigal, Sorakkai Swamigal, Sri Ramana Maharishi, Shri Siddharuda Swamiji, Shri Bapumai, Shri Bet Narayan Maharaj, Shri Meher Baba, Shri Upasini Maharaj.

Pujyashri Narasimha Swamiji placed Shri Sai movement on a strong pedestal and passed his spiritual powers to Sri Radhakrishna Swamiji, whom he had anointed as his worthy successor. In turn Sri Radhakrishna Swamiji had dedicated his entire life rendering diligent service to the Guru by meticulously and devotedly elevating the Shri Sai movement to its pinnacle and became Saipadananda Shri Radhakrishna Swamiji. Here is what Shri Radhakrishna Swamiji records about his first meeting with his Guru Pujyashri Narasimha Swamiji: "I could not resist the urge to place on record Sri Narasimha Swamiji's words to me at the very first meeting I had with him. The hope that Narasimha Swamiji's words will provide guidance to Sai Bhaktas and seekers of truth, have helped me to overcome the great diffidence I felt in making public this intensely personal experience.

Narasimha Swamiji's advice only shows how Sai Baba's loving kindness was showered on me through His great apostle, revered Narasimha Swamiji.

After this there have been many such experiences, which have helped me in my evolution in the spiritual path. Sai Baba has paved the way for me for a worthy living to realize Truth. Sai Baba is all in one to me- mother, father, relative, friend, knowledge, wealth, and all. What more can I say? He gave us plenty of opportunities to realize 'Samatva', enough power to bear 'sukha' and 'dukha' (pleasure and pain) and so on, equally, without hurting myself. Enough patience he has showered on this humble on this path of spirituality.

Sri Narasimha Swamiji had said: "The Supreme Light Divine shines in every heart. Thus, everyone is immortal. You need not search for it. Simply ask for it and it shall be given to you.

1. "Remember Baba has form and he is formless too. Do not begin to analyze the quality of the metal but drink the milk from the container.

2. "Stick to the spirit. Sainath leads you into the kingdom of spirit. He has vouchsafed to those who approach him the white path, the Shubra Marga. Do not doubt it. He will pour the essence in you after removing the age-long dirt in you.

3. "Remember his words- 'Ughe Muge'- sit quiet. Have patience and at the end you will have the reward. Concentrate on his feet first and then go on upwards. You will get the grace in full with all 'aananda'.

4. "There is no difference between Brahma, Vishnu, Maheswara and Sai Baba. The three combined in one you will be able to find in Sai Baba, too, the pure unadulterated omnipotent Soul. He lavishes his grace freely upon all devotees that take shelter at HIS feet.

5. "Sincerely approach him straight. Breathe your full life in him, and your eternal rest. Are you prepared? If so, start from this very moment itself.

6. "Go and enter straight into your heart and live with him. He is your mother. He knows your hunger and will always feed you.

7. "Take the banner of Sai Baba's love and compassion and propagate for the rest of your life. This is your Guru Seva. Mere learning and living with all comforts in life is not worth anything at all. May Sai Baba's grace be with you forever. Be happy and live with courage. Sai Baba will take care of you. Don't Fear. Walk on the spiritual path courageously and I am with you.

8. "Remember my case, how I have been divested of all my belongings, before he took possession of me."

Let us all humbly beseech the trimurtis to shower their benevolent grace upon all of us. May we all read the holy scriptures authored by Pujyashri Narasimha Swamiji as that would eradicate the bad karmas, poverty, illness, ignorance and make us evolve spiritually to attain the ultimate goal of life. Those who complain and regret about lack of time to read the books of the Great ones can listen or watch the videos and shorts depicting the biography of Pujyashri Narasimha Swamiji in English and Tamil languages being uploaded in youtube. This is purely done to share the glory with Shri Sai aspirants: https://www.youtube.com/@saiasha1825/playlists

With all humility placing my humble prostrations at the lotus feet of the trinity my life breath Shri Sainath Maharaj, Pujyashri Narasimha Swamiji and Saipadananda Shri Radhakrishna Swamiji.

-Sai Asha

Our Associates

Singapore - Naina
U.S.A. - Anil Chadha
Dr. Rangarao Sunkara
Ohio - Varaha
Florida - Kamal Mahajan
Brampton
Devendra Malhotra
Australia - Anibha Singh
New Zealand
Anjum Talwar
Japan - Kaco Aiuchi
Canada
Ruby Kaur, Smita Sohi
Germany - Sugandha Kohli
Sri Lanka
S.N. Udhayanayahan
Nepal
Vishnu Pokhrel, Madhu

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Chander Nagpal
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Sai Puja,
Sanjiv Arora
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palampur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

रिश्ता ज़रूर है

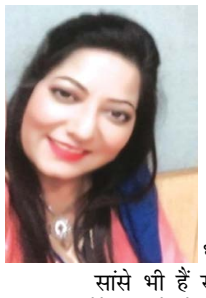

हर पल हर शै में शामिल साई कोई तो रिश्ता ज़रूर है
सुख में दुख में साथ हों बाबा कोई तो रिश्ता ज़रूर है
धड़कने भी साई तेरी, सांसे भी हैं साई तेरी,
तेरे हवाले ये ज़िंदगानी, साई कोई तो रिश्ता ज़रूर है।
मन की गिरह उलझती जाए, साई तू ही सब सुलझाए,
बड़ी अनोखी मेरी कहानी, साई कोई तो रिश्ता ज़रूर है।
सोचूं कभी तो दिल घबराए, कैसा सफर था जो काटा ही न जाए,
तूने किया साई मिट्टी को सोना, साई कोई तो रिश्ता ज़रूर है।

-संगीता ग्रोवर
गायिका, लेखिका, कवियत्री

तेरा ध्यान साई

हर पल करूं मैं तेरा ध्यान साई,
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई
नैयन देख तेरा, करूं ध्यान साई
शिरडी में आऊं, करूं ध्यान साई
मंदिर की सीड़ी चढ़ूं तेरो साई
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई
हर पल करूं मैं तेरा ध्यान साई
पूजा करूं मैं, करूं ध्यान साई
ध्याऊं मैं तुझको, करूं ध्यान साई
सेवा करूं मैं, करूं ध्यान साई
दो स्वस्थ ऐसा करूं ध्यान साई
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई
हर पल करू मैं तेरा ध्यान साई,
प्रहलाद जैसी दो भक्ती हे साई,
ले लो शरण मैं करूं ध्यान साई
जैसे मां बायजा ने तुझ को खिलाया
वैसे ही खा लो तुम मुझसे हे साई
हर पल करू मैं तेरा ध्यान साई,
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई
करता रहूं दान दुखियों को साई
ऐसा ही मुझे को तू धन दे दो साई
ढूंढू नयन में तेरा ध्यान साई,
देना तू सद्बुद्धि हमको हे साई
करूं प्रार्थना मैं भजूं तुझको साई
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई
हर पल करू मैं तेरा ध्यान साई,
सोचूं सदा मैं तुझको ही साई
करूं बात कुछ भी कहूं पहले साई
रक्षा करो तुम, करूं ध्यान साई
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई
हर पल करू मैं तेरा ध्यान साई,
दुख तुम मिटा दो, करूं ध्यान साई
साई बिना मैं नहीं कुछ भी साई
साई जपूं मैं सदा साई-साई
हर पल करूं तेरा ध्यान साई
तेरा ध्यान साई, तेरा ध्यान साई।

-विपुल गुप्ता

साई मंदिर लोधी रोड का शिरडी में साई विश्राम गृह

शिरडी: दिल्ली का लोधी रोड स्थित सुप्रसिद्ध साई बाबा मंदिर उत्तर भारत का पहला साई मंदिर है जहां पर अक्सर भक्तों

का मेला लगा रहता है। मंदिर के सचिव श्री एस.के. गुप्ता जी ने बताया कि श्री साई भक्ता समाज द्वारा शिरडी में भक्तों के ठहरने के लिए साई विश्राम गृह का निर्माण दो वर्ष पूर्व किया गया, जहां पर भक्तों के ठहरने के लिए अच्छी व्यवस्था है और सभी सुविधाऐं उपलब्ध हैं। यहां ठहरने के लिए साई मंदिर लोधी रोड दिल्ली अथवा फोन नम्बर-02423-297397 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

-पूनम धवन

संदेहों का विसर्जन

-डॉ. राजेश पी. माहेश्वरी

अक्सर बाबा का नाम और उनके किस्से सुनकर कई जिज्ञासु लोग भी शिरडी चले आते थे। इनमें कई बौद्धिक ऐसे भी होते थे, जो आ तो जाते थे, लेकिन बाबा की परीक्षा के इरादे से। उनके मन में कई सवाल और संदेह घुमड़ते थे। वे अपनी आंखों से बाबा को आज़माना चाहते थे। ऐसे संदेहियों की कभी कोई कमी नहीं थी। यहां दो ऐसे ही सज्जनों के शिरडी आगमन की कहानी है। देखना रोचक है कि बाबा के पास आकर किस तरह उनके सवाल और संदेह बहकर बाहर निकले।

शिरडी आने वाले कई लोग जब अपने गांव, शहरों में लौटते थे तो साई बाबा के बारे में अपने अनुभव सुनाया करते थे। बंबई के हरि कानोबा ने भी अपने कई मित्रों और रिश्तेदारों से बाबा के बारे में खूब सूना। वे संदेही प्रवृत्ति के व्यक्ति थे इसलिए उन्हें किसी बात पर सीधा भरोसा होता नहीं था। अविश्वास उनके चित्त पर ज़्यादा ही हावी था। बाबा से जुड़ी किसी बात पर विश्वास करने की बजाय उन्होंने स्वयं बाबा की परीक्षा लेने का मन बनाया। कुछ मित्रों के साथ शिरडी आए। सिर पर जरी की पगड़ी और पैरों में नए सैंडिल पहने हुए थे। उन्होंने बाबा को दूर से ही देखकर उनके पास जाकर प्रणाम करना चाहा, लेकिन नए सैंडिल बाधा बन गए। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए? तब उन्होंने अपने सैंडिल मस्जिद के एक कोने में रखे और अंदर जाकर बाबा के दर्शन किए। नम्रतापूर्वक प्रणाम किया उनसे प्रसाद और उदि प्राप्त की। जब लौटे तो देखा कि सैंडिल गायब हैं। यहां-वहां तलाश की। निराश होकर वापस आए।

स्नान, पूजा और नैवेद्य अर्पण के बाद वे भोजन करने बैठे परंतु उनका चिंतन सैंडिल पर ही चलता रहा। भोजन किया। हाथ-मुंह धोकर बाहर आए तो एक बच्चे को अपनी ओर आते देखा, जिसके एक हाथ में डंडे पर सैंडिल लटके हुए थे। उस बालक ने हाथ धोने के लिए बाहर आए लोगों को सुनाकर कहा कि बाबा ने मुझे यह डंडा हाथ में देकर रास्ते में घूम-घूमकर यह पुकार लगाने को कहा है- हरि का बेटा, जरी का फेंटा, और जो भी आकर कहे कि यह सैंडिल हमारे हैं तो उससे यह भी पूछने को कहा है कि क्या उसका नाम हरि है और उसके पिता का नाम क से आरंभ होता है? साथ ही यह भी देखना कि क्या वह जरी का साफा बांधे हुए है या नहीं। इसके बाद ही उसे सैंडिल देना।

बालक की बात सुनकर हरि कोनाबा हैरत में खड़े रह गए। आनंद और आश्चर्य से भरे थे। ऐसा वाक्या ज़िंदगी में इससे पहले कभी आया नहीं था। उन्होंने आगे बढ़कर बालक से कहा कि यह सैंडिल हमारे ही हैं। मेरा ही नाम हरि है और मैं कोनाबा का पुत्र हूं। यह मेरा जरी का साफा तुम देख ही रहे हो। बालक उनकी बात से संतुष्ट हो गया। सैंडिल उन्हें दे दी। फिर उन्होंने सोचा कि मेरी जरीदार पगड़ी तो सबको नज़र आ रही थी, हो सकता है कि बाबा की नज़र भी इस पर गई हो। लेकिन मैं तो शिरडी पहली ही बार आया हूं फिर बाबा को यह ज्ञात कैसे हुआ कि मेरा ही नाम हरि है और मेरे पिता का नाम कानोबा? वह तो केवल बाबा का इम्तहान लेने के मन से बंबई से आए थे। इस प्रसंग से बाबा की महानता, उनके व्यक्तित्व की ऊंचाई और गहराई ज़ाहिर हो गई थी।

शंकालु प्रवृति के लोग कम नहीं होते। हर बात पर विश्वास कर लेना भी ठीक नहीं है और हर बात पर संदेह ज़ाहिर करने की आदत भी बुरी ही है। लेकिन कई लोग इसी

मान्यता के होते हैं। उन्हें लगता है कि संदेह प्रकट करके वे अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दे रहे हैं और जो लोग सहज विश्वास करते हैं, वे मूर्ख या कम बुद्धि वाले होते हैं।

एक और शंकालु सज्जन की कहानी है। वे महाशय भी बाबा की परीक्षा लेने शिरडी पधारे। काका साहेब दीक्षित के अनुज श्री भाईजी नागपुर में रहते थे। सन् 1906 में हिमालय गए थे। गंगोत्री से पहले आता है उत्तरकाशी। हरिद्वार और ऋषिकेश से गंगोत्री जाते समय आखिरी पड़ाव उत्तरकाशी में ही होता है। अब यह इलाका गंगा पर बन रहे बांधों के कारण चर्चाओं में है, लेकिन हिमालय के कच्चे पहाड़ों की गोद में तेज़ रफ्तार से बहती गंगा के किनारे बसा उत्तरकाशी बेहद खूबसूरत तीर्थ है। यहां उनका परिचय एक सोमदेव स्वामी से हुआ। दोनों ने एक दूसरे को अपने संपर्क के लिए पते प्रदान किए।

पांच साल बाद सोमदेव स्वामी का आगमन नागपुर में हुआ। वे भाईजी के यहां भी ठहरे। साईनाथ की प्रसिद्धि सुनी। कई किस्से सुने। शिरडी जाकर दर्शन करने की उत्कंठा हुई। मनमाड और कोपरगांव निकला। एक तांगे में सवार होकर वे शिरडी की तरफ चले। शिरडी के पास पहुंचे तो मस्जिद में दो ध्वजाएं लहराती दिखीं।

सोमदेव स्वयं संत थे। उन्हें लगा कि बाबा संत होकर भी ध्वजाओं में दिलचस्पी क्यों रखते हैं? क्या यह आचरण संतोचित है? उन्हें लगा कि साई अपनी कीर्ति के इच्छुक हैं अन्यथा राजाओं की तरह इन पताकाओं को फहराने का क्या औचित्य है? यह विचार और सवाल मन में उठते ही उन्होंने शिरडी जाने का इरादा त्याग दिया और अपने सह यात्रियों से कहा कि मैं वापस लौटना चाहता हूं। तब लोगों ने उनसे कहा कि वापस ही लौटना था तो इतनी दूर व्यर्थ यात्रा की ही क्यों? अभी केवल ध्वजों को देखकर तुम इतने बेचैन हो गए तो जब शिरडी में रथ, पालकी, घोड़ा और शानदार सजावट के दूसरे इंतज़ाम देखोगे तो तुम्हारी क्या हालत होगी?

स्वामीजी महाराज को यह सुनकर और घबराहट सी हुई। बोले कि मैंने अनेक साधु-संतों के दर्शन किए हैं, परंतु यह संत कोई निराला ही है, जो इस तरह ऐश्वर्य की वस्तुओं का संग्रह किए बैठा है। ऐसे संत के दर्शन न ही हों तो उत्तम। ऐसा कहकर वे बाकायदा लौटने ही लगे। दूसरे यात्रियों ने उन्हें जल्दबाजी में निर्णय न करने और आगे बढ़ने की राय दी और समझाया कि यह संकुचित सोच है कि दूर से ही अपनी राय बनाकर वापस हों। मस्जिद में जो संत हैं, वे मान-सम्मान, यश और कीर्ति जैसी सांसारिक लिप्साओं से परे हैं। इन बाहरी इंतज़ामों से ही कोई अंतिम निर्णय मत कीजिए महाराज! भक्तों और प्रेमियों से मिलते हैं, क्योंकि लोग प्यार से उनके पास आते हैं। वे तो किसी को नहीं कहते कि यहां आओ।

आखिरकार स्वामी सोमदेव को भी लगा कि इतनी दूर आ ही गए हैं तो एक झलक ले ही ली जाए। वे शिरडी में दाखिल हुए। मस्जिद में गए। बाबा के मंडप में पहुंचे। देखा तो ना मालूम क्या हुआ, एकदम द्रवित हो गए। सारे सवाल और सारी शंकाएं पिघलकर आंसुओं के रूप में बाहर आने लगीं आंखों से, गला रूंध गया। दूषित विचार बाहर बहने लगे। उन्हें अपने गुरू के वचन याद आए, मन जहां अति प्रसन्न और आकर्षित हो जाए, उसी स्थान को अपना विश्राम धाम समझना। यहां आकर उनका मन हुआ कि बाबा के चरणों की रज में ही लोट लगा लें। जैसे ही वे भावुक मन से बाबा के निकट आए बाबा क्रोधित होकर चिल्लाने लगे, 'हमारा सामान हमारे साथ ही रहने दो, तुम अपने घर वापस लौट जाओ। सावधान। फिर कभी मस्जिद की सीढ़ी चढ़े तो। ऐसे संत के दर्शन ही क्यों करने चाहिए, जो मस्जिद पर ध्वजाएं लगाकर रखे? क्या ये संतपन के लक्षण हैं? एक क्षण भी यहां न रूको।'

बाबा के वचनों ने उसके हृदय पर जबर्दस्त आघात किया। उसे अहसास हुआ बाबा की सर्वज्ञता का। स्वामी सोमदेव अब तक उनकी आकर्षक काया और उनके आभा मंडल से ही प्रभावित हुए थे, बाबा की ललकार सुनकर वह धक्क से रह गए। मस्जिद आकर जिस संत से उसका सामना हुआ था वह सामान्य संत नहीं था। समस्त संपत्ति, यश और कीर्ति से निर्लिप्त इस फकीर की काया में कोई और ही विराजित नज़र आया। कुछ विराट। कुछ अपरिभाषित-सा। उन्होंने बाबा के क्रोधपूर्ण वचनों को अपने लिए वरदान ही माना, जिसने उनके मन के सारे संदेहों को बाहर बहा दिया था।

एक बार नाना साहेब चांदोरकर और म्हालसापति कुछ अन्य सहयोगियों के साथ मस्जिद में बैठे थे। बीजापुर से एक संभ्रांत मुस्लिम परिवार के सदस्य बाबा के दर्शनार्थ आए। महिलाएं भी थी। नाना साहेब उन्हें एकांत देने की सोच से वहां से उठने लगे, लेकिन बाबा ने रोक लिया। महिलाएं आगे बढ़ीं। बाबा के दर्शन किए। एक महिला ने चेहरे से नकाब हटाकर बाबा के चरणों में प्रणाम किया और नकाब वापस डाल लिया। नाना साहेब उसकी खूबसूरती पर मोहित से हो गए। एक बार फिर से उसका चेहरा देखने के लिए लालायित हो गए।

नाना के मन की व्यवस्था बाबा ने पढ़ ली। जब सब लोग चले गए तो बाबा ने उनसे कहा, 'नाना क्यों व्यर्थ में मोहित हो रहे हो? इन्द्रियों को अपना काम करने दो। हमें उनके काम में बाधक नहीं होना चाहिए। भगवान ने यह सुंदर सृष्टि निर्माण की है। अत: हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसके सौंदर्य की सराहना करें। यह मन तो क्रमश: ही स्थिर होता है और जब सामने का द्वार खुला है तो हमें क्यों पिछले द्वार से प्रविष्ट होना? चित्त शुद्ध होते ही फिर किसी कष्ट का अनुभव नहीं होता। यदि हमारे मन में कुविचार नहीं हैं तो हमें किसी से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। नेत्रों को अपना कार्य करने दो। इसके लिए तुम्हें लज्जित और विचलित नहीं होना चाहिए।'

उस वक्त शामा भी वहां मौजूद थे। उनकी समझ में नहीं आया कि बाबा के कहने का आशय क्या है? लौटते वक्त उन्होंने नाना से ही पूछा कि बाबा क्या कह रहे थे।? नाना ने शामा को पूरी आपबीती कह सुनाई। साथ ही बाबा के वचन से जो ज्ञान उन्हें इस क्षण मिला, वह भी शामा को दोहराकर बताया। नाना साहेब ने कहा कि मन तो चंचल ही है पर उसे लंपट नहीं होने देना चाहिए। इन्द्रियों का स्वभाव भी चंचल है, लेकिन मन पर हमारा पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए। किसी हालत में उसे अशांत नहीं रहने देना चाहिए। इंद्रियां तो अपने विषय भोग की चेष्टा में संलग्न रहती ही हैं। लेकिन हमें उनका वशीभूत होकर उनके इच्छित पदार्थों के निकट नहीं जाना चाहिए। उनके गति अवरोध की व्यवस्था करनी चाहिए। सौंदर्य देखने का विषय है। निडर होकर सुंदर पदार्थों को देखें। अगर कोई कुविचार न उठे तो लज्जा और भय की ज़रूरत ही क्या है? मन निलिप्त हो और तब ईश्वर की सुंदर कृतियों को देखें तो इंद्रियों की क्या बिसात कि अनियंत्रित हों। तब तो विषयों का आनंद लेते हुए भी ईश्वर की स्मृति बनी रहेगी।

यदि बाहरी इंद्रियों के पीछे अंधे होकर भागे और उनमें लिप्त हुए तो जन्म-मृत्यु के पाश से कभी छुटकारा नहीं होने वाला। विषय पदार्थ इंद्रियों को सदैव पथभ्रष्ट करने वाले ही होते हैं। अत: श्रेष्ठ यही है कि विवेक हमारा सारथी हो, जो मन की लगाम हाथ में लेकर इंद्रियों रूपी अश्वों को सही दिशा में ले जाए। संसार के जाल से सुरक्षित निकलने का यही उपाय है।

आभार: शिरडी के साई सबके पैगंबर

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने वीबा प्रैस प्रा. लि., C-66/3, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर F-44-D, MIG फ्लैटस, G-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया। PRGI No. DELBIL/2005/16236

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

श्री अक्कलकोट महाराज-दत्तात्रेय के अवतार

'स्वामी समर्थ' के नाम से प्रसिद्ध एवं श्री दत्तात्रेय अवधूत के अवतार माने जाने वाले इन श्रेष्ठ सद्गुरू का नाम आज महाराष्ट्र एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में एक प्रख्यात नाम है। उनके वास्तविक नाम के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है। चूंकि इन सद्गुरू ने लगभग 22 वर्षों तक अक्कलकोट नामक एक स्थान पर निवास किया एवं वहीं सन् 1878 में महासमाधि ली, इसलिये उन्हें 'अक्कलकोट महाराज' के नाम से भी जाना जाता है। अक्कलकोट महाराष्ट्र के शोलापुर ज़िले में है।

स्वामी समर्थ के जीवन एवं कृत्यों को जानना साई-भक्तों के लिए काफी प्रेरणाप्रद होगा। इन दोनों सद्गुरूओं (स्वामी समर्थ एवं श्री शिरडी साई बाबा) के जीवन का तुलनात्मक रेखांकन इन दोनों में आश्चर्यजनक समानताऐं प्रदर्शित करता है। इन दोनों की कार्यशैली, इनके द्वारा दर्शाये गये चमत्कारों तथा इनके शिक्षा देने के तरीकों में भेद करना कठिन प्रतीत होता है। किसी भी आलोचनात्मक शैली में किया गया अध्ययन इसी तथ्य को उजागर करता है कि उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में इन दोनों सद्गुरूओं की कुल भूमिका यदि बिल्कुल समान नहीं, तो भी काफी हद तक मिलती-जुलती अवश्य थी। जो लोग बारीकी से आध्यात्मिक विश्लेषण करने में सक्षम हैं, उन्हें कुछ हैरतअंगेज़ सच्चाइयां पता चलेंगी। सच बात तो यह है कि श्री शिरडी साई बाबा एवं स्वामी समर्थ दोनों ही एक ही देवी स्त्रोत के दो शारीरिक रूप थे। इन सद्गुरूओं पर प्रकाशित कई लेखकों की रचनाओं में इस बात का प्रमाण देखने को मिलता है कि इन दोनों सद्गुरूओं के मध्य लौकिक एवं आध्यात्मिक धरातलों पर सम्पर्क लगातार कायम था। महासमाधि के ठीक पहले स्वामी समर्थ ने अपने एक शिष्य को आश्वासन देकर साई बाबा की पूजा करने को कहा था और यह भी कहा था कि भविष्य में वह शिरडी में ही रहेंगे।

शिरडी साई बाबा की तरह ही श्री समर्थ स्वामी का प्रारम्भिक जीवन भी रहस्यों से भरा हुआ है। कुछ लेखकों द्वारा उनके शरीर-धारण के बारे में अलग-अलग अवधारणाएँ प्रस्तुत की गई हैं। हालांकि इन सिद्धान्तों को प्रमाणित करने के लिए साक्ष्यों का अभाव है। इसी तरह साई बाबा के शरीर-धारण तथा प्रारम्भिक जीवन के बारे में भी सत्यापित विवरण उपलब्ध नहीं हो सका है। अनुभव से यह देखा गया है कि जो लोग इन दोनों सद्गुरूओं के ऊपर श्रद्धा रखते हैं, वे उनके शरीर-त्याग के उपरांत भी लगातार उनकी कृपा का अनुभव कर रहे हैं। ऐसे भक्तों के लिए ऐतिहासिक प्रमाणिकता ज़्यादा मायने नहीं रखती। क्या फर्क पड़ता है कि ईसा मसीह एक कुंआरी मां से उत्पन्न हुए थे या नहीं। महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने मानवता का दुख-दर्द दूर किया तथा उन्हें अध्यात्म का मार्ग दिखाया। संसार को इसी की आवश्यकता थी।

दत्त परंपरा के लोगों का ऐसा विश्वास है कि स्वामी समर्थ के आगमन के तीन सदियों पूर्व श्री नृसिंह सरस्वती ने भी श्री दत्तात्रेय के अवतार-रूप में मानव-शरीर धारण किया था। 'गुरूचरित्र' नामक ग्रंथ में उनके बारे में बहुत सी जानकारी उपलब्ध है। सर्वमान्य मत के अनुसार श्री नृसिंह स्वामी, जीवन के प्रारम्भिक काल में कुछ दशकों तक लोगों का आध्यात्मिक उत्थान करने के पश्चात् तपस्या के लिए हिमालय पर चले गये थे और वहीं पर उन्होंने समाधि ले ली थी। उसी समाधि-लीन-अवस्था में वे लगभग 300 वर्ष तक रहे। क्रमशः उनके शरीर के चारों ओर चींटियों का एक विशाल घर बन गया और उसके अंदर उनका शरीर छुप गया। एक दिन उस जंगल में घूमते हुए एक लकड़हारे की कुल्हाड़ी अकस्मात उन चींटियों के घर पर जा लगी। उस जगह पर चोट मारने के बाद कुल्हाड़ी के सिरे पर रक्त देखकर वह लकड़हारा आश्चर्यचकित रह गया। उसने चीटियों के घर को सावधानी से साफ किया, तो उसे एक योगी ध्यान-मुद्रा में बैठे हुए मिले। योगी ने धीरे-धीरे अपने नेत्र खोले और उस भयाक्रांत लकड़हारे को दिलासा देते हुए कहा कि यह सब ईश्वरीय इच्छा है, जिसके तहत उन्हें अपने कार्यों को पुनः प्रारम्भ करने के लिए दुनियां में आना था। यही महायोगी अपनी नई भूमिका में श्री स्वामी समर्थ के नाम से जाने गये, ऐसा विश्वास है।

अक्कलकोट में स्थापित होने से पूर्व स्वामी समर्थ ने दूर-दूर तक भ्रमण किया। हिमालय क्षेत्र में घूमते हुए उन्होंने चीन की भी यात्रा की। तत्पश्चात् उन्होंने पुरी, वाराणसी, हरिद्वार, गिरनार, काठियावाड़ एवं रामेश्वरम् की यात्रा की। अपनी इस परिव्राजक प्रकृति के कारण वे 'चंचल भारती' या 'घुमक्कड़ साधु' के नाम से भी जाने जाते थे। वे पंढरपुर, ज़िला शोलापुर के निकट मंगलवेढ़ा में भी कुछ समय के लिए रूके थे, जहां पहले भी कई संत जैसे कि दामोजी पन्त एवं चोखा मेला आदि रह चुके थे। अंततोगत्त्वा सन् 1856 में वे अक्कलकोट आए, जहां पर वे 22 वर्षों तक रहे। महाराज अक्कलकोट में 'चिन्तोपन्त तोल' के निमंत्रण पर अक्कलकोट आये थे तथा वहीं शहर के बाहर एक निर्जन स्थान पर बस गये। हम जिन्हें चमत्कारिक कर्म समझते हैं, वह अक्कलकोट महाराज जैसी ईश्वरीय सत्ता से युक्त आत्माओं के लिए एक आम बात है। एक दिन उस क्षेत्र के एक मुस्लिम रिसालदार ने स्वामी जी की परीक्षा लेनी चाही। उसने स्वामी जी को बिना तम्बाकू की एक चिलम दी और उनसे पीने का आग्रह किया। स्वामी जी ने खाली चिलम को सुलगा लिया और यूं पीना शुरू कर दिया जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। तब यह जानकार कि वे एक पहुंचे हुए आध्यात्मिक व्यक्तित्व हैं, रिसालदार ने उनसे क्षमा-याचना की और साथ में ही उनके रहने की व्यवस्था चोलप्पा नामक व्यक्ति के घर पर कर दी। इसी छोटे से घर में स्वामी जी अन्त तक रहे और यहीं उनका दरबार बन गया। वहां पर असंख्य लोग आने लगे तथा उनसे आध्यात्मिक और लौकिक, दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त करने लगे।

शीघ्र ही स्वामी समर्थ का नाम एक आध्यात्मिक गुरू के रूप में चारों ओर फैल गया और उनके भक्तों की भीड़ बढ़ती गई। उनके द्वारा कही गई कई रहस्यमयी बातें एवं संकेत उस समय भक्तों की समझ में नहीं आए, किन्तु बाद में उनके अर्थ प्रत्यक्ष रूप में प्रकट होने लगे। इस महान संत ने मुसलमानों, ईसाइयों तथा पारसियों आदि हर धर्म के भक्तों को सदैव एक सा समझा। उन्होंने गरीब, ज़रूरतमन्दों एवं समाज के निचले तबके के लोगों पर विशेष रूप से उदारता बरती। वे हिन्दुओं तथा मुसलमानों के त्योहारों जैसे कि दशहरा एवं मुहर्रम आदि को एक सा मनाते थे।

जिस प्रकार श्री साईनाथ अक्सर अपने किसी भक्त का नाम लेते हुए अपने हाथ में सिक्कों को मला करते थे तथा भक्तों में वितरित किया करते थे, उसी प्रकार स्वामी समर्थ अक्सर धातु के छल्लों के साथ खेला करते थे। वे इन छल्लों को अपने भक्तों में वितरित कर देते थे। अक्सर, पाने वाले भक्त को उस छल्ले (अंगूठी) में अपने ही इष्ट का चित्र बना हुआ मिलता था। शिरडी की तरह ही अक्कलकोट में भी गुरूवार का दिन विशेष आयोजन का दिन होता था। साई बाबा की तरह ही स्वामी समर्थ भी समूह-भोज कराने के शौकीन थे। एक बार जब वे रामपुर की यात्रा पर थे, तो उनके भक्त राव जी ने उनके आगमन के उपलक्ष्य में लगभग 50 लोगों के भोजन की व्यवस्था अपने घर पर की। परन्तु स्वामी समर्थ के आगमन का समाचार सुनते ही आस-पास के गांवों से सैकड़ों की तादाद में लोग राव जी के घर में पहुंचने लगे। इतने सारे लोगों को अपने घर पर आया देखकर राव जी घबरा गया और स्वामी जी से याचना की। उनकी यह दशा देखकर दया भाव से स्वामी जी ने सभी देवताओं-जैसे कि खण्डोबा, अन्नपूर्णा आदि की मूर्तियां रख दीं तथा उनके ऊपर रोटी, चावल आदि खाद्य-पदार्थ भर कर कपड़े से ढक दिया। राव जी एवं उनकी पत्नी को इन बर्तनों को लेकर तीन बार तुलसी-वृक्ष की परिक्रमा करने को कहा गया। इसके बाद उन्हें इन बर्तनों के अंदर न देखते हुए इनमें से हाथ से भोजन निकालकर अतिथियों को परोसने को कहा गया। जब खाना परोसा गया तो राव जी एवं उसकी पत्नी यह देखकर हैरान थे कि सैकड़ों लोगों को भोजन कराने के पश्चात् भी वे पात्र खाली नहीं हुए थे। जब सभी अतिथियों ने भोजन कर लिया, उसके बाद स्वामी समर्थ ने भोजन किया। हिन्दू शास्त्रों में इसे 'अन्नपूर्णा सिद्धि' कहते हैं।

स्वामी समर्थ अपने पास आने वाले सभी लोगों का मन पढ़ लेने में सक्षम थे तथा उनके भूत, भविष्य की पूरी जानकारी रखते थे। हिन्दू शास्त्रों में इसे एक विभूति 'प्रज्ञा-ऋतम्भरा कहते हैं। उनका बाबा साहेब जाधव नाम का एक भक्त जब एक दिन उनसे मिलने आया तो उसे देखकर स्वामी जी अचानक बोल उठे-'अरे कुम्हार, तुम्हारा बुलावा आ रहा है।' स्वामीजी का नज़दीकी शिष्य होने के कारण उसने स्वामी जी का संकेत समझ लिया और अपनी जीवन-रक्षा की याचना की, ताकि वह स्वामी जी की कुछ दिनों तक और सेवा कर सके। उसकी प्रार्थना से द्रवित होकर स्वामी जी ने आकाश की ओर देखते हुए किसी अदृश्य शक्ति से कुछ बातें की। फिर अचानक उन्होंने अपने हाथ से बाहर घूम रहे एक बैल की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा-'बैल के पास जा।' तमाम भक्तों के देखते ही देखते वह बैल उसी समय मृत होकर गिर पड़ा। महाराज की कृपा से बाबा साहेब जाधव को एक नया जन्म मिला। इसके बाद जाधव ने सम्पूर्ण जीवन स्वामी जी की सेवा में अर्पित कर दिया। इसी प्रकार शोलापुर से एक यूरोपियन इन्जीनियर स्वामी जी के पास एक पुत्र की कामना लेकर आया। स्वामी जी ने उसे देखते हुए कह दिया कि 'जा एक साल के अंदर तेरे घर एक पुत्र होगा', और एक साल के अन्दर ही उसे पुत्र प्राप्त हो गया।

सद्गुरू अर्थात् आध्यात्मिक गुरू अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति के जीवन में गुणात्मक सुधार लाने का प्रयास करते हैं। लौकिक लाभ प्रदान करने के साथ-साथ ही वे उनका आध्यात्मिक उत्थान भी करते हैं। एक बार एक यहूदी डॉक्टर जो बम्बई के जे.जे. अस्पताल में नेत्र-विशेषज्ञ के रूप में कार्य करते थे, स्वामी जी से आकर मिले। डॉक्टर को अपनी व्यावसायिक क्षमता के बारे में बहुत अहंकार था। उसे देखकर स्वामी समर्थ ने पूछा-'डॉक्टर! मुझे यह बताओ कि कितने मरीज़ होंगे जिनकी तुम्हारे इलाज के बाद हमेशा के लिए नेत्र-ज्योति चली गई।' इस वाक्य ने डॉक्टर को चौंका दिया। उसे इस बात का अहसास हुआ कि कई लोग उसके इलाज के बाद भी अपने नेत्र हमेशा के लिए खो चुके होंगे जिसकी जानकारी महाराज को थी, यह सुनकर उसका अहं तुरन्त नष्ट हो गया और वह सदैव के लिए स्वामी जी का भक्त बन गया। सेवा निवृत्ति के बाद वह डॉक्टर अक्कल कोट में ही आकर रहने लगा तथा अंत तक स्वामी समर्थ की सेवा करता रहा।

कहा जाता है कि पारस पत्थर एक साधारण धातु को स्वर्ण में बदल देता है। आध्यात्मिक गुरू पारस पत्थर से भी ज़्यादा चमत्कारिक होते हैं, जो अपने संपर्क में आने वाले हर साधारण से प्राणी को भी न सिर्फ स्वर्ण में अपितु उसे पारस में परिवर्तित कर सकते हैं। वे किसी भी व्यक्ति को पलभर में स्पर्श, दृष्टि, शब्द या फिर महज अपनी इच्छा-तरंग द्वारा आध्यात्मिक उत्कर्षता प्रदान कर सकते हैं। रामानन्द बीडकर जैसा व्यक्ति जिसने एक लम्बे समय तक अनैतिक जीवन बिताया था, उसे भी स्वामी समर्थ ने एक दृष्टि (दृष्टि-दीक्षा या शक्तिपात) द्वारा पल भर में अपनी कृपा से 'सन्त बीडकर महाराज' जैसे आध्यात्मिक व्यक्तित्व में परिवर्तित कर दिया। महाराज के मार्ग-दर्शन से स्वामी बालप्पा महाराज, श्री गंगाधर महाराज, श्री गजानन महाराज और कई अन्य लोग आध्यात्मिक उत्थान के उच्चतम स्तर पर पहुंचकर समाज का कल्याण करते रहे।

इस प्रकार दशकों तक अध्यात्म जिज्ञासुओं, गरीबों एवं बीमारों की सेवा करते हुए, स्वामी समर्थ ने एक दिन अचानक यह घोषणा कर दी कि उनके शरीर छोड़ने का समय आ गया है। शक 1800 चैत्र शुक्ल त्रयोदशी मंगलवार सायं चार बजे वे पद्मासन में बैठ गये तथा उनके अंतिम शब्द इस प्रकार थे-'कोई रोएगा नहीं। मैं हर समय हर जगह उपस्थित रहूंगा और भक्तों की हर पुकार का जवाब दूंगा।' श्री शिरडी साई बाबा ने भी महासमाधि के समय ऐसी ही बात कही कि 'अब मेरी समाधि ही भक्तों से बात करेगी।'

उनके शरीर छोड़ने के ठीक पहले, केशव नामक उनके एक भक्त ने अत्यंत भावुक होकर स्वामी जी से पूछा-'महाराज चूंकि आप जा रहे हैं, अब हमारी रक्षा कौन करेगा?' स्वामी समर्थ ने उसे अपनी पादुकाएं पूजा करने के लिए दीं और कहा-'भविष्य में मैं अहमदनगर ज़िले के शिरडी नामक स्थान पर निवास करूंगा।' कुछ समय बाद एक अन्य भक्त कृष्ण अली बागकर ने अक्कलकोट जाकर स्वामी समर्थ की पादुकाओं की पूजा करने का निर्णय किया। स्वामी समर्थ ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर कहा-'अब मैं शिरडी में निवास कर रहा हूं, वहां जाकर मेरी पूजा किया करो।' तदनुसार बागकर शिरडी गये तथा वहां पर महाराज की चरण पादुकाएं स्थापित की और वहां छः महीने तक रहे। बाद में जब वह श्री साई से अनुमति लेकर पुनः अक्कलकोट जाना चाहते थे, तो श्री साई ने कहा-'अब अक्कलकोट में क्या है। अक्कलकोट महाराज तो आजकल यहीं पर निवास कर रहे हैं।' बागकर को जब उसका स्वप्न याद आया तो उसने महसूस किया कि स्वामी समर्थ एवं शिरडी साई बाबा में कोई अन्तर नहीं है।

स्वामी समर्थ की दिव्यलीला उनकी महासमाधि के साथ ही समाप्त नहीं हो गई। उनके भक्त आज भी उनकी कृपा और दृश्य या अदृश्य रूप से की गई चमत्कारिक सहायता का अनुभव करते रहते हैं। यह ठीक उसी तरह है, जैसा कि श्री शिरडी साई की सन् 1918 में महासमाधि के उपरान्त आज तक उनके असंख्य भक्त उनकी कृपा का अनुभव करते हैं। कई लोगों ने उनके सशरीर दर्शन को भी प्रमाणित किया है। इस प्रकार के लोग सिर्फ ग्रामीण अशिक्षित व्यक्ति ही नहीं, अपितु इनमें समाज के अनेक बुद्धिजीवी भी शामिल हैं।

उदाहरण के तौर पर पुणे के एक चिकित्सक डॉ. एस.वी. मराठे एक बार सन् 1964 में सीने के इलाज के लिए औंध नाम की एक जगह के अस्पताल में भरती हुए। उनके कई मित्र उनसे मिलने के लिए आने के इच्छुक थे। पर स्वामी समर्थ ने उनके कई मित्रों के स्वप्न में एक साथ प्रकट होकर सबको एक सा संदेश दिया और औंध न आने के लिए कहा। उन्होंने सभी को डॉ. मराठे के बारे में चिन्ता न करने के लिए कहा और बताया कि उस समय वह उनके (स्वामी समर्थ के) संरक्षण में है। एक बार डॉक्टर की आर्थिक समस्या को भी स्वामी समर्थ ने उनकी प्रार्थना सुनकर बड़े ही चमत्कारिक ढंग से सुलझा दिया था। समस्याओं का निदान करने के पश्चात् स्वामी समर्थ उनके स्वप्न में प्रकट हुए और उनसे दक्षिणा में पेड़े मांगे। श्री शिरडी साई बाबा भी इसी प्रकार दक्षिणा मांगने के लिए मशहूर थे और अनेक भक्तों को एक साथ एक सा स्वप्न दिया करते थे।

सैकड़ों भक्तों को सद्गुरूओं के साथ इस प्रकार के चमत्कारी अनुभव आज भी महसूस हो रहे हैं। स्वामी समर्थ एवं शिरडी साई के चमत्कारों में इतनी समानता है कि उन्हें देखकर यह निष्कर्ष निकलता है कि ये दो अलग-अलग सद्गुरू नहीं, बल्कि दोनों एक ही तरह के हैं, या शायद केवल एक ही हैं। **-चन्द्रभानु सतपथी**

आभार: श्री शिरडी साई बाबा एवं अन्य सद्गुरू

प्रतियोगिता नम्बर 236

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर अवश्य लिखें।

1. प्रतिदिन शयन के पूर्व श्री साई बाबा और चावड़ी के समारोह का ध्यान अवश्य कर लिया करें।
2. मेरे सरकार का खज़ाना (आध्यात्मिक भंडार) भरपूर है और वह बह रहा है। मैं तो कहता हूं कि खोदकर गाड़ी में भरकर ले जाओ।

पहला ईनाम- कंचन मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। (शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है)

दूसरा इनाम- साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा का वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय- 30, अध्याय- 41

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का पहला इनाम जीता है गुरूग्राम से विजय मल्होत्रा ने और दूसरा ईनाम जीता है रायबरेली से शान्ति देवी ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी
सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, मोती लाल गुप्ता, सुमित पोंदा, पवार काका

मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, मुकुल नाग, मंजु बवेजा

सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा

विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा

सम्पादक -अंजु टंडन

सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा

उप सम्पादक -पूनम धवन,

डिज़ाइनर -गायत्री सिंह

कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा

सहयोगी -ज्योति राजन, कृष्णा पुरी, मीरा साव, अंजली, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश माथुर, सुनीता सग्गी, ओंकार नाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, शैली सिंह, किरण, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, गुरबचन सिंग, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, नीलम खेमका, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलू जग्गी, गीतांजलि छाबड़ा।

-प्रशासनिक कार्यालय-

F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

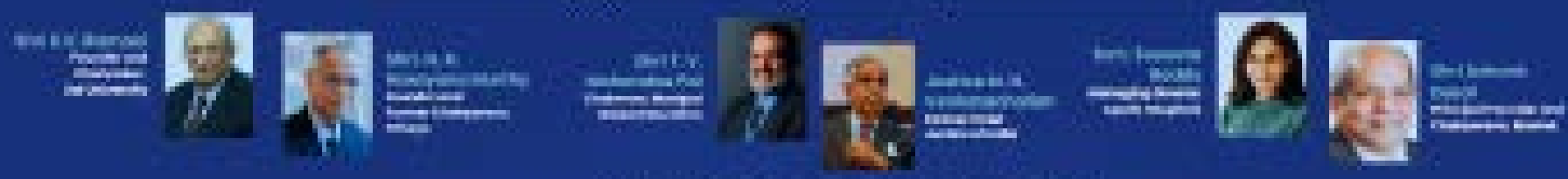

Publication date- 5th July 2025, Posting date- 9th/10th July 2025, Place of posting- Naraina